Pākapradīpa-Puṣṭiprakāśa : (vaidyakīyauṣadhīpākavidhiguṇavarṇana); (aura vājīkaraṇopayojakauṣadhīvarṇana) / VerīnivāsipaṇḍitaRavidattavaidyajīviracita-bhāṣāṭīkāsameta.

Contributors

Ravidatta.

Publication/Creation

Muṃbaī : KhemarājaŚrīkr̥ṣṇadāsa, 1895.

Persistent URL

https://wellcomecollection.org/works/fmjjhsce

License and attribution

This work has been identified as being free of known restrictions under copyright law, including all related and neighbouring rights and is being made available under the Creative Commons, Public Domain Mark.

You can copy, modify, distribute and perform the work, even for commercial purposes, without asking permission.

Wellcome Collection
183 Euston Road
London NW1 2BE UK
T +44 (0)20 7611 8722
E library@wellcomecollection.org
https://wellcomecollection.org

P.B.
SANSKRIT
197

P. B. SANSKRIT 197

P.B. Sansk. 197

22500847242

Digitized by the Internet Archive
in 2018 with funding from
Wellcome Library

https://archive.org/details/b30095001

श्रीः।

पाकप्रदीप-पुष्टिप्रकाश।

(वैद्यकीयौषधीपाकविधिगुणवर्णन)

(और वाजीकरणोपयोजकौषधीवर्णन)

वेरीनिवासिपण्डितरविदत्त-
वैद्यजीविरचित-

भाषाटीकासमेत।

ये ग्रंथ
खेमराज श्रीकृष्णदासनें
स्वकीय "श्रीवेङ्कटेश्वर" मुद्रणालयमें
छापकै प्रसिद्ध किये।
मुंबई.

शके १८१७ सं० १९५२ वि०

इस पुस्तकका रजिस्टरी हक यन्त्राधिकारीनें स्वाधीन रक्खा है.

RAVIDATTA

P.B. Sansk. 197.

WELLCOME LIBRARY INSTITUTE

335254

भूमिका

यह एक लघुमात्र वैद्यकका ग्रंथ अपनी असा धारण शक्तिउत्तेजक अनुभाविक ओषधियोंके परिपूर्ण गुणसे बड़े बड़े आयुर्वेदादि चरक–सुश्रुत ग्रंथोंको केही आशयसे रचना हुवा है-देश,काल,प्रकृति,युगानुसार इसमें ऐसी ऐसी उत्तमोत्तम रोगनाशक औषधी हैं कि जिनका गुण अकथनीय है पौष्टिक विधान तो बहुतही सराहनीय है मनुष्यके बलवान् होनेका एक मात्र अवलंब है, बूढ़ाके जवान करनेको प्रत्यक्ष रसायन है, रतिवल्लभा प्रियाके मनमोहनेको मोहनमंत्रसे बढ़कर है, पुरुषके कामोद्दीपन और धारणाशक्ति बढ़ानेकी पूरी परिक्रिया है, दुर्बल मनुष्यके हृष्ट पुष्ट होनेकी अनोखी चोखी विधि है, उपदंश, घाव, कुष्ठ वात रोग, भगंदर, धातुक्षय, खांसी, प्रतिश्याय, राजयक्ष्मा अतीसारादि अनेकानेक रोगोंको जड़ मूड़से उखाड़नेकी पूरी परिपाटी है पाठक गण ! कहांतक कहैं इसके बलसे अपूताको पूत, अनप्रसूताको फूल, कांतिहीनको कांति, विद्याहीनको विद्या, दृष्टिहीनको दृष्टि तत्कालही मिलती है विशेष वर्णन श्लाघामात्र है पुस्तक आपके हाथ है शीघ्रही मनोरथ सफल करिये.

आपका–

खेमराज श्रीकृष्णदास,

"श्रीवेंकटेश्वर" छापाखाना–मुंबई.

श्रीगणेशाय नमः ।

पाकप्रदीपः ।

श्रीमद्गुरून्नमस्कृत्य रविदत्तेन धीमता ॥ पाकप्रदीपको नाम मया ग्रंथः प्रकाश्यते ॥१॥ चोपचीन्याभवं चूर्णं पलं द्वादशमेवच ॥ पिप्पली पिप्पलीमूलं मरीचंनागरंत्वचम् ॥ २ ॥ आकल्लकं लवङ्गंच प्रत्येकं कर्षसंमितम् ॥ शर्करासमचूर्णंच पाचयेत्सर्वमेकतः ॥३ ॥ मोदकं कारयेत्तन्तु ह्येककर्षप्रमाणतः ॥ सायंप्रातर्निषेव्यस्तु पथ्यं योग्यं समाचरेत् ॥ ४ ॥ उपदंशे व्रणे कुष्ठे वातरोगे भगंदरे॥धातुक्षयकृते कासे प्रतिश्याये च यक्ष्माणि ॥ सर्वान्रोगान्निहंत्याशु ततः पुष्टिकरो भवेत् ॥ ५ ॥

अर्थ–श्रीयुत गुरुजीके प्रणाम कर मैं पंडित रविदत्त पाकप्रदीपक ग्रंथको प्रकाशित करता हूं॥ १॥चोपचीनीका चूर्ण ४८तोले, पीपल पीपलामूल मिरच सूंठ दालचीनी॥ २॥अकरकरा लौंग ये सब एकएक तोला, खांड४८ तो०सबोंको मिला पकावै॥ ३॥एक एक तोलाके मोदक बना सायंकालमें और प्रभातमें खावै योग्य पथ्यकरै॥ ४॥यह चोपचीनीपाक उपदंश रोग घाव कुष्ठ वातरोग भगंदर धातुक्षयकी खांसी प्रतिश्याय राजयक्ष्मा इनसब रोगोंको शीघ्र नाशता है पीछे पुष्टि करता है ॥ ५ ॥

शतावरीश्वदंष्ट्राच बलाचातिबलातथा ॥ मर्कटी क्षुरबीजश्च विदारीकंदजं रजः ॥ ६ ॥ एतानिसम-

भागानि पलिकानिविचूर्णयेत् ॥ तस्माच्चतुर्गुणं देयं त्रैलोक्यविजयारजः ॥ ७ ॥ एतदेकीकृतंयावत्तदर्द्धमाहिषंपयः ॥ तावन्मात्रेणदातव्यः शतावर्या रसस्तथा ॥ ८॥ विदार्य्याःस्वरसःप्रस्थं सितापलशतद्वयम् ॥ मेलयित्वासिताञ्चैव पात्रेताम्रमयेदृढे ॥ ९ ॥ पाचयेत्पाकविद्वैद्यो मोदकंपरमंहितम् ॥ त्र्यूषणंत्रिफलादंती त्रिजातंसैंधवंशठी ॥ १० ॥ धान्याकंवालकंमुस्तं कस्तूरीगोस्तनी तुगा ॥ जातीकोषफलंमांसी पत्रंनागेंद्रग्रंथिकम् ॥ ११ ॥ शतपुष्पा विदारीच प्रियङ्गुश्चलवङ्गकम् ॥ सरलंशैलजंकुम्भं जातीपुष्पंयवानिका ॥ १२ ॥ कट्फलंकेशरंमेथी मधुकं सुरदारु च ॥ मिषितालीशपत्रंच खर्जूरंरसगंधकौ ॥ १३ ॥

भा०—शतावरी गोखरू खरैंहटी गंगेरन कौंचके बीज तालमखाना विदारीकंदका चूर्ण ॥ ६ ॥ ये सब चार चार तोले ले चूर्ण करै, इस चूर्णसे चौगुना भांगका चूर्ण ले ॥ ७ ॥ सबोंको मिलावै सब चूर्णसे आधा भैंसका दूध और दूधके समान शतावरीका रस ॥८॥ भूमिआंवलाका स्वरस ६४ तोले, मिश्री ८०० तो० तांबाके दृढपात्रमें मिश्रीकी चाशनी बना॥९॥पाकके जाननें वाला वैद्य पकाकै मोदक बनावै बहुत हितहै. सूंठ मिरच पीपल हरडै बहेडा आंवला जमालगोटाकी जड दालचीनी इलायची तेजपात सेंधानमक कचूर ॥१०॥ धनियां नेत्रवाला नागरमोथा कस्तूरी मुनक्का वंशलोचन जायफल कोषफल बालछड़ नागकेशर इन्द्रजव पीपलामूल ॥ ११ ॥ शतावरी चव्य दारुहलदी मालकांगनी लौंग सरल शिलाजीत गूगल जावित्री अजवान ॥ १२ ॥ कायफल

केशर मेथी मुलहटी देवदार सोंप तालीशपत्ता खजूरका फल पारा गंधक ॥ १३ ॥

चंदनं तगरं क्षारं प्रत्येकं कर्षसंमितम्॥आलोड्यत्रि सुगंधेन कर्पूरेणाधिवासयेत् ॥ १४ ॥ काञ्चने राजते पात्रे स्थाप्यमेतद्भिषग्वरैः॥ कर्षप्रमाणं कर्त्तव्यं क्षीरंचानुपिबेत्पलम् ॥ १५॥ प्रातर्भोजनकाले वा भक्षयेत्तु विचक्षणः । प्रमदाशतञ्चभजते नचशुक्रक्षयो भवेत्॥१६॥ न तस्य लिंगशैथिल्यं वृद्धानांच प्रशस्यते। मासैकमुपयोगेन जरां हंति न संशयः॥१७॥ बल्यं परं वातहरं शुक्रसंजननं परम् । क्षयं चैवमहाव्याधिं पंचकासान् सुदुस्तरान् ॥ १८ ॥ वातजान् पैत्तिकांश्चैव कफजान्सान्निपातिकान् ॥ हन्त्यष्टादशकुष्ठानि वातरक्तादिकानिच ॥ १९ ॥ प्रमेहं श्लीपदं शोथं लक्ष्मीकांतिविवर्द्धनम् ॥ सर्वानर्शोंगदान्हंति वृक्षमिंद्राशनिर्यथा ॥ २० ॥

भा०—चंदन तगर जवाखार ये सब एक एक तोला ले दालचीनी इलायची तेजपात इन्होंसे आलोडितकर कपूरसे अधिवासित करै ॥१४॥ सोनाका तथा चांदीके पात्रमें यह उत्तम वैद्योंनें स्थापित करना. १ तोलाभरको खाके ऊपर ४ तोलाभर दूध पीना ॥ १५ ॥ अथवा बुद्धिमान् प्रभात अथवा भोजनके समयमें खावै १०० स्त्रियोंका पतिहो सक्ता है वीर्यका क्षय नहीं होता ॥ १६ ॥ उसकी इंद्रिय शिथिल नहीं होती बूढोंको श्रेष्ठ है. यह १ महीना सेवनेंसे बुढापाको नाशता है संशय नहीं॥१७॥ बलमें बहुत हित है वातको हरता है वीर्यको बहुत उपजाता है क्षय महारोग भयंकर पांचों खांसी ॥ १८ ॥ वातज रोग पित्तज रोग कफज

रोग सन्निपातज रोग अठारह प्रकारके कुष्ठ वातरक्त आदि ॥ १९ ॥ प्रमेह श्लीपद शोजा इन्होंको यह बृहच्छतावरीमोदक नाशता है. लक्ष्मी और कांतिको बढाता है सब अर्शरोगोंको नाशता है जैसे वृक्षको इंद्रका वज्र ॥ २० ॥

व्याधीन्कोष्ठगतान्हन्याज्जनार्दनइवासुरान् ॥ नातःपरतरंश्रेष्ठं विद्यते वाजिकर्मसु ॥ २१॥ स्त्रीणांचैवानपत्यानां दुर्बलानांचदेहिनाम् ॥ क्लीबानामल्पशुक्राणां जीर्णानामल्परेतसाम् ॥ २२ ॥ ओजस्तेजः स्वरंबुद्धिमायुःप्राणं विवर्द्धयेत् ॥ २३ ॥ शक्राशनस्यबीजानां चूर्णान्यष्टपलानि च ॥ हविषःकुडवं चैकं सिताप्रस्थंप्रगृह्यच।२४।शतावरीरसःप्रस्थं तथा शक्राशनस्यच ॥ गवामजापयः प्रस्थं ततःप्रस्थद्वयं पचेत् ॥ २५ ॥ धात्रीद्विजीरकंमुस्तं त्वगेलापत्रकेशरम् ॥ आत्मगुप्ताचातिबला तालांकुरकसेरुकम्॥२६॥ शृङ्गाटकं त्रिकटुकं धान्यमभ्रञ्च वङ्गकम् ।।पथ्याद्राक्षाचकाकोल्यौ खर्जूरं क्षुरकंतथा॥२७॥ कटुका मधुकं कुष्ठं लवङ्गं सारसैंधवम् । यवानी चाजमोदाच जीवंतीगजपीप्पली ॥ २८ ॥

भा०–कोष्ठगत रोगोंको नाशता है जैसे दैत्योंको विष्णु इस्से परे वाजिकर्ममें श्रेष्ठ नहीं है॥२१॥ नहीं संतानवालीस्त्री दुर्बल अल्पवीर्यवाले नपुंसक अल्पवीर्यवाले बूढे ऐसे पुरुषोंके ॥२२॥ पराक्रम तेज स्वर बुद्धि आयु प्राण इन्होंको बढाता है।।२३॥ इंद्रजवोंका चूर्ण३२तोले घी१६तो० मिश्री ६४ तो०॥२४॥शतावरीका रस ६४तो० इंद्रजवोंका रस ६४ तो०

गौकादूध ६४ तो० बकरीकादूध ६४ तो० इन्होंको पकावै॥२५॥ आंवला दोनों जीरे नागरमोथा दालचीनी इलायची तेजपात केशर कौंचके बीज गंगेरन ताडके कोंपल कसेरू॥२६॥ सिंघाडा सूंठ मिरच पीपल धनियां अभ्रक बंग हरडै दाख काकोली क्षीरकाकोली खजूरका फल तालमखाना॥२७॥ कुटकी मुलहटी कूठ लौंग सार सेंधानमक अजमान अजमोद जीवंती गजपीपल ॥ २८ ॥

प्रत्येकं कर्षमेकंतु चूर्णितानि शुभानिच ।। कुडवार्द्धं पाकशेषे मधुनः प्रक्षिपेत्ततः ॥ २९ ॥ मृगाण्डजं सकर्पूरं यथालाभं विनिक्षिपेत् । रतिवल्लभनामायं सेव्यमानो महारसः ॥ ३० ॥ परमौजस्करो बल्यो वातव्याधिविनाशनः ॥ रक्तपित्तहरो वृष्यो दृष्टिसंदीपनः परः ॥ ३१ ॥ पित्तश्लेष्मामपित्तघ्नो विषगुल्मज्वरापहः ।। यापयत्येष मंदाग्निं रोगाणां क्षयहेतुकः ॥ ३२ ॥ नभवेल्लिङ्गशैथिल्यं वृद्धानां पुष्टिवर्द्धनः। यस्यगेहे सदावह्व्यः पत्न्यः स्युः सुमनोहराः ॥३३ ॥ रसः सेव्यः सदैवायं मोदको रतिवल्लभः ॥ ३४ ॥ येकेचिद्विजयायोगाल्लौहवङ्गाभ्रसंयुताः । युक्ताश्च रसगंधाभ्यां रसायनपरा मताः३५ चूर्णांशं गगनं घनार्द्धविमलं गन्धंच कुष्ठामृता । मेथीमोचरसो विदारिमूसलीगोक्षूरकश्चेक्षुरः । भीरुश्चैवकसेरुकं यवनिकातालाङ्कुरं धान्यकम् । यष्टी नागवला तिला मधुरिका जातीफलं सैंधवम् ॥ ३६ ॥

भा०-ये सब एक एक तोला भरले सुंदर चूर्णकर पाक बनानेमें १६ तो० शहद मिलावै ॥ २९ ॥ कस्तूरी कपूर यथालाभ गेर-यह रतिवल्लभ मोदक महारस सेवित करना ॥ ३० ॥ बहुत पराक्रम-को करता है बलमें हित है वातव्याधिको नाशता है रक्तपित्तको हरता है वीर्यमें हित है दृष्टिको बहुत प्रकाशित करता है ॥ ३१ ॥ पित्त कफ आमपित्त विष गुल्म ज्वर इन्होंको नाशता है मंदाग्निको दूर करता है रोगोंके क्षयका कारण है ॥ ३२ ॥ इंद्रियका शिथिलपना नहीं होता बूढोंके पुष्टिको बढाता है जिसके घर सदा सुंदर बहुत स्त्रियांहों ॥ ३३ ॥ उसके यह रतिवल्लभ मोदक सेवना उचित है ॥ ३४ ॥ जितनें भांग लोहवंग अभ्रक पारा गंधक इन्होंसे युत हुये योग हैं वे उत्तम रसायन माने हैं ॥ ३५ ॥ सुंदर शुद्ध किया अभ्रक गंधक कूठ गिलोय मेथी मोचरस भूमिआंवला मुसली गोखरू तालमखाना शतावरी कशेरू अजमान ताड़के कोंपल धनियां मुलहटी बडी खैरेंहटी तिल सोंफ जाय-फल सेंधानमक ॥ ३६ ॥

भार्गीकर्कटशृङ्गकंत्रिकटुकं जीरद्वयंचित्रकम्।।चातु-
र्जातपुनर्नवाकरिकणा द्राक्षाशठीकट्फलम् ॥ शा-
ल्मल्यंघ्रिफलत्रिकं कपिभवं बीजंसमंचूर्णयेच्चूर्णा-
र्द्धाविजयासिताद्विगुणिता मध्वाज्यमिश्रंतुतत्३७॥
कर्षार्द्धागुटिकाथकर्षमथवा सेव्यासतासर्वदा ॥ पे-
यंक्षीरमनुस्ववीर्यकरणे स्तम्भेप्ययंकामिनाम् ३८॥
धात्रीसैन्धवकुष्ठकट्फलकणा शुण्ठीयवानीद्वयम् ॥
यष्टीजीरकयुग्मधान्यकशठी शृङ्गीवचाकेशरम् ॥

भा०-भारंगी काकड़ाशींगी सूंठ मिरच पीपल दोनों जीरे चीता दालचीनी इलायची नागकेशर तेजपात सांठी गजपीपल दाख कचूर कायफल शंभलकी जड़ त्रिफला कौंचके बीज इन्होंका चूर्ण करै चूर्णसे

आधी भांग और चूर्णसे दूनी मिश्री शहद घी मिलावै ॥ ३७ ॥ आधा तोलाकी अथवा एक तोलाकी गोली बना सब कालमें सत् पुरुषनें सेवनी इसपै दूधका अनुपान है यह कामिपुरुषोंके वीर्यको स्तंभित करता है ॥ ३८ ॥ आंवला सेंधानमक कूठ कायफल पीपल सूंठ दोनों अजमान मुलहटी दोनों जीरे धनियां कचूर काकड़ाशींगी वच केशरा-

तालीशंत्रिसुगंधिकं समरिचं पथ्याक्षमेभिः समंचूर्णीकृत्यमनाक्स्वबीजसहितं भृष्ट्वातुशक्राशनम् ३९ सर्वेषां द्विगुणांसितां सुविमलां वंगद्वयंनिःक्षिपेत् क्षौद्रंचापि घृतं प्रशस्तदिवसे कुर्याच्छुभान्मोदकान्॥ कर्पूरैरवचूर्णितान्सुपिहितान्दत्त्वातिलान्भर्जितान्गोप्योयं क्षितिमण्डले मितधियां पाखण्डिनामग्रतः ॥ ४० ॥ आधिव्याधिहरः क्षतक्षयहरः कुष्ठापहो बृंहणं स्त्रीणांतोषकरो मुखद्युतिकरः शुक्राग्निवृद्धिप्रदः ॥ कासश्वासबलासरोगनिचयप्रध्वंसनः प्राणिनां प्रोक्तो ब्रह्मसुतेन सर्वसुखदः कामेश्वरोमोदकः ॥ ४१ ॥ ग्रहगणपरिहीनः सर्वशास्त्रप्रवीणः ललितविमलकीर्तिः प्राप्तकंदर्पमूर्तिः ॥ विगतसकलभीतिर्गीतवाद्याङ्गनीतिर्भवति भुवि सदेवोयेनभुक्तः प्रयत्नात् ॥ ४२ ॥

भा०–तालीशपत्ता दालचीनी इलायची तेजपात मिरच हरड़ै बहेड़ा इंद्रजव ये सब समान भागले चूर्णकर घीमें भून ॥ ३९ ॥ सबोंसे दूनी सुंदर मिश्री मिला दोनों प्रकारके वंग शहद घी मिला शुभ दिनमें मोदक बनावै कपूर मिलावै और तिलोंको भूनकर मिलावै बुद्धिमानोंनें पृथिवीमंडलमें पाखंडियोंके आगे गोप्य रखना॥४०॥आधि व्याधि क्षतक्षय कुष्ठ

इन्होंको हरता है पुष्टि करता है स्त्रियोंको प्रसन्न करता है मुखपै कांति करता है वीर्य और वृद्धिको देता है खांसी श्वास कफ रोग इन्होंके समूहको नाशता है ब्रह्माजीके पुत्रनें सबोंको सुख देनेंवाला यह कामेश्वर मोदक कहा है ॥ ४१ ॥ जिसनें प्रयत्नसे यह मोदक खाया है वह ग्रहोंके समूहसे हीन सब शास्त्रोंमें प्रवीण ललित और विमल कीर्तिवाला कामदेवकी मूर्त्तिको धारण किये हुआ सब भयोंसे रहित हुआ गाना और बजानाभें बहुत नीतिवाला ऐसा देवसमान होके वह मनुष्य पृथिवीमें रहता है ॥ ४२ ॥

सम्यङ्मारितमभ्रकंकट्फलं कुष्ठाश्वगन्धामृता मेथी मोचरसोविदारिमुसली गोक्षूरकंचेक्षुरः ॥ रम्भाकन्दशतावरीत्वजमुदा माषालिकाधान्यकं यष्टी नागबलाकचूरमदनो जातीफलंसैन्धवम् ॥ ४३ ॥ भार्गीकर्कटशृङ्गकंत्रिकटुकं जीरद्वयंचित्रकं चातुर्जातपुनर्नवागजकणा द्राक्षाशठीबालकम् ॥ बीजं शाल्मलिकर्कटीभवमिदं चूर्णसमंकल्पयेत् चूर्णांशाविजयासिताद्विगुणिता मध्वाज्ययोःपिण्डितम् ॥ ॥४४॥ कर्षांशागुटिकार्द्धकर्षमथवा सेव्यासदाकामिभिः सेव्यंक्षीरसितंसुवीर्यकरणं स्तम्भेप्ययंकामिनाम्॥ वामावश्यकरःसुखातिसुखदो वन्ध्याङ्गनाद्रावणः क्षीणेपुष्टिकरःक्षतक्षयहरो हन्याच्चसर्वामयान् ॥ ४५ ॥ कासश्वासमदातिसारशमनः कामाग्निसंदीपनो दुर्नामग्रहणीप्रमेहनिवहश्लेष्मातिरेकप्रणुत् ॥ नित्यानंद करोविशेषकविताबाचांविला-

सोद्भवं धत्तेसर्वगुणःसदास्थिरमतिर्बालोनितान्तो-
त्सवम् ॥ ४६ ॥

भा०–अच्छी तरह मारा अभ्रक कायफल कूठ आसगंध गिलोय मिथी मोचरस विदारीकंद मूसली गोखरू तालमखाना केलाकंद शतावरी अजमोद उडद तिल धनियां मुलहटी बडी खरैंहटी कचूर मैनफल-जायफल सेंधानमक ॥ ४३ ॥ भारंगी काकडाशींगी सूंठ मिरच पीपल दोनों जीरे चीता दालचीनी इलायची तेजपात नागकेशर सांठी गजपीपल दाख कचूर नेत्रवाला शंभलके बीज काकडीके बीज ये सब समान ले चूर्ण बनावै चूर्णके बराबर भांग दूनी मिश्री शहद घी मिला गोला बनावै ॥ ४४ ॥ आध तोलाकी अथवा तोलाभरकी गोली बना कामियोंने सब कालमें सेवनी दूध मिश्रीका अनुपान करना यह सुंदर वीर्यको करता है कामियोंके स्तंभन है स्त्रियोंको वश्य करता है सुख और अत्यंत सुखको देता है वंध्या स्त्रीको द्रावण करता है क्षीणमें पुष्टि करताहै क्षतक्षय सब रोग इन्होंको नाशता है॥४५॥ खांसी श्वास महातिसार इन्होंको शांत करता है कामाग्निको जगाता है ववाशीर संग्रहणी प्रमेह कफबहुतपडना इन्होंको दूर करता है नित्य आनंद करता है विशेष कविता और वाणीके सुखको देता है सब गुणोंवाला स्थिर बुद्धिवाला ऐसा बालक निरंतर उत्सवको धारण करता है ॥ ४६ ॥

अभ्यासेन निहन्तिमृत्युपलितं कामेश्वरो वत्सरात्स-
र्वेषांहितकारिणा निगदितः श्रीनित्यनाथेनसः ॥
वृद्धानां मदनोदयोदयकरःप्रौढाङ्गनासङ्गमे सिंहोयं
समदृष्टिप्रत्ययकरो भूपैः सदासेव्यताम् ॥ ४६ ॥
कर्षौ रसोगन्धकमभ्रकञ्च द्विक्षारचित्रे लवणानि प-
ञ्च ॥ शठीयवानीद्वयकीटहारीतालीसपत्राटरूषं
द्विकर्षम् ॥ ४७ ॥ जीरंचतुर्जातलवङ्गजाती

फलञ्चकर्षत्रयमेवमन्यत्॥ सवृद्धदारं सकटुत्रयञ्चत-
थाचतुःकर्षमितं निबोध ॥ ४८ ॥ धान्याकयष्टी-
मधुरीकशेरूकर्षाः पृथक् पञ्चवरी विदारी ॥ वरेभ-
कर्णं भवनात्मगुप्ताबीजंतथा गोक्षुरबीजयुक्तम् ॥४९
सबीजपत्रेन्द्ररजः समानं समासिता क्षौद्रघृतञ्च तुल्य-
म् ॥ कर्षैकमिन्दोरथमोदकं तत् कामाग्निसंदीप-
नमेतदुक्तम् ॥ ५० ॥ वृष्यं त्वतः परतरं सततं
न दृष्टमेतन्निषेव्य मनुजः प्रमदासहस्रम् ॥ शश्वन्न
लिङ्गशिथिलत्वमवाप्नुयाच्च नागाधिपंविजयते बल-
तः प्रमत्तः ॥५१ ॥ कान्त्याहुताशनमपि स्वरतोम-
यूरान् वाहं जवेन नयनेन महाविहङ्गम्॥वातानशी-
तिमथपित्तगदं समग्रं श्लेष्मोत्थविंशतिरुजः परमा-
ग्निमान्द्यम् ॥ ५२ ॥

भा०-यह कामेश्वर रस वर्षभर सेवनेंसे मृत्यु और बालोंके सुपेद-
पनेंको नाशता है. सबोंका हितकारी श्रीनित्यनाथनें यह कहाहै. सुंदर
स्त्रियोंके संगममें बूढोंके कामदेवको उदय करता है यह सिंहरूप है
समान दृष्टिको करता है राजाओंने सब कालसेवना ॥ ४६ ॥ पारा
गंधक अभ्रक ये एक एक तोला जवाखार साजीखार मंजीठ पांचोनमक
कचूर दोनों अजमान वायविडंग तालीशपत्ता वांसा ये दो दो तोले ॥४७॥
जीरा दालचीनी इलायची तेजपात नागकेशर लौंग जायफल ये सब
तीन तीन तोले भिदारा सूंठ मिरच पीपल ये चार चार तोले जान॥४८॥
धानियां मुलहटी मूर्वा कशेरू शतावरी भूमिआंवला त्रिफला गजपीपल
निंबोली कौंचके बीज गोखरूके बीज ॥४९॥ विजौरा तेजपात तालीशप-
त्ता इंद्रजव ये पांच पांच तोले मिश्री शहद घी सब समान कपूर १

तोला इन्होंको मिला मोदक बनावै यह कामाग्निको दीपन करनेंवाला कहा है ॥ ५० ॥ इस्से परे वृष्य नहीं देखा है इसको सेवनेंवाला मनुष्य हजार स्त्रियोंका पति हो सक्ता है और इंद्रिय निरंतर शिथिल नहीं होती बलसे प्रमत्त हुवा मदवाला हस्तीको जीतता है ॥ ५१ ॥ कांतिसे अग्निको स्वरसे मोरोंको वेगसे घोडाको नेत्रसे गरुड अथवा गीधको जीतता है. अश्शी वात रोग सब पित्तरोग वीश कफके रोग बहुत मंदाग्नि इन्होंको नाशता है ॥ ५२ ॥

दुर्नामकामलभगन्दरपाण्डुरोगमेहातिसारकृमिहृद्ग्रहणीप्रदोषान् ॥ कासज्वरश्वसनपीनसपार्श्वशूलशूलाम्लपित्तसहितांश्चिरजान्समस्तान् ॥ ५३ ॥ हत्वा गदानपिचतत्पुत्रमपत्यकारि सर्वर्तुपथ्यमथसर्वसुखप्रदायि ॥ वृष्यंवलीपलितहारिरसायनंस्याच्छ्रीमूलदेवकथितंपरमंप्रशस्तम् ॥५४॥ पक्वचूतरसद्रोणः पात्रंस्याच्छुद्धखण्डतः ॥ घृतमर्द्धंततोग्राह्यंचतुर्थांशं च नागरम् ॥५५॥ तदर्द्धंमरिचंप्रोक्तंतदर्द्धा पिप्पली मता॥तोयंखण्डसमंदद्यात् सर्वमेकत्रसंस्थितम्५६॥ विपचेन्मृन्मयेपात्रेयदादर्वीप्रलेपनम् ॥ चूर्णंचैषांततो दद्यात्पत्रंपलचतुष्टयम् ॥ ५७ ॥ ग्राविकंचित्रकंमुस्तंधान्याकंजीरकद्वयम् ॥ त्र्यूषणंजातितालीशंचूर्णमेषांपलंपलम् ॥५८॥ त्वगेलाकेशराणांच प्रत्येकंच पलंतथा ॥ सिद्धंशीतंचमधुनःप्रस्थंदत्त्वाविघट्टयेत् ॥ ५९ ॥ तत्सर्वमेकतःकृत्वाशुभेभाण्डेनिधापयेत्॥ भोजनादावतः खादेत्पलमानंप्रमाणतः ॥ ६० ॥ ग-

च्छेत्कंदर्पदर्पांधोरागवेगाकुलंस्त्रियः ॥ शतंवापितद-र्द्धंवारमेतस्त्रीणांपुमानयम् ॥ ६१ ॥ संसेव्यंभेषजं-ह्येतदवन्ध्याजनयेत्सुतम् ॥ वीरंसर्वगुणोपेतंश-तायुश्चभवेदयम् ॥ ६२ ॥

भा०–बवाशीर कामला भगंदर पांडुरोग प्रमेह अतीसार कृमिरोग हृद्रोग ग्रहणीदोष खांसी ज्वर श्वास पीनस पशलीशूल अम्लपित्त इन सब पुरानें रोगोंको ॥५३॥ नष्टकर पुत्र संतानको करता है सब प्रकारसे पथ्य है सब सुखोंको देता है वृष्य है बलियां और सुपेदबालोंको हरता है रसायन अर्थात् बुढापा और रोगको नाशता है. श्रीमूलदेवनें कहा है बहुत श्रेष्ठहै यह कामाग्निसंदीपन मोदकहै ॥५४॥ पकाहुआ आंबका रस १०२४ तोले शुद्धखांड २५६ तो० घी १२८ तो० सूंठ ६४ तो० ॥५५॥ मिरच ३२ तो० पीपल १६ तो० पानी २५६ तो० सबोंको मिलावै ॥५६॥ माटीके पात्रमें पकावै जब करछीके लेप लगै तब इन औष-धोंका चूर्ण चार चार तोले तेजपात १६ तो० ॥५७॥पीपलामूल चीता नागर-मोथा धनियां दोनों जीरे सूंठ मिरच पीपल जावित्री तालीशपत्ता ये सब चार चार तो०॥५८॥ दालचीनी इलायची केशर ये सब चार चार तो० सिद्ध होके शीतल हुआमें ६४ तो० शहद मिला चलावै ॥५९॥ सबोंको मिला सुंदर पात्रमें घाल धरे भोजनकी आदिमें ४ तोलेभर खावै ॥६०॥ कामदेवके गर्वसे अंधाहुआ रागके वेगसे आकुल हुआ १०० अथवा ५० स्त्रियोंका पति होसक्ता है ॥६१॥ इस औषधको सेवता हुआ बंध्याके वीर सब गुणोंसे युत ऐसा पुत्र उपजाता है और वहभी १०० वर्षोंकी आयु-वाला होताजाहै ॥ ६२ ॥

मृतवत्साचयानारी याचगर्भोपघातिनी ॥ सापिसू-तेसुतंसभ्यं नारायणपरायणम् ॥ ६३ ॥ वंध्यापि लभतेपुत्रं वृद्धोपितरुणायते ॥ तुरङ्गइवसंहृष्टो

मातंगइवविक्रमी ॥ ६४ ॥ सदाभेषजसंसेवी भवे-
न्मारुतवेगवान् ॥ हंतिसर्वामयंघोरं कासंश्वासंक्षयं
तथा ॥ ६५॥ दुर्नामाजीर्णकंचैव ह्याम्लपित्तंसुदारु-
णम् ॥ तृष्णांछर्दिश्चमूर्च्छांच शूलमष्टविधंजयेत् ॥
॥६६॥ खण्डाभ्रकमिदंप्रोक्तं भार्गवेणस्वयंभुवा ॥
वयस्यंमेध्यमायुष्यं सर्वपापविनाशनम् ॥६७॥ पा-
ण्डुरोगंप्रमेहञ्च मूत्रकृच्छ्रंचनाशयेत् ॥ वश्यायोषि-
द्भवेत्पुंसां पुमान्वश्यश्चयोषिताम् ॥ दृष्टोवारसह-
स्रञ्च कथमत्रविचारणा ॥ ६८ ॥ सूतोगंधस्तथा
लौहं त्रिसमंशुद्धमभ्रकम् ॥ कर्पूरंसैंधवंमांसी धात्र्ये-
लाचकटुत्रयम् ॥ ६९ ॥ जातीकोशफलंतत्र लव-
ङ्गंजीरकद्वयम् ॥ यष्टीमधुवचाकुष्ठं हरिद्रादेवदारु-
कम् ॥ ७० ॥ हिज्जिलंटंकणंभार्गी नागरंपुष्पकेश-
रम् ॥ शृङ्गीतालीशपत्रञ्च द्राक्षाग्निदन्तिबीजकम् ॥
॥ ७१ ॥ बलाचातिबलाचोचं धनिकेभकणाशठी ॥
सजलंजलदंगन्धा विदारीचशतावरी ॥ ७२ ॥ अ-
र्कवानरिबीजञ्च गोक्षुरंवृद्धदारकम्॥त्रैलोक्यविजया-
बीजं समांशंपेषयेद्भिषक् ॥ ७३ ॥

भा०-जिसके संतान होकै मरती हो जो गर्भको गेरतीहो वहभी स्त्री
सभ्य और नारायणमें परायण ऐसा पुत्रको जनती है ॥ ६३ ॥ वं-
ध्या भी पुत्रको प्राप्त होती है बूढा भी जुवानकी तरह होता है घोड़ाकी
तरह आनंदित और हस्तीकी तरह पराक्रमवाला पुरुष हो जाता है ॥६४॥
सब काळ इस औषधको सेवनें वाला पुरुष पवनके समान वेगवाला होकै

भयंकर सब रोग खांसी श्वास क्षय ॥ ६५ ॥ बवाशीर अजीर्ण भयंकर अम्लपित्त तृषा छर्दि मूर्च्छा आठ प्रकारका शूल इन्होंको जीतता है॥ ६६॥ यह खंडाभ्रक ब्रह्माजी सरीखा भार्गवनें कहा है. अवस्थामें हित है बुद्धिमें हित है आयुमें हित है सब पापोंको नाशता है ॥ ६७ ॥ पांडुरोग प्रमेह मूत्रकृच्छ्र इन्होंको नाशता है पुरुषोंके स्त्री वशमें होती है और स्त्रियोंके वशमें पुरुष होता है हजारवार देखा है यहां विचार करना नहीं ॥ ६८ ॥ पारा गंधक लोहा ये समान भाग और सबोंके समान शुद्ध अभ्रक कपूर सेंधानमक बालछड़ आंवला इलायची सूंठ मिरच पीपल ॥ ६९ ॥ जायफल कोशफल लौंग दोनों जीरे मुलहटी वच कूठ हलदी देवदार ॥७०॥ जलवेत सुहागा भारंगी सूंठ केशर काकड़ाशींगी तालीशपत्ता दाख चीता जमालगोटा ॥७१॥ खरैंहटी गंगेरन दालचीनी धनियां गजपीपल कचूर नेत्रवाला नागरमोथा बनतुलसी भूमिआंवला शतावरी ॥ ७२ ॥ आक कौंचके बीज गोखरू भिदारा भांगके बीज ये सब बराबर ले वैद्य पीसै ॥७३॥

शतावरीरसं दत्त्वा श्लक्ष्णचूर्णंसमाचरेत् ॥ शाल्मलीमूलचूर्णंतु चूर्णांघ्रिसममाहरेत् ॥ ७४ ॥ चूर्णार्द्धं विजयाचूर्णं विशुद्धंतत्रदापयेत् ॥ सर्वमेकत्रसंयोज्य छागीदुग्धेनपेषयेत् ॥ ७५ ॥ मोदकार्थेसितादेया पाकयोग्यातथामधु ॥ नातिबाह्यश्चधूमान्ते पाचयेन्मंदवह्निना ॥ ७६ ॥ चातुर्जातंसकर्पूरं सैंधवंसकटुत्रयम् ॥ संचूर्ण्यचततोदेयंहव्यंकिंचिन्निधापयेत् ॥ ७७ ॥ पाकंज्ञात्वाकर्षमितं मोदकंपरिकल्पयेत् ॥ भूतनाथेसुरपतौ रतिनाथेतथैवच ॥ ७८ ॥ हुतभुक्तेगणनाथे मोदकाग्रंनिवेदयेत् ॥ मूलमन्त्रं समुच्चार्य्य हुताशनेसमर्पयेत् ॥ ७९ ॥ ओं ह्रीं शं

सः अमृतं कुरुकुरु अमृते अमृतोद्भवाय नमः ह्रीं अमृतं कुरुकुरु अमृतेश्वरायस्वाहा ओंस्वाहा ॥ इति मंत्रेणाभिमंत्रितंकृत्वा पात्रान्तरेस्थापयेत् ॥८०॥ कांचनेराजतेकाचे मृद्भाण्डेवानिधापयेत् ॥ प्रातः-कालेशुचिर्भूत्वा हरगौरींप्रपूजयेत् ॥ ८१ ॥

भा०—शतावरीके रसमें मिहीन चूर्ण मिलावै इस चूर्णसे चौथाई भाग शंभलकी जड़का चूर्ण ले ॥ ७४ ॥ आधा भाग भांगका चूर्ण देकै सबको मिला बकरीका दूधसे पीसै ॥ ७५ ॥ मोदकके लियें पाकके योग्य मिश्री और शहद मिला मंद अग्निसे पकावै ॥ ७६ ॥ दालचीनी इलायची तेजपात नागकेशर कपूर सेंधानमक सूंठ मिरच पीपल इन्होंका चूर्ण और कछुक घी मिलावै ॥ ७७ ॥ पाकको जान १ तोलाका मोदक बनावै महादेव इंद्र कामदेव ॥ ७८ ॥ अग्नि गणेशजी इन्होंके अर्थ मोदक निवेदन करै मूलमंत्रका उच्चारण कर अग्निमें समर्पण करै ॥ ७९ ॥ " ॐ ह्रीं शं सः अमृतं कुरु कुरु अमृते अमृतोद्भवायनमः ॐ ह्रीं अमृतं कुरुकुरु अमृतेश्वराय स्वाहा ॐ स्वाहा" इस मंत्रसे अभिमंत्रित कर अन्यपात्रमें घाल धरै ॥ ८० ॥ सोनाका चांदीका अथवा कांचका माटीका पात्रमें घाल धरै प्रभातमें पवित्र हो महादेवपार्वतीका पूजन करै ॥ ८१ ॥

कालानलभवंबीजं सतिलंघृतसंयुतम् ॥ गव्यक्षीर-सितायुक्तमनुपेयंचपायसम् ॥ ८२ ॥ विलासार्थंप्र-दोषेच मोदकंपरिसेवयेत् ॥ त्रिसप्ताहप्रयोगेण का-मान्धोजायतेनरः ॥ ८३ ॥ कामज्वरोभवेत्ताव-द्यावन्नारींनगच्छति ॥ ससहस्रवरारोहा रमयत्यपि सोद्गमः ॥ ८४ ॥ नचलिङ्गस्यशैथिल्यं वेगंवीर्यं

विवर्द्धयेत् ॥ प्रमदाप्राणबाहुल्यं मत्तवारणविक्रमः ॥ ८५ ॥ वामावश्यकरोरम्य ऊर्द्धरेताभवेन्नरः ॥ कामतुल्यंभवेद्रूपंस्वरःपरभृतोपमः ॥ ८६ ॥ खगतुल्याभवेद्दृष्टिर्वृद्धोपितरुणायते ॥ अष्टोत्तरंभजेद्य-स्तु भवेत्तस्यसुधोपमम् ॥ ८७ ॥ वीर्यवृद्धिकरंश्रेष्ठं जरामृत्युविनाशनम् ॥ अपस्मारज्वरोन्मादक्षयानिलगदापहम् ॥ ८८ ॥ कासंश्वासंसशोथंच भगंदरगुदामयम् ॥ अग्निमान्द्यमतीसारं विविधंग्रहणीगदम् ॥ ८९ ॥ बहुमूत्रंप्रमेहश्चशिरोरोगमरोचकम्॥ हंतिसर्वगदान्घोरान् वातपित्तबलासजान् ॥ ९० ॥

भा०—काला चीताके बीज तिल घी गौका दूध मिश्री इन्होंकी खीरका अनुपान करै ॥८२॥ आनंदके लियें प्रदोषमें मोदकको सेवै; २१ दिन सेवनेंसे पुरुष कामान्ध होजाता है ॥८३॥ जब तक नारीसे भोग न करै तब तक कामज्वर रहताहै यह हजार स्त्रीयोंका उत्साहपूर्वक पति होसक्ता है॥८४॥ इंद्रिय शिथिल नहीं होती वेग और वीर्यको बढाता है स्त्रियोंको सुखदेता है मदवाला हस्तीसरीखा बलवाला होजाताहै ॥ ८५ ॥ स्त्रीको वशमें करता है रमणीक होताहै ऊर्ध्ववीर्यवाला पुरुष होजाता है कामदेव सरीखा रूप और कोयल सरीखा स्वर होजाता है॥८६॥गरुड अथवा गीधसरीखी दृष्टि होतीहै बूढाभी जुवानकी तरह होजाता है जो १०८ मोदक सेवता है उसको अमृतके समान होजाताहै ॥८७॥ वीर्यकी वृद्धि करताहै श्रेष्ठ है बुढापा मृत्यु अपस्मार ज्वर उन्माद क्षय बातके रोग इन्होंको नाशता है ॥८८॥ खांसी श्वास शोजा भगंदर गुदरोग मंदाग्नि अतीसार अनेक प्रकारका ग्रहणीरोग ॥ ८९ ॥ बहुमूत्र प्रमेह शिरोरोग अरोचक वातजरोग पित्तज रोग कफज रोग इन सबोंको नाशता है॥९०॥

वन्ध्याचमृतवत्साच नष्टपुष्पाच याभवेत्॥ बहुपुत्रा जीववत्साभवेदस्यनिषेवणात् ॥ ९१ ॥ हरते सूतिकारोगं वृक्षमिन्द्राशनिर्यथा । मोदकं मदनानन्दं सर्वरोगेमहौषधम् ॥ ९२ ॥ कथितं देवदेवेन रावणस्यहितार्थिना ॥ ९३ ॥

भा०—वंध्या अर्थात् वांझ मृतवत्सा अर्थात् जिसके संतान नहीं जीवती हो नष्टपुष्पा अर्थात् जिसको नहीं ऋतुधर्म आताहो ऐसी स्त्रियें इसको सेवनेंसे बहुतपुत्रोंवाली जीवतेपुत्रोंवाली होजाती हैं ॥ ९१ ॥ सूतिका रोगको हरता है जैसे वृक्षको इंद्रका वज्र यह मदनानंद मोदक सब रोगों में महौषध है ॥ ९२ ॥ रावणका हित चाहते हुये महादेवजीनें यह कहा है ॥ ९३ ॥

श्वेतपुष्पसहस्राणि घृतप्रस्थेविपाचयेत् ॥ घृतेपक्के कृतेतस्मिन्निक्षिपेद्वैतदौषधम् ॥ ९४ ॥ सितोपलाचतुर्भागा चातुर्जातंपलंपलम् ॥ मृद्वीकाषट्पलं चैव क्षिपेन्मधुपलाष्टकम् ॥ ९५ ॥ धारासत्वंचार्धं पलं सर्वमेकत्रकारयेत् ॥ कर्षप्रमाणंतत्सेव्यं सततं च गदातुरैः ॥ ९६ ॥ जीर्णज्वरंक्षयंकासमग्निमांद्यं प्रमेहकम् ॥ प्रदरंरक्तजान्रोगान्कुष्ठार्शांसिविनाशयेत् ॥ नेत्ररोगान्सुदुःसाध्यांस्तथासर्वान्मुखोत्थितान् ॥ ९७ ॥ प्रस्थंपिप्पलीमादाय क्षीरेणैवानुपेषयेत् ॥ अर्धाढकंघृतंगव्यं शुद्धंखंडाढकंतथा॥९८॥ पचेन्मृद्वग्निनातावद्यावत्पाकमुपागतम् ॥ शीतीभूते

क्षिपेत्तस्मिंश्चातुर्जातं पलत्रयम् ॥ ९९ ॥ योजयेन्मात्रयायुक्तं दोषधात्वग्निसाम्यतः ॥ १०० ॥

भा०–सुपेदसेवतींके फूल एक हजारले ६४ तोलेभर घीमें पकावै घी पकनेमें ये औषध गेरै ॥९४॥ मिश्री ४ भाग दालचीनी ४ तेजपात ४ भाग इलायची ४ भाग नागकेशर ४ भाग ये चार चार तोले ले मुनक्का १४ तो० शहद ३२ तो० ॥९५॥ गिलोयका सत्व२ तो० इन सबोंको मिला रोगी १ तोलाभर निरंतर सेवै॥९६॥ यह सेवती पाक अजीर्णज्वर क्षय खांसी मंदाग्नि प्रमेह प्रदर रक्तके रोग कुष्ठ ववासीर इन्होंको नाशता है ॥ ९७॥ पीपल ६४ तोले भरले दूधसे पीसै घी १२८ तोले शुद्ध खांड १२ तो० ॥ ९८ ॥ इन्होंको मंद अग्नीसे पकावै जब पाकको प्राप्त हो तब शीतल होनेमें दालचीनी इलायची तेजपात नागकेशर इन्होंका चूर्ण मिलावै ॥ ९९ ॥ दोष धातु अग्निके समानपनेंसे मात्रा करकै प्रयुक्त करै ॥ १०० ॥

बल्यंवृष्यंतथाहृद्यं तेजोवृद्धिकरंपरम् ॥ जीर्णज्वरक्षतक्षीणमश्रांतंचैवबृंहयेत् ॥ १०१ ॥ छर्दितृष्णारुचिश्वासशोषजिह्वासकामलाः ॥ हृद्रोगंपाण्डुरोगंच प्रदरंचत्रिदोषजम् ॥ १०२ ॥ वातरक्तप्रतिश्यायमामवातंविनाशयेत् ॥ संवत्सरप्रयोगेण वलीपलितवर्जितः ॥ १०३ ॥ कुमारीकंदमादायपलेंविंशतिसंख्यया ॥ चतुर्गुणंचगोदुग्धंपाचयेन्मंदवह्निना ॥ १०४ ॥ यावच्चजीर्यतेदुग्धं तावत्पाचनकंकुरु ॥ छायाशुष्कंचकुर्वीत चूर्णयेद्बुद्धिमान्भिषक् ॥१०५॥ पिप्पलीमरिचंशुंठी प्रत्येकंचपलत्रयम् ॥ जातीफलं जातिपत्री लवंगंपलमेवच ॥१०६॥ गोक्षुरंकर्कटी-

बीजं प्रत्येकंचपलंपलम् ॥ चातुर्जातपलंचैवचित्र-
कंचपलंतथा ॥ १०७ ॥ सर्वेषांसूक्ष्मचूर्णंच कारये-
द्बुद्धिमान्भिषक् ॥ १०८ ॥

भा०-यह पीपलपाक बलमें हित है वीर्यमें हित है सुंदर है तेजको बहुत बढाता है जीर्णज्वर क्षत क्षीणको खानेसे पुष्टकरता है ॥ १०१ ॥ छर्दि तृषा अरुची श्वास शोष जिह्वारोग कामला हृद्रोग पांडुरोग त्रिदोषका प्रदर ॥ १०२ ॥ वातरक्त प्रतिश्याय आमवात इन्होंको नाशता है एकवर्ष सेवनेसे वलियां और बालोंका सुपेदपनासे रहित होताहै॥१०३॥ कुवारपाठा ८० तोले भर ले चौगुना दूधमें मंद अग्निसे पकावै ॥१०४॥ जबतक दूध जलै तबतक पाक कर छायामें सुका बुद्धिमान् वैद्य चूर्ण करै ॥ १०५ ॥ पीपल मिरच सूंठ ये बारह बारह तोले ले जायफल जावित्री लौंग ये चार चार तोले ले ॥ १०६ ॥ गोखरू काकडीके बीज ये चार चार तोले ले दालचीनी इलायची तेजपात ॥१०७॥ नागकेशर चीता ये चार चार तोले इन सबोंके मिहीन चूर्णको बुद्धिमान् वैद्य करावै ॥ १०८ ॥

सितापलंचविंशत्यागोघृतंचपलंदश ॥ तत्समंमहि-
षीदुग्धंतत्समंमधुमिश्रितम् ॥ १०९ ॥ लोहपात्रे
विनिक्षिप्यपाचयेन्मृदुवह्निना ॥ चूर्णं निक्षिप्यय-
त्नेनदर्व्यासम्यग्विचालयेत् ॥११०॥ यावद्घृतंप्र-
पश्येततावत्पाचनकंकुरु॥ कर्षमेकंलोहभस्मसुवर्णं
तत्समंततः ॥ १११ ॥ सिंदूरंकर्षमेकं तु दापयेद्भिष
गुत्तमः॥ कोलप्रमाणवटकान्भक्षयेद्बुद्धिमान्नरः ११२
ज्वीर्णज्वरेक्षयेकासेश्वासेसंतापशूलनुत् ॥ अजीर्ण-
कामवातघ्नं प्रदरस्यचनाशनम् ॥ ११३ ॥ स्त्रीणां

वंध्यत्वहरणं पुत्रंचैवप्रसूयते ॥ अंडवृद्धिहरंचैवस्त्रीणांरमयतेशतम् ॥ इदंगोप्यमिदंगोप्यमश्विनीदेवनिर्मितम् ॥ ११४ ॥

भा०-मिश्री ८ तो० गौका घी ४० तो० भैंसका दूध ४० तो० शहद ४० तो० इन्होंको॥१०९॥लोहाके पात्रमें घाल मंद अग्निसे पकावै जतनसे चूर्ण गेर करछीसे अच्छी तरह चलावै॥११०॥जबतक घी दीखै तबतक पकावै लोहाका भस्म १ तो० सोनाका भस्म १ तो०॥१११॥सिंदूर १ तो० वैद्य मिलावै बेरके समान गोली बुद्धिमान् मनुष्य बना खावै॥ ११२॥जीर्णज्वर क्षय खांसी श्वास इन्होंमें हित है संताप शूल अजीर्ण आमवात और प्रदर इन्होंको नाशता है ॥ ११३ ॥ स्त्रियोंके वंध्यत्वको नाशताहै और पुत्रोत्पादक है, अण्डवृद्धिको हरताहै १०० स्त्रियोंसे भोग कराता है कुमारीपाक गोप्य है गोप्य है अश्विनीदेवोंनें रचा है ॥ ११४ ॥

धात्रीफलानि पक्वानि तीक्ष्णलो हेन वेधयेत् ॥ विश्वावरणपत्रैश्चफलानिस्वेदयेद्भृशम्॥ ततोदुग्धेच संस्वेद्यजलेचतदनंतरम् ॥११५॥मधुमध्येक्षिपेद्भांडे स्थापयेद्दिनविंशतिः॥ विनष्टंमधुसंत्यज्य मधुमध्ये पुनःक्षिपेत् ॥ ११६ ॥ सिताधात्रीफलान्येव पेषयेत्करिणासह ॥ एलाचैवतुगाक्षीरीलोहवंगंतथैवच ॥ ११७ ॥ मेलयित्वासुनक्षत्रे प्रातःकर्षमितंभजेत्॥ बलेक्षीणेक्षयेचैव पथ्यंमधुरमाचरेत् ॥ ११८ ॥ प्रमेहंमूत्रकृच्छ्रंच नाशयेत्तत्क्षणादपि ॥ वीर्यवृद्धिकरं चैव वाजीकरणमुत्तमम् ॥ ११९ ॥ कुष्ठंपित्तप्रकोपं च नाशयेन्नात्र संशयः॥एतेन्येपित्तजारोगाः शोणि-

ताद्यास्तथैवच ॥ ते सर्वेंप्रशमंयांति धात्रीपाकस्य सेवनात् ॥ १२० ॥

भा०–पकेहुये आवलोंको तीक्ष्ण लोहासे बींधै अदरकके पत्तोंके क्वाथसे बहुत स्वेदित कर पीछे दूधमें पीछे पानीमें स्वेदित करै ॥ ११५ ॥ पात्रमें शहद घाल उसके मध्यमें आंवले छोड वीस दिन धरै नष्टहुआ शहदको त्याग फिर नवा शहद घालै ॥ ११६ ॥ मिश्री आंवला गजपीपल इलायची वंशलोचन लोहभस्म वंगभस्म ॥ ११७ ॥ इन्होंके चूर्णसें मिला सुंदर नक्षत्रमें प्रभात १ तोलाभर खावै बलके क्षीणमें और क्षयमें हित है मधुर पथ्य लेवै ॥ ११८ ॥ प्रमेह मूत्रकृच्छ्र इन्होंको शीघ्र नाशत-है उत्तम वाजीकरण है ॥ ११९ ॥ कुष्ठ पित्तका कोप पित्तके रोग रक्तके रोग ये सब इस आंवलापाकको सेवनेसे नष्ट होते है ॥ १२० ॥

वातारिबीजं प्रस्थंतु सुपक्वं निस्तुषीकृतम् ॥ क्षीरद्रोणार्धसंयुक्तं भिषङ्मंदाग्निनापचेत्॥२१॥ घृतप्रस्थार्द्धयुक्पक्वं खण्डप्रस्थद्वयंक्षिपेत् ॥ त्र्यूषणं सचतुर्जातं ग्रंथिकंवह्निचव्यकम् ॥ १२२ ॥ छत्रामिशीशठी बिल्वदीप्यौजीरेनिशायुगम् ॥ अश्वगंधाबलापाठा हपुषावेल्लपुष्करम् ॥ १२३ ॥ श्वदंष्ट्रारुग्वरादारु वेल्लर्यावालुकावरी ॥ एतानिपिचुमात्राणि चूर्णितानि विनिक्षिपेत् ॥ १२४ ॥ वातव्याधिंचशूलं च शोफंवृद्धिंतथोदरम् ॥ आनाहं बस्तिरुग्गुल्ममामवातं कटिग्रहम् ॥ ऊरुग्रहं हनुस्तंभं नाशयेदपि योगतः ॥ १२५ ॥ तेषूग्रगंधनाशाय रात्रौतक्रेविनिक्षिपेत् ॥ प्रातर्निष्कास्यततत्पिष्ट्वा ततोदुग्धेविपाचयेत् ॥ १२६ ॥

भा०-अरंडके बीज ६४ तो० अच्छे पकेहुये ले तुष दूरकर ५१२ तोलेभर दूधमें मंद अग्निसे पकावै ॥ १२१ ॥ घी ३२ तो० खांड १२८ तो० सूंठ मिरच पीपल दालचीनी इलायची तेजपात नागकेशर पीपलामूल चीता चव्य ॥ १२२ ॥ दोनों शोंफ कचूर वेलगिरी अजमान अजमोद दोनों जीरे हलदी दारुहलदी आसगंध खरैंहटी पाठा हाऊवेर वायविडंग पौहकरमूल ॥ १२३ ॥ गोखरू कूठ त्रिफला देवदार भिदारा गलु शतावरी ये सब एक एक तोलेभर भिदारा शतावरी ये सब एक एक तोलेभर ले चूर्ण बना गेरै ॥ १२४ ॥ वातव्याधि शूल शोजा अंडवृद्धि आदि उदररोग आनाह बस्तिरोग गुल्म आमवात कटिग्रह ऊरुग्रह हनुस्तंभ इन्होंको यह अरंडपाक नाशता है ॥ १२५ ॥ उग्रगंध दूर करनेके लिये लहसनोंको रात्रिमें तक्रविषे गेरै प्रभातमें निकास पीस दूधमें पकावै ॥ १२६ ॥

निस्तुषंलशुनंप्रस्थं क्षीरकुंभेपचेत्सुधीः ॥ घृतंपलचतुष्कंच पचेच्चमृदुवह्निना ॥ १२७ ॥ सुनिष्पन्नं मधुनिभं खंडप्रस्थद्वयंक्षिपेत् ॥ त्र्यूषणंचचतुर्जातं ग्रंथिकंचव्यीचित्रकम् ॥ विडंगं रजनीयुग्मं हपुषा वृद्धदारुकम् ॥ १२८ ॥ पौष्करं दीप्यपुष्पंच सुरदारु पुनर्नवा ॥ श्वदंष्ट्रा निंबरास्नाच शतपुष्पा वरी शठी ॥ १२९ ॥ अश्वगंधात्मगुप्ताचद्रव्याणि पिचुमात्रया ॥ शुक्रेयथाबलंसेव्यं रसोनाख्यंरसायनम् ॥१३०॥ सर्वान्वातामयाञ्छूलमपस्मारमुरःक्षतम् । गुल्मोदरवमीप्लीहवर्ध्मवृद्धिकृमीञ्जयेत् ॥ १३१ ॥ विबंधानाहशोफांश्च वह्निमांद्यंबलक्षयम् ॥ हिक्कांश्वासंच कासांश्च ह्यपतंत्र-

कमेवच ॥१३२॥ धनुर्वातं तथायामपक्षघातापतान
कम्॥अर्दिताक्षेपकं कुब्जं हनुग्रहशिरोग्रहम् १३३॥
विश्वाची गृध्रसी खल्ली पंगुवातं च संधिजम् । बाधिर्यं
सर्वशूलंच नाशयेदतिवेगतः ॥१३४॥ वातव्याधि-
गजेंद्रस्यकेशरीवकृतः शुभः ॥ कफव्याधिप्रशमनो
बलपुष्टिकरः स्मृतः ॥ १३५ ॥

भा०-तुषरहित ल्हस्सन ६४ तोले भर ले १०२४ तोलेभर दूधमें पकावै १६ तोले घी मिला मंद अग्निसे पकावै ॥ १२७ ॥ सुंदर निष्पन्न और शहद सरीखा खांड १२८ तो० मिलावै सूंठ मिरच पीपल दालचीनी इलायची तेजपात नागकेशर पीपलामूल चव्य चीता वायविडंग हलदी दारुहलदी हाऊवेर भिदारा ॥ १२८ ॥ पौहकरमूल अजमान लौंग देवदार शांठी गोखरू नींब रास्ना शोंफ शतावरी कचूर ॥ १२९ ॥ आसगंध कोंचके बीज ये सब एक एक तोलाभर ले अग्निके बलके अनुसार यह लशुनपाक सेवना रसायन है ॥ १३० ॥ सब वातरोग शूल अपस्मार उरःक्षत गुल्म उदररोग छार्दि प्लीहरोग वर्ध्मरोग वृद्धिरोग कृमि इन्होंको जीतता है ॥ १३१ ॥ बंधा आनाह शोजा मंदाग्नी बलक्षय हुचकी श्वास खांसी अपतंत्रक॥१३२॥ धनुर्वात आयामवात पक्षवात अपतानक अर्दितवात आक्षेपक कुब्ज हनुग्रह शिरोग्रह ॥१३३॥ विश्वाची गृध्रसी खल्लीवात पंगुवात संधिजवात बहरापना सब प्रकारके शूल इन्होंको अत्यंत वेगसे नाशता है ॥ १३४ ॥ वातव्याधिरूप हस्तीको यह सिंहकी तरह है कफ व्याधिको शान्त करता है बल और पुष्टिको करनेवाला कहा है ॥ १३५ ॥

द्राक्षादुग्धसितापृथक्परिमिता प्रस्थेनसंपाचिता
युक्त्यावैद्यवरेणचूर्णमधुना देयंपलार्धंपृथक् ॥
चातुर्जातकटुत्रयंमृगमदं लोहाभ्रकंकेशरं पत्रीजा

तिफलंमृगांकरजतं कुस्तुंबरीचन्दनम् ॥ १३६ ॥
सम्यग्जातरसंप्रभातसमये सेव्यंद्विकर्षोन्मितं स्नि-
ग्धंशुक्रकरंप्रमेहशमनं पित्तामयध्वंसनम् ॥ मूत्रा
घातविबंधकृच्छ्रशमनं रक्तार्तिनेत्रार्तिहृत्पादे पा-
णितलेविदाहशमनं सौख्यप्रदंप्राणिनाम् ॥ १३७ ॥
अश्मभेदात्प्रस्थमेकं चूर्णितंवस्त्रगालितम् ॥ गव्ये
दुग्धाढकेक्षिप्त्वा पाचयेन्मंदवह्निना ॥ १३८ ॥ द-
र्व्यासंघट्टयेत्तावद्यावद्घनतरंभवेत् ॥ एलालवङ्ग-
मगधा यष्टीमध्वमृताभया ॥ १३९ ॥ कौंतीश्व-
दंष्ट्रावृषकं शरपुंखापुनर्नवा ॥ यावशूकोनिलघ्नश्च
मांसी पंचांगुलोत्पलम् ॥ १४० ॥ वंगंलोहं-
तथाभ्रंच कर्पूरंपर्पटीशठी ॥ पत्रेभकेशरंत्वक्च
संशुद्धंचशिलाजतु ॥ १४१ ॥ पृथगर्द्धपलंचूर्णं चू-
र्णितासितशर्करा ॥ सार्धप्रस्थमिताग्राह्या दुग्धेलेह-
त्वतांगते ॥१४२॥ सर्वतन्निक्षिपेत्तत्र स्वांगशीतल-
तोनयेत् ॥ मधुनः प्रस्थकंदद्यात्स्निग्धभाण्डेविनिः-
क्षिपेत् ॥ १४३ ॥ कर्षार्धंभक्षयेत्प्रातस्तीक्ष्णं तै-
लादिकंत्यजेत्॥ पंचाश्मरीभेदनंस्यान्मूत्रकृच्छ्रंखुडं
तथा ॥ १४४ ॥ मूत्राघातान्प्रमेहांश्च नाशयेन्मधु-
मेहजान्॥अधोगंरक्तपित्तंचबस्तिकुक्षिगदंतथा १४५
तीव्राश्मरीपरीतानांविशेषेणहितंहितत् ॥ यद्ब्रह्म-
णाविरचितं च्यवनायनिवेदितम् ॥ १४६ ॥

भा०-दाख ६४ तो० दूध ६४ तो० मिश्री ६४ तो० इन्होंको पकाके दालचीनी इलायची तेजपात नागकेशर सूंठ मिरच पीपल कस्तूरी लोहभस्म अभ्रकभस्म केशर जावित्री जायफल मृगांक चांदीभस्म नेहपाली धानियां चंदन शहद ये दो दो तोले ले मिलावै ॥१३६॥ अच्छी तरह उपजा रसवाला हो तब प्रभातमें २ तोलेभर लेवै स्निग्ध है वीर्यको हरता है प्रमेहको नाशता है पैरोंका और हाथोंका और तालुवाके दाहको शांत करता है प्राणियोंको सुख देता है ॥ १३७ ॥ पाषाणभेद ८४ तोले भरले चूर्ण बना कपड़ासे छान २५६ तोलेभर गौके दूधमें गेर मंदअग्निसे पकावै ॥ १३८ ॥ करछीसे तबतक घोटै जबतक बहुत करडा हो इलायची लोंग पीपल मुलहटी गिलोय हरडै ॥ १३९ ॥ पित्तपापड़ा गोखरू वांसा शरपुंखा शांठी जवाखार बहेड़ा जटामांसी तेजपात कमल ॥ १४० ॥ वंग लोह अभ्रक कपूर पित्तपापडा कचूर तालीशपत्ता नागकेशर दालचीनी शुद्धकिया शिलाजीत ॥ १४१ ॥ ये सब दो दो तोलेले चूर्ण करै, सुपेद खांड ९६ तो० इन्होंको दूधमें मिला लेह बनावै ॥ १४२ ॥ स्वांगशीतल होनेमें शहद ६४ तो० मिला चिकना पात्रमें घाल धरै ॥१४३॥प्रभातमें आधा तोलाभर खावै; तीक्ष्ण पदार्थ और तेल आदिको वर्जै; पांच प्रकारकी पथरीको काढता है मूत्रकृच्छ्र खुड़वात ॥ १४४ ॥ मूत्राघात प्रमेह मधुमेहके रोग अधोगत रक्तपित्त बस्तिरोग कुक्षिरोग इन्होंको नाशता है ॥ १४५ ॥ तीव्र पथरीसे पीडितहुओंको विशेषकर हित है;ब्रह्माजीने रचकै च्यवनमुनिको दिया है ॥ १४६ ॥

विश्वौषधंपलान्यष्टौसर्पिषः पलविंशतिः ॥ प्रस्थद्वयं चगोक्षीरं शर्करार्धतुलातथा ॥ १४७ ॥ त्रिकटुत्रिसुगंधीच प्रत्येकंचपलंपलम् ॥ साधयेत्स्नेहविधिना सम्यक्शुंठीरसायनम् ॥ १४८ ॥ नाम्ना सौभाग्यशुंठीयं पुनःसौभाग्यदायकम् ॥ आमवातं

हरत्याशु त्वचि कांतिंप्रयच्छति ॥ १४९ ॥ धातुवृद्धिकरंवृद्धमायुश्चकुरुतेचिरम् ॥ वलीपलितनाशंच कुर्याद्वंध्यत्वनाशनम् ॥ १५० ॥ मेथिकायाः पलान्यष्टौ शुंठ्याअष्टपलानिच ॥ तयोश्चूर्णंपुटेपूतं दुग्धेमृद्वग्निना पचेत् ॥ १५१ ॥ दुग्धाढकयुतंगव्यं घृतमष्टपलंक्षिपेत् ॥ तत्तावत्सुपचेद्यावद्भवेदतिघनंपयः ॥ १५२ ॥ पुनःपचेच्छनैस्तत्र दत्त्वाढकमितांसिताम् ॥ ततःपाकेसुविज्ञाते ज्वलनादवतारयेत् ॥१५३॥ मरिचंपिप्पलीशुंठीकणामूलंसचित्रकम् ॥ यवानीजीरकेधान्यं कारवीशतपुष्पिका ॥ १५४ ॥

भा०—सूंठ ३२ तो० घी८० तो० गौका दूध१२८ तो० खांड२०० तो० ॥ १४७ ॥ सूंठ मिरच पीपल दालचीनी इलायची तेजपात ये चार चार तोले इन्होंको मिला स्नेहकी विधिसे सुंठीरसायनको अच्छी तरह बनावै ॥ १४८ ॥ यह सौभाग्यशुंठी नाम है फिर सौभाग्यको देता है आमवातको शीघ्र हरता है खालमें कांति देता है ॥ १४९ ॥ धातुको बढाता है आयुको शीघ्र बढाता है वलियां और सुपेदवालोंको नाशता है वंध्यापनाको नाशता है ॥ १५० ॥ मेथी ३२ तोले सूंठ ३२ तो० इन दोनोंके चूर्णको कपडासे छान दूधमें मंदअग्निसे पकावै ॥ १५१ ॥ गौका दूध २५६ तो० घी ३२ तो० मिला पकावै जबतक दूध बहुत करड़ा हो ॥ १५२ ॥ फिर २५६ तो० मिश्री मिला हौले २ पकावै पीछे पाक बननेमें अग्निसे उतारै ॥ १५३ ॥ मिरच पीपल शुंठी पीपलामूल चीता अजमान जीरा धनियां अजमोद सौंफ ॥ १५४ ॥

जातीफलं शठी त्वक्च पत्रकं भद्रमुस्तकम् । गृह्णी-
यात्पलमेतेषां सर्वेषां च पृथक् पृथक् ॥ १५५ ॥
षडक्षं नागरं तत्र मरिचं च षडक्षकम्।एषां चूर्ण परि-
क्षिप्य सर्वं संमिश्र्यरक्षयेत् ॥ १५६ ॥ एतत्तु भेष-
जं प्रोक्तं मेथिकापाकसंज्ञितम् । भक्षयेत्पलमात्रंत-
द्यथा चाग्निबलं तथा ॥१५७॥ आमवातं निहंत्ये-
तत् सर्वांश्च पवनामयान् । ज्वरांश्चविषमान्हंति पां-
डुरोगं सकामलम् ॥ १५८ ॥ हंत्युन्मादमपस्मारं
प्रमेहान्वातशोणितम् । अम्लपित्तं शिरःपीडां ना-
सारोगं दृगामयम् ॥ १५९ ॥ प्रदरं सूतिकोरागं ह-
न्यादेतन्नसंशयः । वपुषः पुष्टिकृद्बल्यं वीर्यवृद्धि-
करंपरम् ॥१६०॥ पूर्वं कृत्वाश्वगंधायाश्चूर्णं दशप-
लानि च । तदर्धं नागरं चूर्णं तस्यार्धं पिप्पली
शुभा ॥ १६१ ॥

भा०–जायफल कचूर दालचीनी तेजपात भद्रमोथा ये सब चार चार तोले ॥१५५॥ सूंठ ६ तो० मिरच ६ तो० इन्होंका चूर्ण मिला रक्षाकरै ॥१५६॥ यह मेथीपाक ४ तोले भर जैसा अग्निहो उसके अनुसार खाना ॥१५७॥आमवात सब वातरोग ज्वर विषमज्वर पांडुरोग कामला॥१५८॥ उन्माद अपस्मार प्रमेह वातरक्त अम्लपित्त शिरकी पीडा नासारोग नेत्ररोग ॥१५९॥ प्रदर सूतिकारोग इन्होंको नाशता है संशय नहीं शरीरको पुष्ट करता है वीर्यको बहुत बढाता है ॥ १६० ॥ आसगंधका चूर्ण ४० तोले सूंठका चूर्ण २० तो० सुंदर पीपल १० तो० ॥ १६१ ॥

मरिचानां पलंचैकं सूक्ष्मं चूर्णं तु कारयेत्।त्वगेलाप-

त्रपुष्पाणि चैकैकं तु पलं पलम् ॥ १६२ ॥ तुलार्धं महिषीदुग्धं तस्यार्धं चैव माक्षिकम्। माक्षिकार्धं घृतंगव्यं खंडात्रिंशत्पलानि च ॥ १६३ ॥ पयः खंडाज्यमाक्षिक्यं चत्वार्येकत्र कारयेत्। पूर्वं क्वथितदुग्धेन क्षिप्त्वाचूर्णं पचेद्भिषक् ॥ १६४ ॥ दर्वीप्रलेपे संजाते चातुर्जातं विमुंचयेत्। यज्जातं तंडुलाकारं तावन्निष्पन्नमाचरेत् ॥ १६५ ॥ पयोमुक्तं घृतं दृष्ट्वा तावदुत्तारयेत्ततः। ग्रंथिकं जीरकं छिन्ना लवंगं तगरं तथा ॥ १६६ ॥ जातीफलमुशीरं च वालकं मलयोद्भवम्। श्रीफलांभोरुहं धान्यं धातकी वंशलोचनम् ॥ १६७॥ धात्रीखदिरसारंच घनसारं तथैव च । पुनर्नवाजगंधा च हुताशन शतावरी ॥ १६८ ॥

भा०–मिरच दालचीनी इलायची तेजपात लौंग ये सब चार चार तो० ॥१६२॥ भैंसका दूध २०० तो० शहद १०० तो० गौका घी५० तो० खांड १२० तो० ॥१६३॥ पीछे दूध खांड घृत शहद इन सबोंको मिलावै पहले क्वथित किया दूधमें मिला चूर्णको पकावै ॥१६४॥ जब करछीके चिपकनें लगै तब दालचीनी इलायची तेजपात नागकेशर इन्होंका चूरण मिलावै जब पकेहुये चावलोंके आकार बनै तब सिद्ध जानै ॥१६५॥ दूधसे छुटा घी देख उतारै. पीपलामूल जीरा गिलोय लौंग तगर ॥१६६॥ जायफल खस नेत्रवाला मलयागिरिचंदन बेलफल कमल धानियां धवकेफूल वंशलोचन ॥ १६७ ॥ आंवला खैरसार कपूर सांठी तुलसी चीता शतावरी ॥ १६८ ॥

मात्रागद्याणकं चैव द्रव्याणामेकविंशतिः। सूक्ष्मंचूर्णं कृतं चैव योगो ह्यस्मिन् विनिर्दिशेत् ॥ १६९ ॥

पश्चात्तुशीतलंकृत्वा स्निग्धभाण्डेनिधापयेत् ॥ पला-
र्धमपिभुंजीत यदृच्छाहारभोजनः ॥ १७० ॥ कासं
श्वासं तथा हन्यादजीर्णं वातशोणितम्॥प्लीहामदंच
मेदश्च ह्यामवातंचदुर्जयम् ॥ १७१ ॥ शोफं शूलं
चवातार्शः पांडुरोगंच कामलाः॥ग्रहणीं गुल्मरोगंच
ह्यन्यं वातकफोद्भवम् ॥ १७२ ॥ विकारो विलयं
याति यथासूर्योदये तमः॥ एकमासप्रयोगेण वृद्धः सं-
जायते युवा ॥ १७३॥ मंदाग्नीनां हितं बल्यं बाला-
नां चांगवर्द्धनम् । स्त्रीणांच कुरुते पुष्टिं प्रसवेस्त-
न्यवर्द्धनम् ॥ १७४ ॥ क्षीणानां चाल्पवीर्याणां हितं
कामाग्निदीपनम् ॥ १७५ ॥

भा०–ये इक्कीस औषध आधा आधा तोला ले इन्होंका चूर्ण कर इस योगमें मिलावै ॥ १६९ ॥ पीछे शीतलकर चिकना पात्रमें घाल धरै मनोवांछित भोजन करनेवाला २ तोलेभर खावै ॥ १७० ॥ खांसी श्वास अजीर्ण वातरक्त प्लीहरोग मद मेदरोग भयंकरआमवात ॥ १७१ ॥ शोजा शूल वातकी बवाशीर पांडुरोग कामला ग्रहणी गुल्मरोग वातकफकें रोग इन्होंको नाशता है ॥ १७२ ॥ रोग नष्ट होता है जैसे सूर्य्यके उदयमें अंधेरा महीनाभर सेवनेसे बूढा जवान होजाता है ॥ १७३ ॥ मंदाग्निवालोंको हित है बलमें हित है बालकोंके अंगको बढाता है स्त्रियोंके पुष्टि करता है प्रसवमें दूध बढाता है ॥१७४॥ क्षीणको अल्पवीर्यवालोंको हित है कामाग्निको दीपता है सर्व व्याधियोंको हरता है श्रेष्ठ है सर्वोत्तमयोग कहा है ॥ १७५ ॥

नाम्लं न मधुरंतक्रं सैंधवेन तथायुतम्॥ पिष्टंमरिच-
चाणक्यं निःक्षिप्य सुनिधायच ॥ १७६ ॥ ततस्था-

ल्यांघृतंवाथतैलंतप्त्वाचनिःक्षिपेत् ॥ तस्मिन्निशी रामठंच पश्चात्स्थालींपिधायच ॥ १७७ ॥ तत्रार्द्धं निःक्षिपेत्तस्यां पिधायचपुनःक्षिपेत् ॥ बुद्बुदोत्पत्तिपर्यंतं पक्त्वासाकथिकाभिधा ॥ १७८ ॥ कथिकापाचनीरुच्या लघ्वीवह्निप्रदीपिनी ॥ कफानिल विबंधघ्नी किंचित्पित्तप्रकोपिनी ॥ १७९ ॥

भा०—न खट्टोहो और न मधुर हो ऐसा तक्रमें सेंधानमक पिसीहुई मिरच पिसाहुआ चनोंकी दालका बेसन इन्होंको मिलाय ॥ १७६ ॥ गर्मकिया पात्रमें घृत अथवा तेल घाल इसमें हलदी और हींग डाल दूसरा पात्रसे ढक ॥ १७७ ॥ उसमें पूर्वोक्त पदार्थ आधाघाल पात्रसे ढक फिर आधा घाल पकावै जब बुलबुले उठनें लगै तब तक पकावै वह कथिका अर्थात् कढी कही है ॥ १७८ ॥ कढी पाचन है रुचीमें हित है हलकी है अग्नीको जगाती है कफ वात बंधा इन्होंको नाशती है और कछुक पित्तको कुपित करती है ॥ १७९ ॥

शुण्ठीमरीचानियवानिचव्यं सपिप्पलीपिप्पलिमूल चित्रकम् ॥ ससैंधवंदाडिमत्वक्समेतं धान्यंसहिंगू जरणद्वयंच ॥ हरीतकीह्यामलकीचतेषां चूर्णसुपिष्टं चणकोद्भवंच ॥ साध्याविनिःक्षिप्यसुतक्रमध्ये सापं चकोलकथिकाचपूर्ववत् ॥ १८० ॥ श्वासाग्निकृद्वातकफप्रणाशिनी हृद्यामशूलानिलगुल्मकासजित् ॥ यस्ययस्यफलैर्युक्ता पूर्ववच्चप्रसाधिता । कथिकासा फलगुणा रुचिकृत्पाचनीमता ॥ अग्निदीप्तिकरा वातकफाश्रमहरापरा ॥ १८१ ॥

भा०–सूंठ मिरच अजमान चव्य पीपल पिपलामूल चीता सेंधा-नमक अनारदाना दालचीनी धनियां हींग दोनों जीरे हरडै आंवला इन्होंका मिहीन चूर्णको चनोंके चूनमें मिलाय सुंदर तक्रमें घोल पहले-की तरह पकावै यह पंचकोल कथिका अर्थात् कढी कहीहै ॥ १८० ॥ यह श्वास और अग्नीको करती है वातकफको नाशती है मनोहर है और आमशूल वातगुल्म खांसी इन्होंको जीतती है जिस जिसके फलोंसे युत हुई और पहलेकी तरह साधित करी फलगुणा कढी कही है रुचिकर-ती है पाचन मानी है; अग्नीको दीप्त करती है और वातकफ परिश्रम इन्होंको हरती है उत्तम है ॥ १८१ ॥

आममाम्रंत्वचाहीनं द्विस्त्रिर्वा खंडितं ततः ॥ आज्यमा-ज्येमनाक्तद्वत्खंडपाकेथयुक्तितः ॥ १८२ ॥ सुपक्कं चसमुत्तार्य्य मरीचैलेंदुवासितम्॥ स्थापितस्निग्धमृ-द्भांडे रागखांडवसंज्ञितः ॥ १८३ ॥ पुष्टिदोबलदः पित्तवातास्रारुचिनाशनः ॥ स्निग्धोगुरुस्तर्पणश्च सुस्वादूरागखांडवः ॥ १८४ ॥

भा०–कच्चे आमोंके छिलकोंको दूरकर दो दो अथवा तीन तीन टुकडे बनाय घृतमें भून पीछे खांडकी पातमें युक्तिसे पकावै ॥ १८२ ॥ जब अच्छी तरह पकै तब उतार कालीमिरच इलायची कपूर इन्होंको मिलाय चिकना माटीका पात्रमें घाल धरै यह रागखांडवसंज्ञक है अर्थात् मुरब्बा है ॥ १८३ ॥ यह पुष्टिको देता है बलको देता है पित्त वातरक्त अरुची इन्होंको नाशता है चिकना है भारी है तृप्ति करता है और सुंदर स्वादु है ॥ १८४ ॥

बालाम्रस्यत्वचंक्षिप्त्वा सूक्ष्मखंडानि कारयेत् ॥ गुडेक्षिप्त्वाकरेणाद्यं विश्वाचूर्णसतैलकम् ॥ १८५ ॥ निःक्षिप्यभांडतेद्द्रव्यं नाम्नातद्रागखाण्डवम् ॥ सिता

रुचकसिन्धूत्थैः सवृक्षाम्लपरूषकैः ॥ जंबूफलरसै-र्युक्तो रागोराजिकसाधितः ॥ १८६ ॥ खांडवोमधु-राम्लादिरसंसंयोगसंभवः ॥ दीपनोबृंहणोरुच्यस्ती-क्ष्णोहृद्यःश्रमापहः॥ १८७ ॥ रुचिकृच्छुक्रजनक-स्तिक्तःक्षारश्चसस्मृतः ॥ मुखजिह्वाशुद्धिकरो रक्त पित्तविवर्द्धनः ॥ १८८ ॥ जडःकफकरःकुष्ठकोप-नोम्लो ह्यवृष्यकृत् ॥ आध्मानकृच्चनेत्राणामहितो मेदरोगहा ॥ तृष्णामूर्च्छाभ्रमच्छर्दिंकारकोल्पं-चभक्षयेत् ॥ १८९ ॥

भा०—कच्चे आंबोंका छिलका दूरकर मिहीन टुकडे बनाय गुडमें मिलाय हाथसे मर्दितकर सूंठका चूर्ण और तेल मिलाय ॥ १८५ ॥ बर्तनमें घाल रक्षाकरै यह रागखांडव है. मिश्री कालानमक सेंधानमक अम्लवेतस फालसा जामनके फलोंका रस राई इन सबको मिलाय साधै ॥१८६ ॥ मधुराम्लरस संयोग संभव खांडव है यह दीपन है पुष्टि करता है रुचीमें हितहै तीक्ष्णहै मनोहरहै परिश्रमको हरताहै ॥ १८७ ॥ रुचीको करता है वीर्य्यको उपजाता है कडुवा है खारा कहाहै मुख और जीभको शोधता है रक्तपित्तको बढाता है ॥ १८८ ॥ जड है कफको करता है कुष्ठको कोपता है खट्टा है, पुष्टिको नहीं करता है आफरा करता है आंखोंको हित नहीं है मेद रोगको नाशता है ॥ और तृषा मूर्च्छा भ्रम छर्दि इन्होंको करताहै इसलिये यह अल्पभोजन करना १८९॥

चिंचांकपित्थंवृक्षाम्लं मातुलिंगंच दाडिमम् । एषा-मन्यतमस्यापि चिकीर्षा खांडवंप्रति । तद्गृहीत्वा विनिःक्षिप्य तस्मिन्सैंधवशर्करे ॥ १९० ॥ गुडंवा-हिंगुसहितं दृषदाच सुपेषयेत् । गुणास्तस्यतुस-

वेंपि कथिता उक्तरागवत् ॥१९१॥ तरुणाम्रं वर्ज-
यित्वामर्द्दयेद् गुडशर्करे॥सैंधवं मरिचं हिंगुभर्जितं
तत्र निःक्षिपेत ॥ १९२ ॥ रुचित्कृच्चाम्रलेहोयं
मधुरस्तृप्तिकारकः ॥ हृद्यः स्निग्धो गुरुश्चोक्तः पा-
कविद्याविशारदैः ॥ १९३ ॥

भा०-अमली कैथ आमसोल विजोरा अनार इन्हों मांहसे एक कोई-साका खांडव बनानाहो तब उसको लेकर पात्रमें घाल तहां सेंधानमक खांड॥१९०॥अथवा गुड और हींग मिलाय पत्थरसे पीसै इसके गुण पूर्वोक्त रागके समान है ॥ १९१ ॥ तरुण आंबोंको वर्जितकर शेषरहे आंबोंको गुड और खांडमें मर्दितकरै तहां सेंधानमक मिरच भुनाहुआ हींग इन्होंको मिलावै॥१९२॥यह आम्रलेह रुचीको करता है मधुर है तृप्तिको करता है मनोहर है चिकना है भारीहै ऐसे पाकविद्या जानने वालोंने कहा है ॥ १९३ ॥

ससितंदधिमध्वाज्यं मरिचैलादिसंस्कृतम्॥नागके-
शरत्वक्सारतमालांर्द्रकचूर्णकम् ॥ १९४ ॥ कर्पूर-
वासिते भाण्डे लघुहस्तेनपेषयेत् ॥ ऐक्यतांसमनु-
प्राप्ते सिद्धास्यान्मज्जिकाभिधा ॥ १९५ ॥ रसाला
शुक्रकृद्बल्या रोचना वातपित्तजित्॥ गुरुःस्निग्धप्र-
तिश्यायं विशेषेणविनाशयेत् ॥ पुष्टिदा कां-
तिकृद्वृष्या कफकृच्छ्रमनाशिनी ॥ १९६ ॥

भा०-मिश्री दही शहद घृत मिरच इलायची नागकेशर दालचीनी तेजपात अदरक इन्होंका चूरण कर ॥१९४॥कपूरसे धूपित कियाबर्तनमें घाल हलका हाथसे पीसे जब सब मिलाजावै तब मज्जिका शिखरिणी सिद्ध होतीहै ॥ १९५ ॥ यह रसाला वीर्यको करती है बलमें हितहै रुचीको

करतीहै वातपित्तको जीततीहै भारीहै चिकनी है विशेषकर प्रतिश्याय अर्थात् जुखाम विशेषको नाशती है ॥ पुष्टीको देती है कांतिको करतीहै और परिश्रमको नाशती है ॥ १९६ ॥

वस्त्रेबद्धागालितंच दधि द्विप्रस्थमानकम्। तस्मिन् घृतं माक्षिकंच प्रत्त्येकं च पलं पलम् ॥ १९७ ॥ निक्षिप्य शर्करां तस्मिन् मानिकाद्वितयं तथा। नागकेशरमेलात्वक्पत्रं तामालसंज्ञकम् ॥ १९८ ॥ अर्द्धकर्षं क्षिपेद्विश्वां मरिचे द्विपले तथा। सर्वमेकीकृतं तत्तु भांडेकर्पूरवासिते ॥ १९९ ॥ गृहीत्वाचैव वस्त्रेण मुखंबद्धाथगालयेत्। हस्तेनालोड्यत्नेन सा रसालाभिधा स्मृता ॥ २०० ॥ गुणैस्तुल्या मज्जिकायाः शिखरिण्याः स्मृता बुधैः। अतीवतापितेभांडे मृन्मये निःक्षिपेत्ततः ॥ २०१ ॥ स्थलेच शीतले स्थाप्या यावच्छीतत्त्वमाप्नुयात्। इयंवासवती प्रोक्ता गुणैर्लघ्वी स्मृता बुधैः ॥ २०२ ॥

भा०–कपडामें १२८ तोले भर बिलोई हुई दहीको बांध धरै, उसमें घृत ४ तो० शहद ४ तो० ॥ १९७ ॥ फिर उसमें खांड ६४ तो० और नागकेशर इलायची दालचीनी तेजपात ॥ १९८ ॥ ये सब दोदो तोले, सूंठ और मिरच ये चारचार तोले इन सबको मिलाय कपूरसे धूपित किया पात्रमें घाल ॥१९९॥ कपडासे मुख बांध छानै, पीछे जतनकर हाथसे आलोडित करै; यह रसाला बुद्धिमानोंने कही है ॥२००॥ मज्जिका शिखरिणीके गुणोंके समान गुणोंवाली कहीहै. पीछे अत्यंत गर्मकिया माटीके पात्रमें घालै॥२०१॥पीछे शीतल जगहमें स्थापित करै जब तक शीतलहो. यह वासवती पंडितोंनें कहीहै और गुणोंमें हलकीहै ॥ २०२ ॥

मधुरायाश्चाम्लिकाया मज्जाग्राह्याचनिस्तुषा ॥ तस्यामेलांसितांचन्द्रं मरिचानियथारुचि ॥ २०३ ॥ निःक्षिप्यहस्तेनालोडच घृतेतप्तेविनिःक्षिपेत् ॥ फलवृष्याशिखरिणी हृद्यावृष्यासरागुरुः ॥ २०४ ॥ दुग्धाष्टमांशभागेन तंडुलान्घृतसंस्कृतान् ॥ शुद्धेऽर्धपक्के दुग्धेतु क्षिप्त्वासिद्धाहिक्षीरिका ॥ २०५ ॥ पायसंशर्करायुक्तं घृतप्रक्षेपणाद्भवेत् ॥ सागुरुर्धातुकृद्बल्या मलावष्टंभिकातथा ॥ २०६ ॥ अरुचिंमेदवृद्धिंच कफमग्नेश्चमंदताम् ॥ कृत्वाचरक्तपित्तंहि वातपित्तंचनाशयेत् ॥२०७॥ केचिदस्यां कुंकुमैलां क्षिप्त्वा कुर्वंति पायसम् ॥

भा०–मीठी अमलीकी तुषरहित मज्जा लेनी, उसमें इलायची मिश्री कपूर मिरच ये सब जैसा रुची हो वैसे मिलाय ॥२०३॥ हाथसे आलोडितकर गर्म घीमें डाले; यह फलवृष्या शिखरिणी है यह मनोहर है वीर्यमें हितं है सरलहै भारीहै ॥२०४॥ दूधके आठमें भाग घीमें भुने चावल लेकै शुद्ध और आधा पका हुआ दूधमें डाले; यह खीर सिद्ध होतीहै ॥२०५॥ उसमें घृत और बूरा डालनेंसे पायस कहाता है. वह भारीहै धातुवोंको करतीहै ॥ २०६ ॥ अरुचि मेदवृद्धि कफ मंदाग्नि रक्तपित्त और वातपित्तको नाशती है॥२०७॥कितनेक वैद्य इसमें केशर और इलायची मिलाय खीर करतेहैं ॥

नारिकेलंतनूकृत्यच्छिन्नंपयसिगोःपचेत् ॥ २०८ ॥ सितागव्याज्यसंयुक्तंतत्पचेन्मृदुवह्निना ॥ नारिकेलोद्भवाक्षीरीस्निग्धाशीतातिपुष्टिदा ॥ २०९ ॥ गुर्वी सुमधुरावृष्यारक्तपित्तानिलापहा ॥ गोधूमपायसा-

बल्याकफमेदकरागुरुः ॥ २१० ॥ शीतलापित्तश-
मनी वातकृच्छुक्रवर्द्धिनी ॥

भा०–गोलाके मिहिन छीलके बनाय गौका दूधमें पकावै ॥ २०८ ॥ उसमें मिश्री गौका घी मिलाकै मंद अग्निसे पकावै; यह नारिकेल खीर चिकनी है शीतल है अत्यंत पुष्टिको देती है ॥ २०९ ॥ भारी है सुंदर मिठी है वीर्यमें हित है रक्तपित्तको और वातको नाशती है. गेहूंका चूनकी खीर बलमें हित है कफको और मेदको करती है ॥ २१० ॥ भारी है शीतलपित्तको शांत करती है वातको करती है और वीर्यको बढाती है ॥

काश्मरीमधुखर्जूरमृद्धिकाफालसाफलम् ॥ २११ ॥
एषांजलंगृहीत्वातु ह्येकीकृत्यक्षिपेदमून् ॥ चातुर्जा-
तेन्दुमरिचं शर्कराचार्द्रकादिकान् ॥ २१२ ॥ वस्त्रे-
णगालयित्वातत्पंचसाराख्यपानकम् ॥ गुरुवृष्यंधा-
तुकरंपित्ततृट्श्रमदाहनुत् ॥ २१३ ॥ द्राक्षायाः पा-
नकंमूर्च्छारक्तपित्ततृषापहम्॥श्रमदाहग्लानिहरमथ-
फालसपानकम् ॥ २१४ ॥ बदरीफलपानंचहृद्यंच-
मलरोधकृत् ॥

भा०–कंभारी महुआ खजूर मुनक्का फलसाके फल ॥ २११ ॥ इन्होंके रस ले मिलाय उसमें इलायची दालचीनी नागकेशर तेजपात कपूर मिरच खांड अदरक इन्होंको डाल ॥ २१२ ॥ कपडासे छानै; यह पंचसाराख्य पान है. यह भारी है वीर्यमें हित है धातुवोंको करता है और पित्त तृषा परिश्रम दाह इन्होंको दूरकरता है२१३दाखोंका पना मूर्च्छा रक्तपित्त तृषा इन्होंको नाशता है परिश्रम दाह ग्लानि इन्होंको हरता है. फलसोंका पन्ना और ॥२१४॥ बेरोंका पना सुंदर है मलको रोकता है–

खर्जूरफलसद्राक्षाटेभुर्णीकोलदाडिमी ॥ २१५ ॥ आसांफलरसश्चेक्षुरसेंदुमरिचंगुडम् ॥ चातुर्जातंच योग्यंहिनिःक्षिपेत्तद्रसेभिषक् ॥ २१६ ॥ एतद्धिपानकंयोग्यंहृद्यंतृप्तिकरंगुरु॥ विष्टंभिमूत्रलंचैवग्लानिश्रमतृषाहरम् ॥ २१७ ॥ तत्तत्फलैस्तुसदृशागुणेशेषाइतीरितम् ॥

भा०–खजूरके फल दाख कुचलाविशेष बेर अनार ॥२१५॥ इन्होंके फलोंके रस ईखका रस इन्होंमें कपूर मिरच गुड दालचीनी इलायची नागकेशर तेजपात इन्होंके चूर्णको वैद्य मिलावै ॥२१६ ॥ यह पना योग्य है मनोहर है तृप्तिको करता है भारी हैं विष्टंभी है मूत्रको पैदा करता है ग्लानि परिश्रम तृषा इन्होंको नाशता है ॥ २१७ ॥ बाकी रहे फलोंके पने तिस तिस फलका गुणोंके समान गुणोंवाले हैं ॥

फालसाम्लिकद्राक्षादिपक्कानिचफलानिवै ॥ गृहीत्वातज्जलंकार्यंतस्मिन्नार्द्रकचंद्रकौ ॥ २१८ ॥ चातुर्जातंमरीचानि शर्करांचयथारुचि ॥ क्षिप्त्वावस्त्रे गालितंस्यात्पानकं तच्चमूत्रलम् ॥ २१९ ॥ हृद्यंतृप्तिकरंपित्तश्रमतृड्ग्लानिछर्दिहृत् ॥ वातंदाहंमदंमोदं नाशयेत्तद्द्विधास्मृतम् ॥ अम्लंचमधुरंचैवतद्गुणाःस्युर्यथाफले ॥ २२० ॥

भा०–फालसा अमली दाख इन आदिके पके हुये फल इन्होंके रस ले उसमें अदरक कपूर खांड ॥ २१८ ॥ दालचीनी इलायची नागकेशर तेजपात मिरच जैसी रुची हो उसके अनुसार खांड मिलाय कपडामें वाल छानै; यह पना मूत्रको उपजाता है ॥ २१९ ॥ सुंदर है तृप्तिको

करता है पित्त परिश्रम तृषा ग्लानि छर्दि वात दाह मद मोह इन्होंको नाशता है. वह दो प्रकारका कहा है ॥ २२० ॥ एक अम्ल है और दूसरा मधुर है जैसे फलमें गुण हैं वैसेही पना अर्थात् पानकमें गुण है ॥

सांद्रेदध्निमरीचंपिप्पलिशुंठीलवंगकर्पूरम् ॥ एषां चूर्णसाकंशर्करयामर्द्यशुद्धवस्त्रेण ॥ २२१ ॥ गालयित्वाक्षिपेत्तस्मिन्पक्वदाडिमबीजकम् ॥ प्रमोदसट्टकंह्येतद्वर्धमानगुणैःसमम् ॥२२२॥ सांद्रंदधिगृहीत्वातु किंचिन्मथ्नाचमंथयेत् ॥ शर्करांमरिचंशुंठी पिप्पलीजीरचूर्णकम् ॥ २२३ ॥ निःक्षिप्यचयथा योग्यं हस्तेनालोडचयत्नतः ॥ वस्त्रेणगालयेत्तस्मिन् पक्वदाडिमबीजकम् ॥२४॥ निःक्षिप्यसिद्धमेतत्तु सट्टकंवर्धमानकम्॥ गुरुर्दीप्तिकररुच्यं बलदंतृप्तिकारकम् ॥ कफंवातंचपित्तंच श्रमंग्लानिं तृषांजयेत्२२५॥

भा०–करडा दहीमें मिरच पीपल सूंठ लौंग कपूर इन्होंका चूरण और खांडको मर्दित कर निर्मल वस्त्रसे ॥ २२१ ॥ छान उसमें पकेहुए अनारके दाने मिलावै; यह प्रमोदसट्टक वर्धमान सट्टकके गुणोंके समान है ॥ २२० ॥ करडा दही लेकै कछुक मंथासे मथै उसमें खांड मिरच सूंठ पीपल जीरा इन्होंका चूरण मिलाय जतनकर हाथसे आलोडित कर वस्त्रसे छान उसमें पकेहुए अनारके दाने मिलाय ॥ २२१ ॥ सिद्ध करै. यह वर्द्धमान सट्टक भारी है कांति करता है रुचिमें हितहै बल देता है तृप्ति करता है ॥ २२२ ॥ कंठरोग वात पित्त परिश्रम ग्लानि तृषा इन्होंको जीतता है ॥

दधिवीचिर्विनिष्कास्यतस्मिन्विश्वामरीचयोः । कृष्णाचित्रकयोश्चूर्णं क्षिप्त्वाभांडे सुघोलयेत् ॥२२६॥

वस्त्रपूते ततस्तस्मिन्बीजंदाडिमजं क्षिपेत् ॥ सोमसट्टकनामासौ वर्धमानगुणैः समः ॥ २२७ ॥ वृंताकंभर्जयित्वातु त्वङ् निष्कास्यास्य यत्नतः ॥ हस्तेनसूक्ष्मं संमर्द्य सैंधवं चाग्निरामठम् ॥ २२८ ॥ बृहदार्द्रं मरीचंच तथा कुस्तुम्बरी क्षिपेत् ॥ सूक्ष्मीकृतं श्रीफलंचदधितिंतिडिकाफलम् ॥ २२९ ॥ क्षिप्त्वा हस्तेन संमर्द्य घृतेतप्ते विनिःक्षिपेत् ॥ एवं सर्वफलानांच कंदानांचभरित्रकम् ॥ कार्यं तत्तद्गुणकरं प्रोक्तं पाकविशारदैः ॥ २३० ॥

भा०–दहीकी मलाई निकास उसमें सूंठ मिरच पीपल चीता इन्होंका चूर्ण मिलाय पात्रमें घाल घोलै ॥ २२६ ॥ पीछे वस्त्रसे छान अनारके दाने मिलावै; यह सोमसट्टक वर्द्धमान सट्टकके गुणोंके समान गुणोंवाला है ॥ २२७ ॥ बैंगनको भून उसका छिलकाको जतनसे निकास हाथसे मिहीन मर्दितकर उसमें सेंधानमक चीता हींग ॥ २२८ ॥ अदरक नहपाली धनियां नारियलका पानी दही अमली ॥ २२९ ॥ इन्होंको मिलाय हाथसे मर्दितकर गर्म घीमें डालै. ऐसे सब फलोंका और कंदोंका भुड़ता बनता है, पाकको जाननें वालोंने गुणकारक कहा है ॥ २३० ॥

कूष्मांडंकर्त्तयित्वास्य जलंनिष्कास्य यत्नतः ॥ कुस्तुंबुरुनिशामाषचूर्णसतिलसैंधवम् ॥ निःक्षिप्यवटकाः कार्या आतपेशोषयेत्ततः ॥२३१॥ रुचिदा वातहंतारस्तिलतैलेषुपाचिताः ॥ कर्कट्यलाब्वादीनांतु कार्याश्चैवंविशारदैः ॥२३२॥ कूष्मांडकफलं गृह्य कर्त्तयित्वा प्रयत्नतः ॥ तस्माज्जलञ्चनिष्कास्य

तस्मिश्चूर्णंविनिःक्षिपेत् ॥ २३३ ॥ चणकानां माषकाणां धान्यानां मरिचस्यच ॥ निशायारामठस्यापि लवणंचयथारुचि ॥ २३४ ॥ कोलप्रमाणवटकाः कूष्मांडस्येतिसंज्ञिताः ॥ ते सौरभेयेप्रक्षिप्य रुचिदा वातहारकाः ॥ २३५ ॥

भा०–कोहलाको कतर उसका रसको जतनसे निकास उसमें धनियां हलदी उडद तिल सेंधानमक ये सब मिलाय गोले बनावै, पीछे घाममें सुखावै ॥ २३१ ॥ ये बडे तिलोंके तेलमें पकावै; रुचीको देते हैं वातको नाशते हैं काकडी और तूंबी आदिके भी बडे ऐसेही वैद्योंने कहे हैं ॥२३२॥ कोहलाको ले जतनसे कतर उसका रस निकास उसमें॥२३३॥ चनोंका चून उड़दोंका चून धनियां मिरच हलदी हींग नमक ये जैसी रुची हो वैसे डाले ॥ २३४ ॥ बेरके प्रमाण गोलियां बनावै ये कूष्मांडसंज्ञक है. ये गायके तक्रमें प्राप्त करने रुचीको देते हैं और वातको नाशते हैं ॥ २३५ ॥

आढकीमासचणकतंडुलानांतुपिष्टके ॥ हिंगुलवणधान्याकान्क्षिप्त्वातोयेनमेलयेत् ॥ २३६ ॥ संमर्द्यचततःपश्चाद्गृहीत्वैकंमरीचकम् ॥ तद्गर्भभूतांगुटिकां कृत्वोष्णेनाविशोषयेत् ॥ २३७ ॥ मरीचगर्भसंज्ञेयागुटिकाघृतपाचिता ॥ वातगुल्महराहृद्यारुचिदासाचभक्षिता ॥२३८॥ सूरणंखंडशःकृत्वा स्वेदयित्वाचपेषयेत् ॥ तस्मिश्चलवणंहिंगुजीरकंवा मरीचकम् ॥ २३९ ॥ निःक्षिप्यवटकान्कृत्वाघृतेततेचपाचयेत् ॥ रुचिदा दीपनाःप्रोक्ता वातदुर्नामनाशनाः ॥ २४० ॥

भा०–अर्हर उड़द चना चावल इन्होंकी पीठीमें हींग नमक धनियां इन्होंको मिलाय पानीसे युत करै॥२३६॥मर्दितकर पीछे एक मिरचले उसको गर्भमें दे गोलियां बनाके गर्माईसे सुखावै ॥२३७॥ ये मरिचगर्भ नामक गोलियां घृतमें पकानी वातके गुल्मको हरती हैं मनोहर हैं रुचीको देती हैं ॥ २३८ ॥ जिमीकंदके टुकडे बनाय स्वेदितकर पीसै, उसमें नमक हींग जीरा मिरच ॥ २३९ ॥ इन्होंकी मिलाय बड़े बनाय तपाया घृतमें पकावै; ये रुचीको देते हैं दीपन कहे हैं और वातके बवासीरको नाशते हैं ॥ २४० ॥

तंडुलानांरुचिकरा बल्याधातुविवर्धकाः॥ कफवात-हरा वृष्याः पाचकालघवःसराः ॥२४१ ॥ धूमसी-माषजांहिंगुहरिद्रालवणैर्युताम् ॥ जीरकस्वर्जिका-भ्यांच मरीचेनजलेनच ॥ २४२ ॥ आलोड्यलोष्टं कृत्वातु द्विदिनंस्थापयेत्तथा ॥ पश्चाद्दृषदि निष्कुट्य तनूत्कृत्यचवेल्लिताः ॥ २४३ ॥ पर्पटास्तेसदंगार-भ्रष्टाःपरमरोचनाः ॥ दीपनाःपाचनारूक्षा गुरवःकिं-चिदीरिताः ॥ २४४ ॥ माषजाःपर्पटाबल्या रोचनाः पाचनाःसराः ॥ गुरवोरक्तपित्ताग्निकफदा बहुवर्च-सः ॥ २४५ ॥ चणकानांगुणैर्युक्ताः पर्पटाश्चण-कोद्भवाः ॥ स्नेहेविभर्जितास्तेतु भवेयुर्मध्यमागु-णैः ॥ २४६ ॥

भा०–चावलोंके पापड रुचीको करते हैं बलमें हित हैं धातुको बढाते हैं कफ वातको करते हैं वीर्यमें हित हैं पाचक हैं हलके हैं सर हैं ॥२४१॥ उडदोंकी पीठी बनाय उसमें हींग हलदी नमक जीरा साजी मिरच इन्होंको मिला ॥ २४२ ॥ आलोड़ितकर लोष्ट बना दो दिन

स्थापित करै, पीछे पत्थरपै कूट मिहीनकर बेलै ॥ २४३ ॥ सुंदर अंगारोंपे भुनेहुवे पापड़ उत्तम रोचन हैं दीपन हैं पाचन हैं रूखे हैं कछुक भारे कहे हैं ॥ २४४ ॥ उडदोंके पापड़ बलमें हित हैं रोचन हैं पाचन हैं सर हैं भारे हैं रक्तपित्त अग्नि कफ इन्होंको देते हैं बहुत विष्ठाको उपजाते हैं ॥ २४५ ॥ चनोंके पापड़ चनोंके गुणोंको करते हैं और स्नेहमें भुनेहुवे वेही पापड़ गुणोंसे मध्यम हैं ॥ २४६ ॥

मुद्गजाः पर्पटाःपथ्या ज्वरातिस्रवणामये । अरोचकच्छिदः स्निग्धा लघवो दोषनाशनाः ॥ २४७ ॥
धौतास्तु तंडुलाः शुष्काः कृत्वा पिष्टान्विनिर्हरेत् । तस्मिन्मरीचलवणे निःक्षिपेद्रामठं तथा ॥ २४८ ॥
उदके सुविपक्वं तद्गृहीत्वा तस्य पर्पटाः । कर्तव्याः सांडिकाभिख्याः पक्त्वा तैले घृतेपि वा ॥२४९॥
भक्षितास्बलदाहृद्याः कफवातविदारणाः । कृतास्तस्यैववटिकाः शुष्काश्चिकवटिसंज्ञिताः ॥ २५० ॥
घृतेतैले विपक्वाः स्युर्गुणैः पूर्वोदिता यथा । पक्वं तदेवापिष्टंहि काष्ठयंत्रे विनिःक्षिपेत् ॥ २५१ ॥ मार्दितंतेनयंत्रेण पतंत्यंगुलिसन्निभाः । शुष्कीकृत्य भक्षितास्ते रुचिदाः पीनसापहाः ॥ त्रिदोषशमनाश्चैव कुरवंज्या इति स्मृताः ॥ २५२ ॥

भा०–मूंगोंके पापड़ ज्वर आंखरोग कानरोग इन्होंमें पथ्य हैं अरुचीको नाशते हैं चिकने हैं हलके हैं दोषको नाशते हैं ॥ २४७ ॥ धोये हुये चावलोंको सुखाय पीठी बनाय उसमें मिरच नमक हींग मिलाय- ॥ २४८ ॥ उसको पकाय पानीमें डाल पापड़ बनावै तेलमें और घृतमें पकाय सांडिका बनावै ॥ २४९ ॥ ये भक्षण करे बलको देते हैं सुंदर हैं

कफ वातको नाशते हैं; उसकी करी गोली सुखाई हुई चिकवटिसंज्ञक हैं ॥२५०॥ घृतमें और तेलमें पकाये हुये पूर्वोक्तके गुणोंवाले हैं; पकाई हुई वही पीठी काठके यंत्रमें प्राप्त करै॥२५१॥उस यंत्रसे मर्दित करनेमें अंगुलीके समान गिरते हैं वे सुखाकै भक्षण करै रुचीको देते हैं पीनसको नाशते हैं त्रिदोषको शांत करते हैं. ये कुरवंडच नामक कहाते हैं॥२५२॥

लवणमरीचहिंगुश्रृंगवेरैः समुपचितोवरमाषजःसुपक्वः ॥ अतिसुरभिघृतेथवासुतैले विशतिमुखेवटकः सुपुण्यभाजाम् ॥ २५३ ॥ पवनारुचिदैन्यजयेभटकः क्षयकार्दितकंपमरुत्कटकः ॥ रसनातलरंगधरो नटकः कफपित्तविकारकरोवटकः ॥ २५४ ॥ दधिमध्येकृतश्चेत्स्यात्सएववटकःशुभः ॥ स्त्रीप्रसंगेहितोबल्यः पुंसांधातुविवर्धकः ॥ २५५ ॥ वातपीडां जयेद्रक्तपित्तश्लेष्मकरो ह्यसौ ॥ मौद्गोवटोगुरूरुच्यो वातपित्तास्रदोमतः ॥ २५६ ॥ श्लेष्मलःपुष्टिबलकृत् शुक्रलोबलदोल्पतृट् ॥ मुद्गानांवटकास्तक्रे मज्जितालघवोहिमाः ॥ संस्कारजप्रभावेणात्रिदोषशमनाहिताः ॥ २५७ ॥

भा०-नमक मिरच हींग अदरक इन्होंसे युतकिया सुंदर उड़दोंका गायके घृतमें अथवा सुंदर तेलमें पकाया बड़ा पुण्यवालोंके मुखमें प्राप्त होता है ॥ २५३ ॥ यह वात अरुची दीनपना इन्होंको जीतता है; क्षय अर्दितवात कंपवात इन्होंको काटता है; जीभमें बहुत स्वाद देता है; कफको और पित्तके विकारोंको करता है ॥ २५४ ॥ दहीमें किया वही बड़ा शुभ है स्त्रीके प्रसंगमें हित है बलमें हित है पुरुषोंके धातुको बढाता है ॥ २५५ ॥ वातकी पीड़ाको जीतता है रक्त पित्त कफको करता है. मूंगका बड़ा भारी है रुचीमें हित है वात पित्त रक्त इन्होंको देता है

॥ २५६ ॥ कफको करता है पुष्टि और बलको करता है वीर्यको देता है बल देता है अल्प तृषाको करता है तक्रमें भिगोये मूंगोंके बड़े हलके हैं शीतल हैं संस्कारके प्रभावसे त्रिदोषको नाशते हैं और हित है ॥ २५७ ॥

मंथनीनूतनाधार्याकटुतैलेनलेपिता ॥ २५८ ॥ निर्मलेनांबुनापूर्यतस्यांचूर्णविनिःक्षिपेत् ॥ राजिकाजीरलवणंहिंगुशुंठीनिशाकृतम् ॥ २५९ ॥ निःक्षिपेद्वटकांस्तत्रभांडस्यास्यंचमुद्रयेत् ॥ ततोदिनत्रयादूर्ध्वमम्लाःस्युर्वटकाध्रुवम् ॥ २६० ॥ कांजिकवटकोरुच्योवातहरः श्लेष्मकारकःशीतः ॥ दाहंशूलमजीर्णंहरते नेत्रामयेष्वहितः ॥ २६१ ॥ बाह्लीकचूर्णयुतनिर्मलतक्रपूर्णे कुंभेयथोचितयदुत्तमराजिकान्ये। पूर्वोपदिष्टकृतिनासुकृताश्चपक्वाः सिद्धाश्चतक्रकवटाहिदिनोषिताः स्युः ॥ २६२ ॥ हृद्यालघूरुचिकराःकफकारकाश्च पित्तप्रदाः शुक्रकृतोतिपौष्टिकाः॥वातापहारक्तविवर्धनाश्चध्वांसीतिनाम्नाप्रथिताश्च लोके ॥ २६३ ॥

भा०– मंथिनी नवीन धारण करनी योग्य है, कडुवा तेलसे लेपितकरी हुई हो ॥ २५८ ॥ निर्मल पानीसे पूरित कर उसमें राई जीरा नमक हींग सूंठ हलदी इन्होंका चूर्ण घाल ॥ २५९ ॥ उसमें बडोंको घालै; पात्रके मुखको खामैं पीछे तीन दिनोंसे उपरांत बडे खट्टे निश्चय हो जाते हैं ॥ २६० ॥ कांजीका बडा रुचिमें हित हैं वातको हरता है कफको करता है शीतल है दाह शूल अजीर्ण इन्होंको हरता है आंखके रोगोंमें हित नहीं है ॥ २६१ ॥ हींग निर्मल तक्र सेंधानमक राई इन्होंसे पूर्ण किये घडेमें पूर्वोक्त रीतिसे बनाये और पकाये और एक दिन धरे

हुये बडे हित हैं ॥ २६२ ॥ मनोहर हैं हलके हैं रुचीकी करते हैं कफ और पित्तको करते हैं वीर्यको करते हैं पुष्टिको करते हैं वातको नाशते हैं रक्तको बढ़ाते हैं संसारमें ध्वांसी नामसे ये बडे विख्यात हैं ॥ २६३ ॥

चणकानांपिष्टकेचसाम्येनजलमिश्रिते ॥ लवणंहिंगुमरिचंधान्यंचसहरिद्रकम् ॥ २६४ ॥ चूर्णंश्रीफलजं क्षिप्त्वलोडयित्वापचेत्ततः ॥ मंदाग्नौविधृतेभांडेयावत्तत्सांद्रतांव्रजेत् ॥ २६५ ॥ भांडादुद्धृत्यपश्चात्तदाज्याक्तेपीठकेलिपेत् ॥ चतुरस्रास्तस्यवटचस्तैले वाथघृतेपचेत् ॥ २६६ ॥ शुक्रंवीर्यंबलंकांतिं कफं पुष्टिंरुचिंतथा ॥ कुर्वंतिनाम्नावटचस्ताः कथिताःखंडिकाभिधाः ॥ मलस्तंभकरागुर्व्योवातपित्तास्रनाशनाः ॥ २६७ ॥

भा०–चनोंके चूनमें बराबर भाग पानी मिलाय उसमें नमक हींग मिरच धनियां हलदी ॥ २६४ ॥ गोला इन्होंका चूर्ण मिलाय आलोडित कर मंदअग्निसे पकाके पात्रमें घाल धरै; जब करड़ा हो जावै ॥२६५॥ तब पात्रसे निकास घृत करके चुपडा हुआ पटरापर लीपै, उसकी चौकूंटी फलोरी बनाय तेलमें अथवा घृतमें पकावै ॥ २६६ ॥ ये खंडिकनामवाली फलोरी वीर्य बल पराक्रम कांति कफ पुष्टि रुचि इन्होंको करती हैं मलको बांधती हैं भारी हैं वात पित्त रक्त इन्होंको नाशती हैं ॥ २६७ ॥

चणकानांहिधूमस्यां निशाधान्याकरामठाः २६८॥ लवणंमरिचंजीरमेकत्रपरिमर्दयेत् ॥ जलेनतस्यवटिका लघ्व्यःकार्याःप्रयत्नतः ॥२६९॥ उपस्करं च लवणं तक्रे निःक्षिप्ययत्नतः ॥ वटचोघृतेपाचिताश्च तस्मिन्तक्रेविनिःक्षिपेत् ॥ २७० ॥ तास्तुशुक्ररु-

चिस्थौल्यकांतिदावातनाशनाः ॥ कफपित्तक्षयकरा लघ्व्योमृद्व्योबलप्रदाः ॥ २७१ ॥

भा०—चनोंकी पीठीमें हलदी धनियां हींग ॥ २६८ ॥ नमक मिरच जीरा इन्होंको मिलाय पानीसे जतन कर हलके बड़े बनावै. पीछे ॥ २६९ ॥ सामग्री और नमक तक्रमें घाल उनको घृतमें पकाये बडोंको प्राप्त करै ॥ २७० ॥ ये बड़े वीर्य रुची बुढापा कांति इन्होंको देते हैं वातको नाशते हैं कफ पित्तको नाशते हैं हलके हैं कोमल हैं बलको देते हैं ॥ २७१ ॥

माषाणांधूमसीहिंगुलवणार्द्रकसंयुताः ॥ जलेननिबिडंमर्द्य कार्याःपृथुलवर्त्तयः ॥ २७२ ॥ तासांचवर्तुलंकृत्वा जलेसंस्वेदयेत्ततः ॥ गृह्णीयाद्रेष्टनीनाम्ना शुक्लाबलकारिणी ॥ २७३ ॥ गुर्वी कफकरीपाके मधुरा पित्तकोपिनी । मार्गस्थानांहितकरी वातनाशकरी स्मृता ॥ २७४ ॥ पाचिताचघृते सैवकचवल्लीति विश्रुता । गुरुर्वृष्या पुष्टिकरी बलदा तृप्तिकारिका ॥२७५॥ पित्ततेजःकफानां च कारिणी वातनाशिनी । माषपिष्टे जीरकेच लवणंहिंगुचार्द्रकम् ॥ २७६ ॥ यथायोग्यं मेलयित्वाजलेनापि विमर्द्दयेत् । तस्य लंबाकृतिः कार्या गुटिका शोभनाकृतिः ॥ २७७ ॥ दोलायंत्रेणमंदाग्नौ पाचिताश्च घृते पुनः । पाचनीयाश्चताः सर्वाः बल्याः शुक्रविवर्द्धनाः ॥२७८॥ पुष्टिदागुरवश्चैव वातारोचकनाशनाः । आर्द्दितघ्नाश्च विज्ञेया

एवं मुद्गभवा अपि ॥ लघ्व्योल्पबलदाःप्रोक्ता नाम्नामाषेंडयोमताः ॥ २७९ ॥

भा०-उड़दोंकी पीठीमें हींग नमक अदरक इन्होंको मिलाय पानीसे मर्दित कर मोटी बत्तियां बनावै ॥ २७२ ॥ उन्होंको वर्त्तुल बनाय पानीमें स्वेदित करै ये वेष्टनी नामक वीर्यको देती हैं और बलको करती हैं ॥२७३॥ भारी है कफको करती है पाकमें मधुर है पित्तको कुपित करती है मार्गमें स्थितहुओंको हित करतीहै वातको नाशने वाली कहीहै ॥ २७४ ॥ घृतमें पकाई हुई कचवल्ली नामसे विख्यात है; भारी है वीर्यको करती है पुष्टिकरती है बलदेती है तृप्ति करती है ॥ २७५ ॥ पित्त तेज कफ इन्होंको करतीहै वातको नाशती है उडदोंकी पीठीमें जीरा नमक हींग अदरक ॥ २७६ ॥ ये सब यथायोग्य मिलाय पानीसे मर्दित करै; उसकी लंबी आकृतिवाली सुंदरगोलियां बनावै ॥२७७॥ दोलायंत्रसे मंद अग्निमें पकाय फिर घृतसे पकावै; ये गोली बलमें हितहैं वीर्यको बढाती हैं ॥२७८॥ पुष्टिदेती है भारीहै वात और अरोचकको नाशतीहै और अर्दितवातको नाशती है. ऐसे मूगोंकीभी बनती है ॥ हलकी है अल्पबल देतीहै मांषेडी नामसे विख्यात है ॥ २७९ ॥

मरीचद्वितयंधान्यं शुष्कंश्रीफलबाह्लिके ॥ २८० ॥ जीरकंत्वगद्वयंचार्द्रकुस्तुंबुरुलवंगकम् ॥ एतानि तैले पक्त्वाच तस्यचूर्णससैंधवम् ॥२८१॥ पिष्टेनिःक्षिप्यचाणक्ये जलेनार्द्रं तुकारयेत् ॥ लेपनेयोग्यकं कृत्वा नागवल्यल्पकेदले ॥ २८२ ॥ तुंब्याःपत्रेथवालिप्त्वा निबिडंतस्यचोपरि ॥ पर्णद्वितीयंलिप्त्वैव ह्यंगुलीपरिमाणके ॥ २८३ ॥ घनेजातेततो वेष्टच वलिका जलसंयुते॥मुखेवस्त्रेणसंयुक्ते निःक्षिपेच्च तदोपरि ॥ २८४ ॥ अपरंसजलंपात्रं निःक्षिप्य

सुविपाचयेत्॥मंदाग्नौ चततोद्धृत्य खंडा अंगुलिसन्निभाः ॥ २८५॥ कृत्वातैलेघृतेवापि पक्वारुचिबलप्रदाः॥शुक्रस्थौल्याग्निमतिदा कांतिदा वातनाशनाः कफपित्तहरा नूनं वटिकाःपत्रिकाभिधाः ॥२८६॥

भा०—लालमिरच कालीमिरच धनियां सूकागोला हींग ॥ २८० ॥ जीरा दालचीनी कवाबचीनी अदरक नेहपाली धनियां लोंग सेंधानमक इन्होंके चूर्णको तेलमें पकाय ॥ २८१ ॥ चनाके चूनसे युतकर पानीसे गीला करै; लेपनके योग्य बना नागरपानपै ॥ २८२ ॥ अथवा तूंबीका पत्तापै लीप उसपर दूसरा पत्ताको लीप अंगुली परिमाण ॥ २८३ ॥ मोटा होनेमें वेष्टितकर वेलपानीमें युतकर मुखपर वस्त्रबांध ऊपर स्थितकरै ॥ २८४ ॥ अन्य जलसहित पात्रको धर मंद अग्निसे पकावै; पीछे अंगुली सरिखे खंडोंको लेकर ॥ २८५ ॥ तेलमें अथवा घृतमें पकावै. रुचि और बलको देतेहैं वीर्य बुढापा अग्नि इन्होंको देतेहैं कांतिको देतेहैं वातको नाशतेहैं ॥ पत्रिका नामवाले बड़े कफ पित्तको हरतेहैं ॥ २८६ ॥

त्रिंशत्कर्षघृतंतप्त्वातस्मिन्गोधूमचूर्णकम् ॥२८७॥ निस्तुषंघृतमानेनक्षिप्त्वादर्व्याविचालयेत् ॥ गृहीत्वा चसमंदुग्धमल्पमल्पंविनिःक्षिपेत् ॥ २८८ ॥ तिष्ठेतालोडयंस्तावद्यावद्रस्ताज्यदर्शनम् ॥ पक्केततः क्षिपेत्तस्मिञ्छर्करांसममानतः ॥ २८९ ॥ एलालवंगमरिचचूर्णंक्षिप्त्वाविलोडयेत् ॥क्षणेनचतदोत्तार्य सिद्धोयंभोगमोहनः ॥२९०॥ बल्योवृष्योगुरुःस्निग्धः कफकृद्धातुवर्द्धनः ॥ रसेपाकेचमधुरो वातपित्तविनाशनः ॥ २९१ ॥ गोधूमपिष्टसाम्येनघृतंन्यस्यसुभर्जयेत् ॥ शर्करांपिष्टमानेन समांततज-

लेन्यसेत् ॥ २९२ ॥ लोडयित्वाततोवस्त्रपूतांपिष्टे विनिःक्षिपेत् ॥ मंदाग्नौविपचेत्तावज्जलंपीत्वाघृतं क्षरेत् ॥ २९३ ॥

भा०-तीस तोलेभर घीको गर्म कर उसमें तुषरहित गीहूंका चून॥२८७॥ घीके समान गेर यत्नसे चलावै और बराबर भाग दूधले अल्प अल्प गेरै ॥ २८८ ॥ जबतक ग्रस्त हुआ घी दीखनें लगै तबतक आलोडित करै; जब पक जावे तब बराबर भाग बूर गेरै ॥ २८९ ॥ इलायची लौंग मिरच इन्होंका चूरण गेर आलोडित करै; क्षणभरमें उतारनेसे भोगमोहन सिद्ध होता है ॥ २९० ॥ यह बलमें हित है वीर्यको करता है भारी है चीकना है कफ करता है धातुको बढाता है रसमें और पाकमें मधुर है वातपित्तको नाशता है ॥ २९१ ॥ गेहूंका चूनमें बराबर भाग घी मिला भूनै बराबर भागकी खांडको गर्मपानीमें गेरै ॥ २९२ ॥ आलोडित कर वस्त्रसे छान उसमें सर्बतको गेरै; मंद अग्निसे तबतक पकावै जबतक पानीको पीकै घीको झिरावै ॥ २९३ ॥

शुष्कश्रीफलचूर्णमेला शुंठीमरीचनिर्बीजाः ॥ केतकिफलखंडांश्चक्षिप्त्वादर्व्याविचालयेत् कुशलः२९४ पक्त्वाचरक्ततांयातेसिद्धोयंभोगमोहनः॥ शीतकाले तुभोक्तॄणांपरःप्रोक्तः सुखावहः ॥ २९५ ॥ तप्तघृते तत्साम्येनासितंगोधूमचूर्णकम् ॥ क्षिप्त्वादर्व्यासुनिवर्त्यतत्समांक्षीरशर्कराम् ॥ २९६ ॥ गालितांशुद्धवस्त्रेण तस्मिंश्चूर्णं विनिःक्षिपेत् ॥ मंदाग्नौविपचेत्तावत्क्षीरंपीत्वाघृतंक्षरेत् ॥ २९७ ॥ पश्चाच्चंद्रमरीचैलाचूर्णंक्षिप्त्वाविलोडयेत् ॥ उत्तार्यभक्षितोवृष्यः कफकृद्धातुकृद्गुरुः ॥ २९८ ॥ पित्तवातनिहंताचचंद्रहासाभिधस्त्वयम् ॥

भा०-सूखा गोलाका चूर्ण इलायची सूंठ मिरच बेदाना केतकी फल-के टुकडे इन्होंको मिला पलटासे बुद्धिमान् चलावै ॥ २९४ ॥ पककर लाल होजावै तब भोगमोहन सिद्ध होता है. शीतकालमें भोजन करने वालोंको बहुत सुख देता है ॥ २९५ ॥ तपाहुआ घीमें बराबर भाग सुपेद गेहूंका चून मिला पलटासे चला उसके बराबर दूध और खांड लेकै ॥ २९६ ॥ शुद्ध वस्त्रसे छान मिलावै; मंद अग्निसे तबतक पकावै जबतक दूधको पीकै घी झिरावै ॥ २९७ ॥ पीछे कपूर मिरच इलायची इन्होंका चूर्ण मिलाय लोडित करै; उतारकै भक्षित करा वीर्यमें हित है कफको करता है धातुवोंको करता है भारी है ॥ २९८ ॥ पित्त वातको नाशता है. यह चंद्रहास नामक है ॥

गोधूमचूर्णसूक्ष्मंचस्वच्छंतस्मिन्घृतंक्षिपेत्॥२९९॥ यावत्तत्पिडतांगच्छेत्पश्चाद्दुग्धे विमर्दयेत् ॥ फेलयित्वाद्रवीभूतेततः पात्रे घृतं न्यसेत् ॥ ३०० ॥ सशब्देतु घृते तप्ते तस्यधारामपासृजेत् ॥ यावच्च व्याप्यतत्पात्रं प्रसरेद्घृतपूरकः ॥ ३०१ ॥ यत्किंचित्ताम्रतां याते खंडपंके निमज्जयेत् ॥ सवृष्यो गुरुर्हृद्यश्चबलकृद्धातुवर्द्धनः ॥३०२॥ कफासृङ्मांसलकरो वातपित्तक्षयं हरेत् ॥ नारिकेलफलं चार्द्रं सूक्ष्मंयत्नेनकर्त्तयेत् ॥ ३०३ ॥ सूक्ष्मगोधूमचूर्णं तु शर्करामिश्रितेन्यसेत् । दुग्धे संमर्द्य प्राग्वच्च कारयेद्घृतपूरकम् ॥ ३०४ ॥

भा०-गेहूंका मिहीन चूनमें घी मिलावै ॥ २९९ ॥ जबतक वह गोलपनाको प्राप्त हो पीछे दूधमें मर्दित करै जब पतला होजाय तब

फैलाय कर पीछे पात्रमें घृत घाले ॥ ३०० ॥ वह घृत गर्म होके शब्द करने लगै तब उसकी धार छोडै; जबतक फैल उस पात्रमें फैले ॥३०१॥ जब कुछक ललाईको प्राप्त हो तब खांडके पाकमें डबोवे; घृतपूरक अर्थात् घेवर स्त्रीसंगमें हित है भारी है सुंदर है बलको करता है धातुको बढाता है ॥३०२॥ कफ रक्त बुढापा इन्होंको करता है वात पित्तको नाशता है गीला गोलाको जतनसे मिहीन कतरै ॥ ३०३ ॥ मिहीन गेहूंका चून खांडमें मिलाय दूधमें मर्दितकर पहलेकी तरह घृतपूरकको बनावे ॥ ३०४ ॥

अर्धेविपक्केपयसितंडुलजं वस्त्रगालितंचूर्णम् ॥ संमर्द्य शर्करयादुग्धेनास्यापिपूरकःप्राग्वत् ॥३०५॥ साध्यःसुधियायत्नादुक्तश्चायंचशालिघृतपूरः ॥ दुग्धंबहुशःपक्त्वातस्मादुत्तार्यपिष्टिकांसकणाम् ॥३०६॥ शर्करयासंमिश्रांमंदेग्नौ साधयेद्घृतेचाल्पे ॥ प्राग्वत् सुधियायत्नान्नाम्नाचायंचदुग्धघृतपूरः ॥ ३०७ ॥ उच्छोषयित्वापयसश्चूर्णंपिष्टंकसेरुकम् ॥ सशर्करं विनिःक्षिप्य मर्दयेद्वटकांस्तथा ॥ कृत्वाघृते सुविपचेत्कसेरुघृतपूरकः ॥ ३०८ ॥

भा०-आधा पका हुआ दूधमें कपड़ासे छान चावलोंका चून मिलाय खांड और दूधसे मर्दित करै तो इसका भी पहलेकी तरह घेवर बनता है ॥ ३०५ ॥ बुद्धिमान् जतनसे उसको सिद्ध करै. यह शालिघृतपूर कहा है. दूधको बहुत बार पकाकर उसका खोहा उतार ॥ ३०६ ॥ खांड मिलाय अल्पघीमें मंद अग्निमें बुद्धिमान् पहलेकी तरह साधै. यह दुग्धघृतपूरक है॥३०७॥दूधको सुखाके उसमें कसेरूका चून और खांड मिलाय मर्दितकर वटक बनाय ॥ घृतमें पकावै येह कसेरूघृतपूरक है ॥३०८ ॥

पक्काम्रस्यरसेघृतेन विपचेन्मंदानले यत्नतो याव-
त्स्यात्सुघनस्तथा पुनरयं पाच्यः सितापंकके ॥ सं-
जातं सुघने ततः पृथुतरे विस्तीर्णपात्रेतुतंसंलिंपेत्तु
यथांगुलं घनतरं तं खंडशः कर्त्तयेत् ॥ ३०९ ॥
सोयंचाम्ररसोद्भवो घृतपुरो हृद्यो गुरुर्दीपको रुच्यः
पित्तमरुत्प्रणाशनकरो बल्योऽतिवृष्यो भवेत् ॥
एवंचान्यपदार्थजो घृतपुरस्तत्तद्गुणैरन्वितो भी-
मेन प्रियभोजनेनचपुराकृष्णार्थमुत्पादितः॥३१०॥
गोधूमसूक्ष्मपिष्टं गुडेनयुक्तंजलेन संमृदितम् ॥ त-
द्गोल्यो वर्त्तुलनिभा घृते विपक्वाभवंतिचापूपाः३११॥

भा०-पका हुआ आंबके रसको घृतमें मंद अग्निमें यत्नसे पकावै जबतक सुंदर करडा हो तब मिश्रीकी चासनीमें पकावै फिर करड़ा हो जा तब बहुत मोटा और चौड़ा पात्रमें अंगुल ऊंचा लीपै जब करडा हो जा तब टुकड़े बनावे ॥ ३०९ ॥ यह आंबका रससे उपजा घेवर सुंदर है भारी है दीपन है रुचीमें हित है पित्त वातको नाशता है बलमें हित है स्त्रीसंगमें अत्यंत हित है; ऐसेही अन्य पदार्थसे बना घेवर भी तिस तिस गुणसे युत है; प्रिय है भोजन जिसको ऐसा भीमसेनने पहलें कृष्णके लियें बनायाहै ॥ ३१० ॥ गेहूंका मिहीन चूनको गुड़ और पानीसे मर्द्दितकर गोल गोल घृतमें फैलाय पकावै; वे अपूप अर्थात् मालपूवे बनते हैं ॥ ३११ ॥

बल्याहृद्यारुचिदागुरवो वृष्याश्चतुष्टिदाःप्रोक्ताः ॥
पित्तानिलशमनकरामधुरा प्रोक्ताश्चसूरिभिःकुश-
लैः ॥ ३१२ ॥ प्रक्षाल्यतंडुलांश्चत्रिः शोषयित्वाच
पेषयेत ॥ तत्पिष्टंचघृतेनाशु किंचिज्ज्वालपगुडोद-

कैः ॥ ३१३ ॥ मर्दयित्वाचवटकान् कृत्वातेपोस्त बीजकैः ॥ एकतोलेडयित्वाच तान्घृतेनपचेत्त-तः ॥ ३१४ ॥ शालिपूपास्तुतेसिद्धाः शीतावृष्या रुचिप्रदाः ॥ स्निग्धातीसारशमना नाम्नानारस-संज्ञिताः ॥ ३१५ ॥

भा०–मालपूगो बलमें हित हैं सुंदर हैं रुचिको देते हैं भारे हैं स्त्री-संगमें हित हैं तुष्टिको देनेवाले कहे है पित्तवातको शांत करते है मधुर है ऐसे कुशल वैद्योंने कहा है ॥ ३१२ ॥ चावलोंको धोकै सुखाय पिसावै उसमें घृत और कछुक गुडका शर्बत मिलाय ॥ ३१३ ॥ मर्दित कर पोस्तबीज मिला बडे कर घृतसे पकावै ॥ ३१४ ॥ येशालिपूप शीत-ल है स्त्रीसंगमें हित है रुचीको देते हैं चीकने हैं अतीसारको शांत करते हैं नारस नामसे विख्यात हैं ॥ ३१५ ॥

गोधूमचूर्णंक्षिप्त्वाज्यंजलेनार्द्रंविमर्दयेत् ॥ मृदोस्त-स्मात्संप्रगृह्यतुल्यांक्रमुकपीलुना ॥ ३१६ ॥ कृत्वा पर्पटिकांतस्यशर्कराचूर्णगर्भिताम् ॥ गुटींबद्ध्वापि-धायास्यं वेल्लयेत्पूर्णपीठके ॥ ३१७ ॥ पर्पटेनसमां कृत्वाघृते सुविपचेत्ततः ॥ सागुडोरिर्गुरुर्वृष्याशुक्र-लावातपित्तनुत् ॥ ३१८ ॥ एतादृशीगुडस्यापिभ-वतीतिसुनिश्चितम् ॥ तंडुलानांसमितांतुदध्नासंमर्द्य कारयेत् ॥ ३१९ ॥

भा०–गीहूंका चूनमें घी मिलाय पानीसे गीलाकर मर्दित करै उस-कोमल कियामांहसे सुपारीके प्रमाण लेकै ॥ ३१६ ॥ पापडीवेल उसमें खांड देकै गोली बनाय मुखको बंधकर चकलापर बेलै ॥ ३१७॥

पापडके समान बेल घीमें पकावै; वह गुडोरी भारी है स्त्रीसंगमें हित है वीर्यको करती है वातपित्तको नाशती है ॥ ३१८ ॥ ऐसेही गुडकीभी बनती है यह निश्चय है. चावलोंके चूनमें बराबर भाग दही मिलाय मर्दित करै ॥ ३१९ ॥

वटकान्वर्तुलाकारान् घृतेपक्त्वापचेत्ततः॥ मज्जये-च्छर्करापंके तेवृष्याधातुवर्धकाः॥३२०॥ रुचिदावा-तपित्तघ्नाग्निमांद्यकफपुष्टिदाः ॥ गोधूमानांसूक्ष्म-पिष्टंघृतभ्रष्टं सितायुतम् ॥ ३२१ ॥ तस्मिंश्चूर्णे क्षिपेदेलालवंगंमरिचानिच ॥ नालिकेरंसकर्पूरंचारि-बीजानिमिश्रयेत् ॥३२२॥ दुग्धेनधूमसींमर्द्यतस्याः पर्पटिकासुच ॥ तत्पूरणंतुनिःक्षिप्यकुर्यान्मुद्रां दृढांसुधीः ॥ ३२३ ॥

भा०-गोल बडे बना पीछे घृतमें पकाके खांडकी पातमें डबोवै वे स्त्रीसंगमें हितहै धातुको बढाते हैं ॥ ३२० ॥ रुचिको देते हैं वातपित्तको नाशते हैं मंदाग्नि कफ पुष्टि इन्होंको देते हैं गीहुवोंका मिहिन चून ले घीमें भून मिश्रीसे युत करै ॥३२१॥ उसमें इलायची लोंग मिरच गोला कपूर चिरोंजी ये मिलाय ॥ ३२२ ॥ दूधसे पीठीको मर्दित कर उसकी पाप-डियोंमें पूरित कर मुखको अच्छी तरह बुद्धिमान् बंध करै ॥ ३२३ ॥

सर्पिषिप्रचुरेतांतु पचेन्निपुणयुक्तितः ॥ पश्चाच्चशर्क-रापाके निःक्षिप्यचसमुद्धरेत् ॥ ३२४ ॥ प्रकारज्ञैः प्रकारोयं संयावइतिकीर्तितः ॥ धातुवृद्धिकरोवृष्यो हृद्यश्चमधुरोगुरुः ॥ सारकोभग्नसंधानकारकः पित्तवातहृत् ॥३२५॥ गोधूमप्रस्थद्वितयस्यकृत्वा सूक्ष्माःकणाः प्रस्थमिताःसुनिस्तुषाः ॥ दुग्धेनक्लि

न्नास्तुतथैव भाण्डेयावत्सदम्लत्वमुपेयुरीषत्३२६॥

भा०-बहुतसा घीमें उसको कुशल वैद्यकी युक्तिसे पकावै पीछे खांड-की पातगेरकै निकासै ॥ ३२४ ॥ प्रकार जानने वालोंने यह प्रकार संयाव नामसे कहा; यह धातुको बढाता है स्त्रीसंगमें हित है सुंदर है मधुर है भारी है दस्तावर है टूटेकी जोडनेवाला है पित्तवातको हरता है ॥ ३२५ ॥ गीहूं १२८ तोलेभर ले उन्हों मांहसे तुषसे रहित ६४ तोले भरकी मिहीन किणके बनाके पात्रमें घाल धरै जबतक कछुक खट्टापनको प्राप्त होवै ॥ ३२६ ॥

उद्धृत्यदुग्धेनद्रवं सुघृष्य सच्छिद्रपात्रेणचश्रीफल-स्य ॥ धारां घृते कुंडलिकाकृतिंसृजन्पचेत्तदोद्धृत्त्य सुशर्करायाः ॥ ३२७ ॥ पाके निमज्जतामाहुः सर्वे कुंडलिकाभिधाम् । साशुक्रलाहृद्यवृष्या इंद्रियाणां सुतृप्तिदा ॥ ३२८ ॥ पुष्टिकांतिकरी बल्याद्वितीयास्या कृतिर्मता ॥ युक्तं घृतेन गोधूमपिष्टमार्द्रं तदंभसा ॥ ३२९ ॥ पिंडिकास्तस्यनिःक्षेप्या याव-दम्लत्वमाप्नुयुः ॥ उद्धृत्यपयसार्द्रंतद्युक्त्यापूर्वोक्त-यापचेत् ॥ ३३० ॥

भा०-तब पात्रसे निकास दूधसे पतली बनाय नारीयलके पात्रमें छिद्र कर घृतमें कुंडलिका सरीखी धार छोडकर पकावै; उस्से निकास खांडके ॥ ३२७ ॥ पाकमें डबोवै ये जलेबी कहाती है; सुंदर है स्त्रीसं-गमें हित है इंद्रियोंको तृप्ति करती है ॥ ३२८ ॥ पुष्टि और कांतिको करती है बलमें हित है इसीकी आकृति दूसरी मानी है. गेहूंके चूनमें घी मिला पानीसे गीलाकर ॥ ३२९ ॥ पिंडी बनाय पात्रमें घाल धरै जब-

तक खट्टापनाको प्राप्त हो पीछे निकास दूधसे गीलीकर पूर्वोक्तरीतिसे पकावै ॥ ३३० ॥

नूतनंघृतमानीय तस्यांतः कुशलोजनः । प्रस्थार्धपरिमाणेनदध्नालिप्तेनलेपयेत् ॥ ३३१ ॥ द्विप्रस्थां संमितांतत्रदध्यम्लं प्रस्थसंमितम् घृतमर्धशरावंच घोलयित्वा घेट क्षिपेत् ॥ ३३२ ॥ आतपे स्थापयेत्तावद्यावद्याति तदम्लताम् । ततस्तत्प्रक्षिपेत्पात्रे सच्छिद्रे भाजने तु तत् ॥ ३३३ ॥ परिभ्राम्यपरिभ्राम्यतत्संतप्ते घृतेक्षिपेत् । पुनः पुनस्तदावृत्त्या विदध्यान्मंडलाकृतिम् ॥ ३३४ ॥

भा०—नया घट लाकै उसके भीतर कुशल मनुष्य २८ तोलेभर दहीका लेप करै ॥ ३३१ ॥ तहां गीहूंकी मैदा १२८ तोले दही ६४ तोले घी १०२४तो० इन्होंको घोलकर घटमें घालै ॥ ३३२ ॥ घाममें तबतक स्थित रक्खै जबतक वह खट्टापनाको प्राप्त हो; पीछे उस मांहसे छिद्रसहित पात्रमें घाल ॥ ३३३ ॥ भ्रमा भ्रमाकर तपायाहुआ घृतमें छोडै फिर फिर उसकी आवृत्ति कर मंडलकी आकृति सरीखी बनावै ॥ ३३४ ॥

तांसुपक्कांघृतान्नीत्वा सितापाकेतनुद्रवे ॥ कर्पूरादिसुगंधेच मज्जयित्वोद्धरेत्ततः ॥ ३३५ ॥ एषाकुंडलिनीनाम्ना पुष्टिकांतिबलप्रदा ॥ धातुवृद्धिकरीवृष्या रुच्याचेंद्रियतर्पणी ॥ ३३६ ॥ षष्टिकानांच शालीनां पिष्टंत्र्यंशंचशर्कराम् ॥ किंचिद्दध्नाचसंमर्द्य द्वितीयेदिवसेततः ॥ ३३७ ॥ वर्तुलान्वटकान्

कृत्वा घृतेपक्त्वाप्रयत्नतः॥तेतिशीताश्चहृद्याश्च बल-
पुष्टिकरामताः ॥ ३३८ ॥ कफवातप्रहर्तारो नाम्ना
चेंदुरसाभिधाः ॥

भा०-उस पकीहुईको घीसे निकास मिश्रीकी पतली पातमें जो कपूर आदिसे सुगंधित करीहो उसमें डबोकर निकासै ॥ ३३५ ॥ यह कुंड-लिनी नामवाली जलेबी स्त्रीसंगमें हितहै ॥ ३३६ ॥ सांठी चावलों-का चूनमें तीसरा भाग खांडमिला कछुक दहीसे मर्दितकर पीछे दूसरा दिनमें ॥ ३३७ ॥ गोलबड़े बनाय जतनसे घीमें पकावै; वे अत्यंत शीतल हैं सुंदर हैं बल और पुष्टि करते हैं ॥ ३३८ ॥ कफ और वातको हरते हैं इंदुरस नामवाले मालपूगो हैं ॥

चणकानांसूक्ष्मपिष्टंषोडशांशंचशालिजम् ॥३३९॥
स्नेहनार्थेघृतंदेयं यावत्पिण्डत्वमाप्नुयात् ॥ पश्चाज्ज-
लेनसंप्लाव्य यावत्स्याच्चतनूद्भवम् ॥३४०॥ अनेक-
च्छिद्रभांडात्तु घृतेतप्तेतुपातयेत् ॥ पश्चान्निष्कास-
येद्यत्नाद्भांडेचविततेन्यसेत् ॥ ३४१ ॥ कर्पूरैलादि-
युक्तंतु शर्करापंकमावपेत् ॥ दर्व्यासंचाल्यबहुशः
सत्युष्णेचविवर्धयेत् ॥ ३४२ ॥ लड्डूकान्बिल्वतु-
ल्यांस्तु तेवृष्याधातुवर्धकाः ॥ शीतलालघवोरूक्षा
मधुरास्तृप्तिकारकाः ॥ त्रिदोषघ्नाःस्मृताः पूर्वैश्चापू-
र्वाबिंदुमोदकाः ॥ ३४३ ॥

भा०-चनोंका मिहीन चून इससे सोलहमां हिस्सा शालिचावलोंका चून॥ ३३९॥ जबतक गोलाबनै तबतक घी मिलाता रहै पीछे पानीसे युतकर बहुत पतला बनावै॥ ३४०॥ पीछे बहुत छिद्रोंवाला झारनासे तपाया घीमें

झारै पीछे जतनसे निकास चौडा पात्रमें घालै ॥ ३४१ ॥ पीछे कपूर और इलायची आदिसे युतकरी खांडकी पातमें छोड पलटासे बहुत चलावै ॥ ३४२ ॥ पीछे गर्म गर्म लड्डू बेलफलके प्रमाण बांधै; वे बूंदीके लाडू स्त्रीसंगमें हितहैं धातुवोंको बढातेहैं शीतल हैं हलके हैं रूखे हैं मधुर हैं तृप्ति करते हैं; त्रिदोषको नाशते हैं; पंडितोंने बहुत सुंदर बिन्दुमोदक कहेहैं ॥ ३४३ ॥

मुद्गानांवाथमाषाणां स्थूलंपिष्टंसमाहरेत् ॥ तत्समानेघृतेपक्त्वा किंचिदारक्ततांगते ॥३४४ ॥ मध्येमध्येतुदुग्धस्य सेकंकिंचित्प्रकारयेत् ॥ कणाकारे चसंजाते ततउत्तार्य्यमेलयेत् ॥ ३४५ ॥ द्विगुणां शर्करामेलां पिस्तंवादामकंतथा ॥ मरिचंदेवकुसुमं यत्किंचिच्चघृतंक्षिपेत् ॥ ३४६ ॥ बध्नीयाल्लड्डुकांस्तस्य तेशीतालघवःस्मृताः ॥ वातपित्तप्रशमना माषाणांगुरवोमताः ॥ ३४७ ॥ उष्णाःस्निग्धाश्चवृष्याश्च तृप्तिदावातनाशनाः ॥ एवंरीत्याप्रकर्तव्या श्चणकानांचतद्गुणाः ॥ ३४८ ॥

भा०–मूंगोंका अथवा उडदोंका मोटा चून ले उसको बराबर भाग घीमें पकावै जब कछुक लाल होजावै ॥ ३४४ ॥ और गीहूंके सरीखा होजावै तब उतार ॥ ३४५ ॥ दूनीखांड इलायची पिस्ते बदाम मिरच लौंग कछुक घी ये मिलाकै ॥ ३४६ ॥ उसके लाडू बांधे; वे शीतल हैं हलके कहेहै बात पित्तको शांतकरते हैं उडदोंके लाडू भारे माने हैं ॥३४७॥ गर्म हैं चिकने हैं स्त्रीसंगमें हितहैं तृप्तिदेते हैं वातको नाशते हैं; ऐसा प्रकार रीति करकै चनोंके बनाये लाडू तैसेही गुणोंवालेहैं ॥ ३४८ ॥

गोधूमचूर्णंनिःक्षिप्यवसुभागेनवैघृतम् ॥ पाणिभ्यां

घर्षयेत्पश्चाज्जलेनार्द्रंविमर्दयेत् ॥ ३४९ ॥ याव-
न्मुष्टिकतांयायादथमुष्टीर्घृतेपचेत् ॥ पक्कानांचूर्ण-
कंकृत्वातस्मिन्बादामशर्करे ॥ ३५० ॥ पोस्तबीज-
मरीचैलाचूर्णान्निक्षिप्त्वाघृतेनच ॥ वर्तुलालड्डुकाः
कार्याः प्रोक्तास्तेचूर्णकाभिधाः ॥३५१॥ अपरोवि-
धिः सुदृष्टो गोधूमानांविचूरणेनसमम् ॥ सूक्ष्मंपिष्टं
योज्यंतस्याष्टांशेनगोघृतंदेयम् ॥ ३५२ ॥ पयसार्द्रं
विमर्द्याथपूरिकास्तस्यकारयेत् ॥ घृतेपक्त्वाविगृ-
ह्यैषांचूर्णंहस्तेनकारयेत् ॥ ३५३ ॥

भा०–गेहूंका चूनमें आठमां भाग घी मिला दोनों हाथोंसे मलै पीछै पानीसे गीला कर मलै ॥३४९॥ जब मला जावै तब मुठिये बनाय उन्होंको घीमें पकावै पके हुओंका चूर्ण बना उसमें बदाम खांड ॥ ३५०॥ पोस्तके दाने मिरच इलायची इन्होंके चूर्ण मिला घी गेरकर गोल लाडू बनावै; ये चूर्णक नाम वाले कहाते हैं ॥ ३५१ ॥ अन्य विधि देखाहै गेहूवांका चूनके समान मिहीन पीठी मिलावै उससे आठमां हिस्सा गायका घी देना ॥ ३५२॥ दूधसे गीला बना और मलकर उसकी पूरियां बनाकै घीमें पकाकै हाथसे चूर्ण करै ॥ ३५३ ॥

ततः कणान्शर्करयाघृतनिर्बीजसंयुतान् ॥ बादाम-
खर्जूरफलसूक्ष्माश्रीफलखंडकाः ॥ ३५४ ॥ मरीचै-
लादयः पिष्टाचूर्णंनिःक्षिप्यलड्डुकाः ॥ पूर्वोक्ताः गुर-
वः स्निग्धाः सारकाः शीतलामताः ॥ ३५५ ॥ अ-
ग्निमांद्यंकफंवीर्यं कृत्वापित्तंनुदंत्युत ॥ मत्स्योर्ध्वा-
स्थीनिनिर्हृत्यकृत्वाखंडानितक्रतः ॥ ३५६ ॥ प्र-

क्षाल्यकंटकानुद्धृत्यपुनस्तक्रेणमर्दयेत् ॥ तक्रेणैक-त्वमापन्नेवस्त्रेणचविशोधयेत् ॥ ३५७ ॥ सुपक्वा-न्पद्मकंदान्संमर्द्यकल्कंतुकारयेत् ॥ दृषदाचपुनःपि-ष्ट्वासूक्ष्मसूत्राणिकारयेत् ॥ ३५८ ॥ खंडानिपक्त्वा सुघृते सितापंकेनमेलयेत् ॥

भा०-पीछे किणकोको खांड बेदाना बदाम खिजूरफल गोलाके मी-हीन कतरे ॥ ३५४ ॥ मिरच इलायची इन आदिको पीस चूर्ण मिलाय लाडू बांधै; ये लाडू भारे हैं चीकने हैं सारक हैं शीतल माने हैं ॥ ३५५॥ मंदाग्नि कफ वीर्य इन्होंको करतेहैं पित्तको नाशते हैं. मछलियोंके ऊपरली हड्डियोंको दूर कर टुकडे बनाय तक्रसे॥ ३५६॥धोकै कांटे दूर कर फिर तक्रसे मर्दित करै तक्रमें मिल जावे तब वस्त्रसे शोधै ॥ ३५७ ॥ सुंदरपके हुये कमलकंदोंको मर्दित कर कल्क करै फिर पत्थरसे पीस मिहीन सूत्र करावै ॥ ३५८ ॥ सुंदर घृतमें टुकडोंको पकाके मिश्रीकी चासनीमें घोलै ॥

कृता हि लड्डुकावल्या गुरवः कफकारकाः॥३५९॥

वृष्यावातनुदः किंचित् प्रदिष्टाःपित्तकोपनाः॥ एव-मेवसुपक्वस्य मांसस्यान्यस्य लड्डुकाः ॥ ३६० ॥ विनिर्मिताः गुणं कुर्युस्तत्तन्मांसेन सन्निभम्॥ निर्ज-लं दधि संगृह्य वस्त्रेबद्ध्वाच शोषयेत् ॥ ३६१ ॥ तत्समानं तंडुलानां पिष्टं किंचिच्च सैंधवम् । निक्षि-प्यमर्दनंकृत्वा तस्यबद्ध्वाथ लड्डुकान् ॥३६२॥ घृते संपाच्ययत्नेन शर्करापंक आवपेत् । तवल्या रुचि-दावृष्या धातुवृद्धिकराः प्रियाः ॥३६३॥ वातपित्त-

तृषादाहनाशना दधिलड्डुकाः ॥ भूमुद्गकूष्मांडका-
दिबीजानिनिस्तुषाणिवै ॥ ३६४ ॥

भा०-बांधे लाडू बलमें हित हैं भारे हैं कफको करते हैं॥ ३५९॥स्त्री-संगमें हित हैं वातको नाशते हैं पित्तको कछुक कुपित करते हैं; ऐसेही सुंदर पका हुवा अन्य मांसकेभी लाडू ॥ ३६० ॥ बनाये तिस तिस मांसके समान गुण करते हैं. पानीसे रहित दहीको लेकर कपडामें शोषित करै ॥ ३६१ ॥ उसके समान चावलोंका चून और कछुक सेंधानमक मिला मर्दन कर लाडू बांधै ॥ ३६२ ॥ जतनसे घृतमें पकाय खांडकी चासनीमें प्राप्त करै; ये लाडू स्त्रीसंगमें हित हैं बलमें हित हैं धातुवोंको बढाते हैं प्रिय हैं ॥ ३६३ ॥ वात पित्त तृषा इन्होंको नाशते हैं; ये दधि लाडु नामसे विख्यात हैं; मूंग कोहला इन आदिके तुषसे रहित बीज लेवै ॥ ३६४ ॥

घृतेकिंचिद्भर्जयित्वा शर्करापंकआवपेत् ॥ संघोल्य
लड्डुकान्कृत्वा भक्ष्यास्तेगुरवो मताः॥ ३६५ ॥
वृष्याःशीताःस्थौल्यकराः कफशुक्रबलप्रदाः ॥
वातपित्तहरावर्ण्या रक्तदोषहराःस्मृताः ॥ ३६६ ॥
बीजलड्डुकनाम्नावै प्रसिद्धामधुराःस्मृताः ॥ पद्म-
कंदान्निस्त्वचश्च गृहीत्वा चैव पाचयेत् ॥ ३६७ ॥
युक्तितस्तस्यपिष्टंच कृत्वासूत्राणिकारयेत् ॥ घृते
तानिविनिष्पच्य शर्करापंकआवपेत् ॥ ३६८ ॥
घोलयित्वाचतेषांतु लड्डुकान्कारयेत्सुधीः॥ तेरू-
क्षादुर्जराःकिंचित्तुवराःशूलहारकाः मलावष्टंभकाः-
शीताः श्लेष्मपित्तविनाशकाः ॥ ३६९ ॥

भा०-घीमें कछुक भूनकर खांडकी चासनीमें डबोवै घोलकर लाडू बनावै; ये खाने योग्य हैं भारा माने हैं ॥ ३६५॥ स्त्रीसंगमें हित हैं शीतल हैं स्थूल करते हैं कफ वीर्य बल इन्होंको देते हैं वात पित्तको हरतेहैं वर्णमें हितहैं रक्त दोष हरनें वाले कहेहैं ॥ ३६६॥ ये बीजलड्डुक नामसे प्रसिद्ध हैं मधुर कहेहैं. कमलकंदोंकी छाल दूरकर पकावै॥ ३६७॥ युक्तिसे उसकी पीठीबना सूत्रकरै उन्होंको घीमें पकाके खांडकी चासनीमें पकावै॥ ३६८॥ घोलकर बुद्धिमान् लाडू बनावै; रूखेहैं दुर्जर हैं कछुक कषैले हैं शूलको नाशते हैं मलको अवष्टंभ करते हैं शीतल हैं कफ पित्तको नाशते है॥ ३६९॥

कसेर्वंशांघ्रकूष्मांडशृंगाटकमलाक्षकैः ॥ ३७० ॥ एवंकदलकार्द्रादिलड्डुकाद्रव्यवद्गुणाः ॥ कुर्यात्सं-मितयातावत्तन्वींपर्पटिकांततः ॥ ३७१ ॥ तस्या-श्चोर्द्ध्वघृतंदेयं द्विगुणांकारयेत्ततः ॥ अनेनैवविधाने-न पुनःकार्याचतुर्गुणा ॥ ३७२ ॥ पुनःप्रवेल्यतन्वीं तां भर्जयेत्पूर्ववत्ततः ॥ बहुपत्रापोलिकासा गुणा-स्तस्यास्तुमंडवत् ॥ ३७३ ॥ कुर्यात्संमितयातीव तन्वींपर्पटिकांततः ॥ स्वेदयेत्ततकेतांतु पोलिकांज-गदुर्बुधाः ॥ ३७४ ॥

भा०-कसेरू जमीकंद कोहला शिंघाडा कमलाक्ष॥ ३७०॥इन्होंके लाडू बनते हैं; इसी प्रकार केला अदरक आदिके लाडू द्रव्यके समान गुणवा-ले हैं; गीहूंकी मैदाकी पतली पापड़ी करावै ॥ ३७१॥ उसके ऊपर घी देवै पीछे उसको दुगुनी करै इसी विधानसे फिर चौगुनी करै ॥ ३७२ ॥ फिर छोटी वेलकर पहलेकी तरह भूनै. यह बहुपत्रा पोली बनती है; इसके गुण मांडकी तरह है ॥ ३७३ ॥ गीहूंकी मैदाकी छोटी पापडी बना उसको गर्मतवापै स्वेदित करै उसको भी पंडित पोलिका कहते हैं ॥ ३६७ ॥

तांखादेल्लप्सिकायुक्तां स्युस्तस्या मंडवद्गुणाः॥ गोधूमपोलिकाबल्याकफकृद्वातनुद्गुरुः ॥ ३७५ ॥ शुक्रलामधुरापाके पित्तघ्नी बृंहणी सरा । गोधूमानां सिते सूक्ष्मे पिष्टेऽष्टांशं घृतं क्षिपेत्॥ ३७६ ॥ किंचिदुदकमासिच्य शुष्कं शुष्कं विमर्दयेत्। गृहीत्वातुगुटींतस्मिन् समांनिकुचपीलुना ॥ ३७७ ॥ तलहस्तेनसदृशीं पर्पटीं कारयेत्ततः। हरिमंथकचूर्णस्य गुटींतस्यां निधायच ॥ ३७८ ॥ मुखं पिधायपिठके वर्द्धयेद्वेल्यसूक्ष्मिकाम् । पूर्णेनसमतां यातां भजेंदायसपात्रके ॥ ३७९ ॥

भा०-उस पोलीको लापससि युत कर खावै; उसके गुण मांडकी तरह है. गीहूंकी पोली बलमें हित है कफको करती है वातको दूर करती है भारी है॥ ३७५॥वीर्यको करती है पाकमें मधुर है पित्तको नाशतीहै धातुको बढाती है. सर है सुपेद गेहुवोंको मिहीन पीस चूनमें आठमां हिस्सा घृत मिलावै ॥ ३७६ ॥ कछुक कछुक पानी देकै सुखा सुखा मर्दित करै उस मांडसे गोली लेकै ॥ ३७७ ॥ हाथके तलके समान पापड़ी करै उसमें चनोंका चूनकी पीठी देकै ॥ ३७८ ॥ मुखको ढकि चकलापर बेल सूक्ष्म बढा तवापर भूनै ॥ ३७९ ॥

सापूर्णगर्भानिर्दिष्टालघ्वीस्वाद्वीसुशीतला ॥ अग्निमांद्यकरीप्रोक्ताक्षयस्यसुविनाशिनी ॥ ३८० ॥ चतुर्गुणेजलेदालींचणकानांविपाचयेत् ॥ ततोजलंच निःशेषं शोषयित्वा च यत्नतः ॥ ३८१॥ सार्द्धभागो गुडोदेयश्चोष्णायांशर्करापिवा ॥ पाषाणपट्टिका-

यांचपेषयेत्तत्तुपूरणम् ॥ ३८२ ॥ गोधूमानांसूक्ष्मचूर्णंद्विगुणेचजलेपचेत् ॥ मंदाग्नौततउद्धृत्यसार्द्धमानेनशर्कराम् ॥ ३८३ ॥ गुडंवादेवकुसुमैलाचूर्णंच विनिःक्षिपेत् ॥ दर्व्याचैकत्वमापाद्यसम्मितांचसुशोधिताम् ॥ ३८४ ॥ मोहनंक्षिप्यसंमर्द्यपर्पटींतस्य कारयेत् ॥ तस्यांतत्पूरणंन्यस्य वेल्लयेच्चसुविस्तृताम् ॥ ३८५ ॥

भा०–वह पूर्णगर्भा कही है हलकी है स्वाद है सुंदर शीतल है अग्नीको मंद करती है क्षयको नाशती है ॥ ३८० ॥ चौगुना पानीमें चनोंकी दाल पकावै जब पानी जल जावै तब जतनसे दालको सुखाय ॥ ३८१ ॥ डेढ भाग गुड अथवा गर्ममें खांड देनी पीछे पत्थरकी चाकीसे पीसै; वह पूरण है ॥ ३८२ ॥ गीहूंका मिहीन चून ले दुगुना पानीमें मंदाग्निसे पकावे उस्से निकास डेढ भाग खांड मिलावै ॥ ३८३॥ अथवा गुड मिलावै लौंग इलायची इन्होंका चूर्ण मिलावै कडछीसे मिलाय शोधी हुई मैदा मिलाय॥ ३८४॥ आठमां हिस्सा मोण घाल उसकी पापडी करावै उसमें पूर्वोक्त पूरण घाल सुंदर विस्तृत बेलै ॥ ३८५ ॥

कृत्वाविभर्जयेत्पश्चात्तैलेवाथघृतेपचेत् ॥ शुष्कगोधूमचूर्णंतु सांबुगाढंविमर्दयेत् ॥ ३८६ ॥ विधाय वटकाकारान्निर्धूमेग्नौ शनैःपचेत् ॥ अंगारकर्कटी ह्येषा बृंहणीशुक्रलालघुः ॥ ३८७ ॥ दीपनीकफहृद्बल्या पीनसश्वासकासजित् ॥ शुष्कगोधूमचूर्णानां तेष्वेवचसुवर्धिता ॥ ३८८ ॥ पोलिकाततकेभ्रष्टा भूयोंगारेषुवर्तयेत् ॥ सिद्धैषारोटिकाप्रोक्ता गुणांस्तस्याःप्रचक्ष्महे ॥३८९॥ रोटिकाबलकृद्रुच्या बृं-

हणीधातुवर्द्धिनी ॥ वातघ्नीकफकृद्गुर्वी दीप्ताग्नीनांप्रपूजिता ॥ ३९० ॥ उदकेनविमिश्रसंमितां घृतमासिच्यकरेणमर्द्दयेत् ॥ ततएवसुपूरिकांविधायकृतनिर्धूमसुशुष्कगोमयेग्नौ ॥ ३९१ ॥ प्रभर्जिता सा कफहृद्बलप्रदाहृद्रोगवातंशमयेद्धिभक्षिता ॥

भा०-ऐसे करके भून पीछे तेलमें अथवा घीमें पकावै; सूके गेहुवोंके चूनको पानीसे करडा मर्दितकरै ॥ ३८६ ॥ उसके गोले बना धूमांसे वर्जित हुई अग्निमें पकावै; ये अंगारकर्कटी धातुको बढाती है वीर्यको करती है हलकी है ॥ ३८७ ॥ दीपन है कफको हरती है बलमें हितहै पीनस श्वासरोग खांसी इन्होंको जीतती है. सूकेगीहूंका चूनकी पोली बना ॥ २८८ ॥ तवापर भून फिर अंगारों पर भून यह रोटी सिद्ध होती है; इसके गुणोंको कहते हैं ॥ ३८९ ॥ रोटी बलको करती है रुचिको करती है वीर्यको बढाती है धातुको बढाती है वातको नाशती है कफको करती है भारी है दीप्त अग्निवालोंको हित है ॥ ३९० ॥ मैदामें पानी मिला घी घाल हाथसे मर्दितकरै पीछे पूरी बना धूमां रहित सूखे गोसोंसे अग्निमें पकावै ॥ ३९१ ॥ भूनि हुई वह कफको हरती है बलको देती है हृद्रोग और वातको खाई हुई शांत करती है ॥

चूर्णंयच्छुष्कमाषाणांचमसीसाभिधीयते ॥ ३९२ ॥ चमसीरचितारोटी कथ्यतेबलभद्रिका ॥ रूक्षोष्णा वातलाबल्यादीप्ताग्नीनांप्रपूजिता ॥ ३९३ ॥ माषाणांदालिकातोये स्थापितात्यक्तकंचुका ॥ आतपेशोषितायंत्रे पिष्टासाधूमसीस्मृता ॥३९४॥धूमसी रचिता सैवप्रोक्तागर्गरिकाबुधैः ॥ गर्गरीकफपिताग्निर्किंचिद्वातकरीस्मृता ॥ ३९५ ॥

भा०-सूकेउडदोंके चूनसे जो बनती है वह चमसी कहाती है ॥ ३९२ ॥ रोटी रूखी है गर्म है वातको करती है बलमें हित है दीप्त अग्निवालोंको हित है ॥ ३९३ ॥ यंत्रविषे घाममे शोषित करी वह धूमसी कहाती है ॥ ३९४ ॥ बनाई हुई धूमसी गर्गरी कहाती है; गर्गरी कफ पित्त अग्नि कटुक वात इन्होंको करने वाली कही है ॥ ३९५ ॥

मार्जितानांतडुलानां सूक्ष्मं पिष्टंच कारयेत् ॥ जले-नगोलकं कृत्वा स्थाप्यः सोह्नि द्वितीयके ॥३९६॥ दिवसेतुद्रवीकृत्वाघृतेऽभ्यज्य पलाशके ॥ पत्रेक्षिप्त्वा तत्सदृशं घनं तानि सुभांडके ॥ ३९७ ॥ वस्त्रेणा-च्छादितमुखे सजलेचैलकोपरि ॥ निधायचापरंपात्रं न्यस्यतस्मिन् पचेत्सुधीः ॥ ३९८ ॥ उद्धृत्य पर्णं निर्हृत्य पश्चादुष्णेऽति शोषयेत् ॥ घृते पुनस्तुप-क्त्वासा वृष्यालघ्वीतुवातनुत् ॥ ३९९ ॥

इति पाकप्रदीपकः समाप्तः ।

भा०-शोधित किये चावलोंकी मिहीन पीठी बना उसको पानीसे गोलाकर वह स्थापित करना उचित है ॥ ३९६ ॥ दूसरे दिन पतला बना घी चुपड ढाकका पत्तोंपर उसीके समान लीप उन्होंको सुंदर पा-त्रमें घालै ॥ ३९७ ॥ वस्त्रसे उसका मुख ढक पानी सहित उस पात्रमें वस्त्रके ऊपर अन्यपात्र धर उसमें बुद्धिमान् पकावै ॥ ३९८ ॥ पत्तोंको निकास पीछे घाममें अच्छी तरह सुखावै फिर घीमें पकावै; वह स्त्रीसंग-में हित है हलकी है वातको नाशती है ॥ ३९९ ॥

इति श्रीबेरीनिवासिसदाशिवसहायसूनुरविदत्त-शास्त्रिराजवैद्यविरचितपाकप्रदीपकभाषा-टीका समाप्ता ॥ १ ॥

श्रीगणेशाय नमः ।

पुष्टिप्रकाशः ।

निधायहृदिविश्वेशं कृत्वाचगुरुवंदनम् ॥ पुष्टिप्रका-
शकोनाम रविदत्तेनरच्यते ॥१ ॥ चिंतयाजरयाशु-
क्रंव्याधिभिः कर्मकर्षणात् ॥ क्षयंगच्छत्यनशनात्
स्त्रीणांचातिनिषेवणात् ॥ २ ॥ येननारीषुसामर्थ्यं
वाजिवल्लभतेनरः ॥ येनवाप्यधिकंवीर्य्यं वाजीकर-
णमेवतत् ॥३॥ ग्लानिःकम्पोवसादस्तदनुचकृशता
क्षीणताचेंद्रियाणां शोषोच्छ्वासोपदंशज्वरगुदजगदाः
क्षीणतासर्वधातौ ॥ जायंतेदुर्निवाराः पवनपरिभवाः
क्लीबतालिङ्गभङ्गो वामावश्यातियोगाद्व्रजतइहसदा
वाजिकर्मच्युतस्य ॥ ४ ॥ यत्किंचिन्मधुरंस्निग्धं
जीवनंबृंहणंगुरु ॥ हर्षणंमनसश्चैवसर्वंतद्वृष्यमुच्य-
ते ॥५॥ घृतभ्रष्टमाषविदलंदुग्धेसिद्धंचशर्करामिश्र-
म् ॥ भुक्त्वासदैवकुरुते तरुणीशतमैथुनंपुरुषः॥६॥

भा०–हृदयमें परमेश्वरका ध्यानकर और गुरुजीको वंदनाकर रवि-
दत्तशास्त्री पुष्टिप्रकाश नामवाला ग्रंथको रचताहै ॥ १ ॥ चिंता बुढापा
रोग कार्यकर माड़ा होना लंघन और स्त्रियोंको अत्यंत सेवना इन्होंसे
वीर्य नष्ट होता है ॥ २ ॥ जिस करके स्त्रियोंमें घोडाकी तरह सामर्थ्यको
प्राप्त हो और जिस करके अधिक वीर्य्य हो वह वाजीकरण होता है
॥ ३ ॥ ग्लानि कंप शिथिलपना कृशपना इंद्रियोंकी क्षीणता शोष ऊर्ध्व-
श्वास उपदंश ज्वररोग गुदरोग सब धातुवोंमें क्षीणपना कष्टसाध्य वात-

रोग नपुंसकपना इंद्रियनका भंग ये सब स्त्रीके अत्यंत वश होके सेवनें-वाला पुरुष वाजिकर्म्मसे रहित हुआके होते हैं ॥ ४ ॥ मधुर आनंद करने वाले ये सब वृष्य कहाते हैं ॥ ५ ॥ घीमें उडदकी दालको भून दूधमें सिद्धकर खांड मिला भोजन करनेसे पुरुष १०० स्त्रियोंका पति हो सक्ता है ॥ ६ ॥

शतावरीशृतंक्षीरं प्रपिबेत्सितयायुतम् ॥ रममाण-स्यविरतिं मृदुतांयातिनेंद्रियम् ॥ ७ ॥ वृद्धशाल्म-लिमूलस्य रसं शर्करयासमम्॥प्रयोगादस्यसप्ताहा-ज्जायतेरेतसोऽम्बुधिः ॥ ८ ॥ लघुशाल्मलिमूलेन तालमूलंसुचूर्णितम् ॥ सर्पिषापयसापीत्वा रतौच-टकवद्भवेत् ॥ ९ ॥ विदारीकन्दचूर्णंच घृतेन पयसापिबेत्॥ उदुंबररसेनैव वृद्धोपितरुणायते १०॥ सप्तधामलकीचूर्णमामलकैस्तुभावितम् ॥ घृतेन मधुनालीढ्वा पिबेत्क्षीरपलंनरः ॥ ११ ॥ अत्यंतमु-ष्णकटुतिक्तकषायमम्लं क्षारंचशाकमथवालवणा-धिकंच ॥ कामीसदैवरतिमान्वनिताभिलाषी नोभ-क्षयेदितिसमस्तजनप्रसिद्धिः ॥ १२ ॥

भा०—शतावरीसे पकाया दूधमें मिश्री मिला पीवै भोग करनेंवालों-की इंद्रिय ग्लानिको और कोमलपनाको नहीं प्राप्त होती ॥ ७ ॥ बडा शंभलकी छालके रसमें समान भाग खांड मिला सात दिन पीनेसे वीर्य-का समुद्र बनता है ॥ ८ ॥ छोटा संभलकी जड मुशली इन्होंके चूर्णको घी और दूधसे पीकै वीर्यसे चिडाकी तरह हो जाता है ॥ ९ ॥ विदारी-कंदके चूर्णको घी दूध और गूलरके रससे पीवै; बूढा भी जुवानकी तरह हो जाता है ॥ १० ॥ आंवलाके चूर्णको सातवार आंवलाके रससे भावना

दे घी शहदसे मिला खाके पुरुष ४ तोलेभर दूधको पीवै ॥ ११ ॥ अ-त्यंत गर्म चर्चरा कडुवा कसैला खट्टा खारा नमककी अधिकतावाला शाक इन्होंको स्त्रीसे भोग करनेकी इच्छावाला पुरुष नहीं खावै यह सबजनोंमें प्रसिद्ध है ॥ १२ ॥

पिप्पलीलवणोपेतौ बस्ताण्डौक्षीरसर्पिषा ॥ साधितौभक्षयेद्यस्तु सगच्छेत्प्रमदाशतम् ॥ १३ ॥ बस्ताण्डसिद्धेपयसिभावितानसकृत्तिलान् ॥ यःखादेत्सनरोगच्छेत् स्त्रीणांशतमपूर्ववत् ॥१४॥ चूर्णंविदार्याःसुकृतं स्वरसेनैवभावितम् ॥ सर्पिःक्षौद्रयुतं कृत्वा शतंगच्छेन्नरोङ्गनाः ॥ १५ ॥ एवमामलकंचूर्णं स्वरसेनैवभावितम् ॥ शर्करामधुसर्पिर्भिर्युक्तं लीढ्वापयःपिबेत् ॥ एतेनाशीतिवर्षोपि युवेवपरिक्रष्यति ॥ १६ ॥ विदारीकन्दकल्कन्तु घृतेनपयसा नरः ॥ उदुंबरसमंखादेद्वृद्धोपि तरुणायते ॥१७॥ स्वयंगुप्तेक्षुरकयोर्बीजचूर्णंसशर्करम् ॥ धारोष्णेन नरःपीत्वा पयसा न क्षयंव्रजेत् ॥ १८ ॥ उच्चटाचूर्णमप्येवं क्षीरेणोत्तममुच्यते ॥

भा०—बकराके दोनों पोतोंपै पीपल नमक लगा दूध घीसे साधकर जो पुरुष खाता है वह १०० स्त्रियोंका पति हो सक्ता है ॥ १३ ॥ बकराके पोतोंसे सिद्ध किया दूधमें वारंवार भिगोये तिलोंको जो खाता है वह १०० स्त्रियोंका पति हो सक्ता है ॥ १४ ॥ विदारीकंदके चूर्णको विदारी कंदका रससे भावितकर घी शहद मिला जो पुरुषखावै वह १०० स्त्रियोंका पति हो सक्ता है ॥ १५ ॥ आंवलाके चूर्णको आंवलाके रसमें भिगोय खांड शहद घी मिलाय खाकै दूध पीता है वह अस्सीवर्ष-

की अवस्थावाला भी जुवानकी तरह काम करता है ॥ १६ ॥ विदारीकंदके कल्ककी गूलरका फलके समान घी दूधसे खाता है वह बुढा भी जुवान हो जाता है ॥ १७ ॥ कौंचके बीज तालमखानाके बीज इन्होंमें खांड मिला गौके थनसे निकसा दूधसे पीवै तो वीर्य नष्ट नहीं होता ॥ १८ ॥ भूमिआंवलाके चूर्णको दूधसे पीवै तो वीर्यका क्षय नहीं होता ॥

शतावर्य्युच्चटाचूर्णं पेयमेवंसुखार्थिना ॥ १९ ॥ कर्षं मधुकचूर्णस्य घृतक्षौद्रसमन्वितम् ॥ पयोनुपानंयो लिह्यान्नित्यवेगःसनाभवेत् ॥ २० ॥ गोक्षुरकःक्षुरकः शतमूली वानरिनागबलातिबलाच ॥ चूर्णमिदंपयसा निशिपेयं यस्यगृहेप्रमदाशतमस्ति ॥ २१ ॥ घृतभ्रष्टोदुग्धमाषपायसोवृष्यउत्तमः॥ आर्द्राणिमत्स्यमांसानि शफर्य्योवासुभर्जिताः॥ तप्तेसर्पिषियःखादेत्स गच्छेत्स्त्रीषु न क्षयम् ॥ २२ ॥

भा०–शतावरी और भूमिआंवलाके चूर्णको दूधसे पीवै; सुखदेता है ॥ १९ ॥ मुलहटीका १ तोला भर चूर्णमें घी शहद मिला खाकै दूधका अनुपानकरै वह पुरुष नित्यप्रति स्त्रियोंको प्रिय होसक्ताहै ॥ २० ॥ गोखरू तालमखाना शतावरी कौंचके बीज बडी खरैहटी गंगेरन इन्होंके चूर्णको दूधसे रात्रिमें पीवै वह १०० स्त्रियोंका प्रिय होसक्ता है ॥ २१ ॥ घीमें उडदोंको भून दूधसे खीर बनावै; यह उत्तम वृष्य है. मछलीके गीले मांस अथवा घीमें भुनी हुई मछलियोंको जो खाता है वह स्त्रियोंमें क्षयको नहीं प्राप्त होता ॥ २२ ॥

शतावरीरजःप्रस्थंप्रस्थंगोक्षुरकस्यच॥वाराह्याविंशतिपलं गुडूच्याः पञ्चविंशतिः ॥२३॥ भल्लातकानां

द्वात्रिंशच्चित्रकस्यसदैवतु ॥ तिलानांशोधितानांच प्रस्थंदद्यात्सुचूर्णितम् ॥२४॥ त्र्यूषणस्यपलान्यष्टौ शर्करायाश्चसप्ततिः॥ माक्षिकं शर्कराद्धेन माक्षिका-र्द्धेनवै घृतम् ॥ २५ ॥ शतावरीसमंदेयं विदारी-कंदजंरजः॥ एतदेकीकृतं चूर्णं स्निग्धे भांडे नि-धापयेत् ॥ २६ ॥ पलार्द्धमुपयुंजीत यथेष्टंचास्य भोजनम् ॥ मासैकमुपयोगेन जरांहंति रूजामपि ॥२७॥ वलीपलितखालित्यमेहपांड्वाढ्यपीनसान् ॥ हन्त्यष्टादशकुष्ठानि तथाष्टावुदराणिच ॥ २८॥ भगंदरं मूत्रकृच्छ्रं गृध्रसींचहलीमकम् ॥ क्षयं चैव म-हाव्याधिं पंचकासान् सुदारुणान् ॥ २९ ॥ अशीतिं वातजान्रोगांश्चत्वारिंशच्च पैत्तिकान् ॥ विंशतिं श्लैष्मिकांश्चापि संसृष्टान्सान्निपातिकान् ॥ ३० ॥ सर्वानर्शोगदान्हंतिवृक्षमिंद्राशनिर्यथा ॥ ३१ ॥ सकांचनाभो मृगराजविक्रमस्तुरंगमंचाप्यनुयाति वे-गतः॥स्त्रीणां शतं गच्छति वातिरेकं प्रकृष्टपुष्टश्चय-थाविहङ्गः ॥३२॥ पुत्रान्संजनयेद्धीमान्नरसिंहनि-भांस्तथा॥ नरसिंहमिदं चूर्णं सर्वरोगहरं नृणाम् ॥३३॥

भा०-शतावरीका चूर्ण६४ तो० गोखरू६४ तो० विदारीकंद८० तोले गिलोय१०० तोले॥२३॥ ३२ तोले भिलावे१२८ तोले चीता४० तोले शोधे-हुये तिलोका चूर्ण६४ तोले सूंठ मिरच पीपलका चूर्ण॥२४॥ ३२ तोले खांड २८० तोले-शहद१४० तोले घी७० तो०॥२५॥ विदारीकंदका चूर्ण६४ तो० इन्होंको मिला चिकना पात्रमें घाल धरै ॥ २६॥ दो तोले भरखावै और

मनोवांछित भोजन करै; १ महीना सेवनेसे बुढापा और पीडाको नाशताहै ॥२७॥ वलियोंका पडना बालोंका सुपेद होना खालित्य प्रमेह पांडुरोग पीनस अठारह कुष्ठ आठ उदर रोग ॥ २८ ॥ भगंदर मूत्रकृच्छ्र गृध्रसी हलीमक क्षयरोग पांच प्रकारकी भयंकर खांसी ॥ २९ ॥ आस्सी प्रकारके वातरोग चालीश प्रकारके पित्तरोग बीसप्रकारके कफरोग दो दोषोंसे मिले रोग सन्निपातके रोग ॥ ३० ॥ सब बवाशीर रोग इन्होंको यह नरसिंहचूर्ण नाशता है; जैसे वृक्षको इन्द्रका वज्र ॥ ३१ ॥ वह पुरुष सोना सरीखी कांतिवाला सिंहसरीखा पराक्रमवाला वेगसे घोड़ाको जीतनेवाला होकै १०० स्त्रियोंका प्रिय हो सक्ता है; बहुत पुष्ट रहता है जैसे पक्षी ॥ ३२ ॥ बुद्धिमान् और नरसिंह सरीखे पुत्रोंको उपजाता है. यह नरसिंहचूर्ण मनुष्योंके सब रोगोंको हरता है ॥ ३३ ॥

वाराहीकंदसंज्ञस्तुचर्मकारालुकोमतः । पश्चिमेगृष्टिशब्दाख्योवाराहलोमवानिव ॥ ३४ ॥ गोधूमं तुपलशतंनिष्क्वाथ्यसलिलाढके । पादशेषेचपूतेच द्रव्याणीमानिदापयेत् ॥ ३५ ॥ गोधूमं पुंजातफलं देयद्राक्षाटरूषके । काकोलीक्षीरकाकोली जीवंतीसशतावरी ॥ ३६ ॥ अश्वगंधासखार्जूरा मधुकंत्र्यूषणंसिता ॥ भल्लातकमात्मगुप्ता समभागानिकारयेत् ॥३७॥ घृतप्रस्थं पचेदेवंक्षीरंदत्त्वाचतुर्गुणम् ॥ मृद्वग्निनाचसिद्धे तु द्रव्याण्येतानि निःक्षिपेत् ॥३८॥ त्वगेलापिप्पलीधान्यकर्पूरंनागकेशरम् ॥ ३९ ॥ यथालाभंविनिःक्षिप्य सिताक्षौद्रंपलाष्टकम् ॥ तदिक्षुदंडेनालोड्य विधिवद्विनियोजयेत् ॥४०॥ शाल्योदनेन भुंजीत पिबेन्मांसरसेनवा ॥ केवलस्यापि-

वेदस्य पलमात्रंप्रमाणतः ॥ ४१ ॥ नचास्यलिंग-
शैथिल्यं नचशुक्रक्षयोभवेत् ॥ बल्यंपरंवातहरं शु-
क्रसंजननंपरम् ॥ ४२ ॥ मूत्रकृच्छ्रप्रशमनं वृद्धानां
चापिशस्यते ॥ पलद्वयंतदश्नीयाद्दशरात्रमतंद्रि-
तः ॥ ४३ ॥ स्त्रीणांशतंचभजते पीत्वाचानुपिबेत्प-
यः ॥ अश्विभ्यां निर्मितंचैवगोधूमाद्यंरसायनम् ४४ ॥
जलद्रोणेत्रगोधूमक्काथस्तच्छेषआढकम् ॥ पुंजात-
कस्यस्थानेतु तद्गुणंतालमस्तकम् ॥ ४५ ॥ कल्क-
द्रव्यसमंपानं त्वगादेःसाहचर्य्यतः ॥ ४६ ॥

भा०-चर्मकारालुको वाराहीकंद कहते हैं; पश्चिमदेशमें शूरकी तरह रोमोंवाला गृष्टि नामसे प्रसिद्ध है ॥ ३४ ॥ गीहूं ४०० तोलेभर ले २५६ तोले पानीमें क्काथ बनावे; जब चतुर्थांश शेष रहै तब छान ये औषध मिलावे ॥ ३५ ॥ गीहूंका चून पुंजातफल दाख फालसा काकोली क्षीरकाकोली जीवंती शतावरी ॥ ३६ ॥ आसगंध खजूरका फल मुलहटी सूंठ मिरच पीपल मिश्री भिलावा कौंचके बीज ये सब समान भाग ले ॥ ३७ ॥ ६४ तोले घी दूध २५६ तोले मिला घीको मंद अग्निसे सिद्ध करै ये ओषध मिलावै ॥ ३८ ॥ दालचीनी इलायची पीपल धनियां कपूर नागकेशर ॥ ३९ ॥ जितनें मिलैं उतने ओषध ले मिश्री और शहद बतीस बतीस तोलेभर मिला ईखका गंडासे आलोडित कर विधिसे प्रयुक्त करै ॥ ४० ॥ शालिचावल अथवा मांसका रसको भोजन करै; यह घी ४ तोलेभर पीना ॥ ४१ ॥ इंद्रिय शिथिल नहीं होती वीर्यका क्षय नहीं होता बलमें हित है वातको हरता है वीर्यको बहुत उपजाता है ॥ ४२ ॥ मूत्रकृच्छ्रको शांत करता है बूढोंको श्रेष्ठ है । ८ तोलेभरको सावधान हो दशरात्रि पर्य्यंत पीवै ॥ ४३ ॥ और दूधका अनुपान करै; १०० स्त्रियोंका प्रिय हो सक्ता है; यह गोधूमाद्यघृत

अश्विनीकुमारोंनें कहा है रोगको और बुढापाको हरता है ॥ ४४ ॥ गेहूंका क्वाथ १०२४ पानीमें कर २५६ तोले शेष रखना; पुंजातफलकी जगह ताडका मस्तक देना इसमें वेही गुण हैं ॥ ४५ ॥ साहचर्य्यसे कल्क द्रव्यके समान दालचीनी आदि लेना ॥ ४६ ॥

अश्वगंधापलशतं शुभदेशसमुद्भवम् ॥ पुण्येऽहनि समाहृत्य साधयेत् श्लक्ष्णकुट्टितम्॥४७॥द्रोणेम्भसिपचेत्तावद्यावत्पादावशेषितम् ॥ सर्पिःप्रस्थंपचेत्तेन गव्यक्षीरेचतुर्गुणम् ॥ ४८ ॥ कषायंछागमांसस्य दद्याच्छतद्वयस्यच ॥ कल्कानिश्लक्ष्णपिष्टानि तदामुनिःप्रदापयेत् ॥ ४९ ॥ काकोलीयुगमृद्धीद्वे मंदेद्वेचाथजीरकम् ॥ स्वयंगुप्तामृषभकमेलांमधुकमेवच ॥ ५० ॥ मृद्वीकांसूर्य्यपर्ण्यौंच जीवंतींचपलांबलाम् ॥ नारायणींविदारींच दत्त्वासम्यग्विपाचयेत् ॥ ५१ ॥ सितामाक्षिकयोःशीते गृह्णीयात् कुड़वौपृथक् ॥ लीढ्वापाणितलंखादेत् परिहारविवर्जितम् ॥ ५२ ॥ क्षीणेंद्रियाःक्षीणशुक्रा वृद्धाबालास्तथाबलाः ॥ हीनमांसाश्चयेकेचित्प्राश्येदंमात्रयाघृतम् ॥ ५३ ॥ रुजःस्वास्थ्यंचतेजश्चप्रसादमिंद्रियस्यच ॥ लभतेसूर्यसंकाशोभ्राजतेविगतज्वरः ॥ ५४ ॥ वृद्धोवृषायतेस्त्रीषुनित्यंषोडशवर्षवत् ॥ नारीणांचशतंगच्छेन्नचशुक्रक्षयोभवेत् ॥ ५५ ॥ वंध्याचलभतेपुत्रंबुद्धिमेधासमन्वितम् ॥ मासमात्रप्रयोगेणवलीपलितनाशनम् ॥ ५६ ॥ नखालि-

त्यंनतिमिरंवातव्याधिमहागदान् ॥ पंचकासान्क्षयं श्वासंहिक्कांचविषमज्वरम् ॥ ५७ ॥ हन्तिसर्वान्गदा-न्शीघ्रमश्विभ्यांनिर्मितंपुरा ॥ ५८ ॥

भा०–शुभदेशमें उपजा असगंध ४०० तोले सुंदर दिनमें उखाड मिहीन चूर्ण बना ॥४७॥ १०२४ तोले भर पानीमें साधै; जब चतुर्थांश रहै तब उसमें घी ६४ तोले गौका दूध २५६ तोले भर मिला पकावै ॥ ४८ ॥ बकराके मांसका क्वाथ ८०० तोले ले मिहीन पीस कल्क मिलावै ॥ ४९ ॥ काकोली क्षीरकाकोली ऋद्धि वृद्धि मेदा महामेदा जीरा कौंचके बीज ऋषभक इलायची मुलहटी ॥ ५० ॥ मुनक्का सूर्य्यपर्णी जीवंती पीपल खरैंहटी शतावरी विदारीकंद इन्होंका कल्क मिलावै अच्छी तरह पकावै ॥ ५१ ॥ शीतल होनेमें मिश्री १६ तोले शहद १६ तोले भर मिला १ तोला भर खावै मनोवांछित भोजन करै ॥ ५२ ॥ क्षीण इंद्रियोंवाले क्षीण वीर्य वाले बूढे बालक निर्बल हीनमांसवाले मात्रासे इस घृतको खाकै ॥ ५३ ॥ रोगका नाश तेज इंद्रियोंकी प्रसन्नता ये होते हैं. सूर्य्यसरीखी कांतिवाला होकै प्रकाशित रहता है ज्वरसे वर्जित रहता है ॥ ५४ ॥ बूढा भी स्त्रियोंमें सोलह वर्षवालाकी तरह रहता है १०० स्त्रियोंका प्रिय रहता है वीर्यका क्षय नहीं होता ॥ ५५ ॥ वंध्या बुद्धिमान् पुत्रको प्राप्त होती है; ३ महिनें सेवनेसे शरीरकी वलियां वालोंका सुपेदपनाको नाशता है ॥ ५६ ॥ गंजापना तिमिररोग वातव्या-धि महारोग पांचप्रकारकी खांसी क्षय श्वास हुचकी विषमज्वर ॥५७ ॥ इन सब रोंगोको नाशता है यह पहले अश्विनीकुमारोंने रचा है ॥५८॥

कुष्मांडकात्पलशतं सुस्विन्नंनिस्त्वचीकृतम्॥प्रस्थं चघृततैलस्यतस्मिंस्तप्तेनिधापयेत् ॥ ५९ ॥ त्वक्-पत्रधान्यकव्योषजीरकैलाद्वयानलम् ॥ ग्रंथिकंचव्य-मातंगपिप्पलीविश्वभेषजम् ॥ ६० ॥ शृंगाटकंकसे-

रुंच प्रलंबंतालमस्तकम् ॥ चूर्णीकृतंपलाशंचगुड
स्यतुलयापचेत् ॥६१॥ शीतीभूतेपलान्यष्टौमधुनः
संप्रदापयेत् ॥ कफपित्तानिलहरंमंदाग्नीनांचशस्यते
॥ ६२ ॥ कृशानांबृंहणंश्रेष्ठंवाजीकरणमुत्तमम् ॥
प्रमदासुप्रसक्तानांयेचस्युःक्षीणरेतसः॥ ६३ ॥ क्षये-
णतुगृहीतानांपरमेतद्भिषग्जितम् ॥ कासंश्वासंज्वरं
हिक्कांहंतिच्छर्दिमरोचकम् ॥ ६४ ॥ गुडकूष्मांड-
कंख्यातमश्विभ्यांसमुदाहृतम् ॥ सुरूपायौवनस्था
चलक्षणैर्यादिभूषिता ॥ ६५ ॥ वयःस्थाशिक्षिताया
च सास्त्री वृष्यतमामता ॥६६॥

भा०—पेठा ४०० तोले भरले सिजाय छील उस गर्म रूपमें घी ६४ तोले तेल ६४ तोले मिलावै ॥ ५९ ॥ दालचीनी तेजपात धनियां सूंठ मिरच पीपल पीपला मूल चव्य गजपीपल सूंठ ॥६०॥ शिंघाड़ा कसेरू कैथ ताड़का मस्तक ये सब चार चार तोले गुड़४००तोले मिलाके पकावै ॥ ६१ ॥ शीतल हुआमें ३२ तोलेभर शहद मिलावै कफ पित्त वात इ-न्होंको हरता है; मंदाग्निवालोंको श्रेष्ठ है ॥ ६२ ॥ माड़े मनुष्योंको पुष्ट करता है उत्तम वाजीकरण है स्त्रियोंमें आसक्त हुये क्षीणवीर्यवाले ॥ ६३ ॥ क्षयवाले इन्होंको उत्तम औषध है; खांसी श्वास ज्वर हुचकी छर्दि अरोचक इन्होंको नाशता है ॥ ६४ ॥ यह गुड़कूष्मांड अश्विनी-कुमारोंने कहा है ॥ ६५ ॥ सुंदर रूपवाली यौवनमें स्थित हुई लक्षणों-से भूषित हुई उत्तम अवस्थावाली शिक्षित हुई ऐसी स्त्री बहुत पुष्टि करती है ॥ ६६ ॥

स्त्रीष्वक्षयंमृगयतांवृद्धानांचरिरंसताम् ॥ क्षीणाना-
मल्पशुक्राणांस्त्रीषुक्षीणाश्चयेनराः ॥ ६७ ॥ विला-

सिनामर्थवतांरूपयौवनशालिनाम् ॥ बहुपत्नीनां नृणांचयोगावाजीकराहिताः ॥ ६८ ॥

भा०-स्त्रियोंमें नहीं क्षय होनेंको चाहनेवालोंके बूढे होके स्त्रीसे भोग करनेकी इच्छावालोंको क्षीण हुवोंको अल्प वीर्यवालोंको स्त्रियोंमें क्षीण हुवोंके ॥ ६७ ॥ भोगवाले धनवाले रूप और यौवनसे युत हुये बहुतसी स्त्रियोंके पति ऐसे पुरुषोंको वाजीकरणयोग हित है ॥ ६८ ॥

शतावरीश्वदंष्ट्राचबलाचातिबलातथा ॥ मर्कटी-क्षुरबीजंच विदारीकंदजंरजः ॥ ६९ ॥ एतानि समभागानि पलिकानिविचूर्णयेत् ॥ तस्माच्चतुर्गु-णंदेयंत्रैलोक्यविजयारजः ॥ ७० ॥ एतदेकीकृ-तंयावत्तदर्द्धमाहिषंपयः ॥ तावन्मात्रेणदातव्यः श-तावर्य्यारसस्तथा ॥ ७१ ॥ विदार्य्याःस्वरसः प्रस्थं सितापलशतद्वयम् ॥ घोलयित्वासितांचैव पात्रे ताम्रमयेदृढे ॥७२॥ पाचयेत्पाकविद्वैद्योमोदकंपरमं हितम्॥त्र्यूषणंत्रिफलादंती त्रिजातंसैंधवंशठी॥७३॥ धान्याकं वालकं मुस्तं कस्तूरी गोस्तनीतुगा ॥ जातीकोषफलंमांसी पत्रं नागेंद्रग्रंथिकम् ॥ ७४ ॥ शरलं शैलजंकुंभं जातिपुष्पंयमानिच । कट्फलं केशरंमेथी मधुकं सुरदारुच ॥ ७५ ॥ मिसिताली-शपत्रंच खर्जूरंरसगंधकौ ॥ चंदनं तगरंक्षारं प्रत्येकं कर्षसंमितम् ॥७६ ॥ आलोड्य त्रिसुगंधेनकर्पूरेणा-धिवासयेत् ॥ कांचनेराजते पात्रे स्थाप्यमेतद्भिषग्-

वरैः ॥ ७७ ॥ कर्षप्रमाणं कर्तव्यंक्षीरंचानुपिबेत्प लम् ॥ प्रातर्भोजनकालेच भक्षयेच्चविचक्षणः ॥७८॥ प्रमदाशतं चभजते नचशुक्रक्षयोभवेत्॥ नतस्यलिंगशैथिल्यं वृद्धानांच प्रशस्यते ॥ ७९ ॥ मासैकमुपयोगेन जरांहंतिनसंशयः । बल्यं परं वातहरं शुक्र संजननं परम् ॥ ८० ॥ क्षयंचैवमहाव्याधिंपंचकासान्सुदुस्तरान् ॥ वातजान्पैत्तिकांश्चैव कफजान्सान्निपातिकान् ॥८१॥ हन्त्यष्टादशकुष्ठानि वातरक्तादिकानिच ॥ प्रमेहंश्लीपदंशोथं लक्ष्मीकांतिविवर्द्धनम् ॥ ८२ ॥ सर्वानर्शोगदान्हन्ति वृक्षमिंद्राशनिर्यथा ॥ व्याधीन् कोष्ठगतानन्यान् जनार्दनइवासुरान् ॥८३॥ नातः परतरंश्रेष्ठं विद्यतेवाजिकर्मसु॥ स्त्रीणांचैवानपत्यानां दुर्बलानांचदेहिनाम् ॥ ८४ ॥ क्लीबानामल्पशुक्राणां जीर्णानामल्परेतसाम् ॥ ओजस्तेजःस्वरंबुद्धिमायुःप्राणंविवर्द्धयेत् ॥ ८५ ॥

भा०–शतावरी गोखरू खरैंहटी गंगेरन कौंचके बीज तालमखाना विदारीकंदका चूर्ण ॥ ६९ ॥ ये सब समान भाग ले चार २ तोले ले चूर्ण करै उस चूर्णसे चौगुना भांगका चूर्ण ॥ ७० ॥ इन्होंको मिलावै इस्से आधा भैंसका दूध और दूधके समान शतावरीका रस ॥ ७१ ॥ भूमिआंवलाका रस ६४ तोले मिश्री ८०० तोले तांबाके दृढ पात्रमें मिश्रीकी चासनी बना ॥ ७२ ॥ पाकको जाननेंवाला वैद्य मोदक बनावै परंतु सूंठ मिरच पीपल हरडै बहेडा आंवला जमालगोटाकी जड दालचीनी इलायची तेजपात सेंधानमक कचूर ॥ ७३ ॥ धनियां खस नागरमोथा कस्तूरी मुनक्का दाख वंशलोचन जायफल जटामांसी तेजपात

नागकेशर इंद्रजव पीपलामूल ॥ ७४ ॥ सरल शिलाजीत गूगल जावित्री अजमान कायफल केशर मेथी मुलहटी देवदार ॥ ७५ ॥ सौंप तालीशपत्ता खजूरका फल शुद्धपारा गंधक चंदन तगर जवाखार ये सब तोला तोला भर ले ॥ ७६ ॥ आलोडितकर तज तेजपात इलायची कपूर इन्होंसे सुगंधित करै सोनाका तथा चांदीका पात्रमें घाल धरै॥ ७७ ॥ तोला भर खाके चार तोले दूधका अनुपान करै और बुद्धिमान् प्रभातका भोजन समयमें खावे ॥७८॥ सो१०० स्त्रियोंको प्रियहोसक्ता है वीर्यक्षय नहीं होताहै उसकी इंद्रिय शिथिल नहीं होती बूढोंको श्रेष्ठ है ॥ ७९ ॥ एक महीना सेवनेसे बुढापाको नाशता है संशय नहीं बलमें बहुत हित है बातको हरता है वीर्यको बहुत उपजाता है ॥ ८० ॥ क्षयमहारोग भयंकर पांचों खांसी वातके रोग पित्तके रोग सन्निपातके रोग कफके रोग ॥ ८१ ॥ अठारह कुष्ठ वातरक्त आदि प्रमेह श्लीपद शोजा इन्होंको नाशता है लक्ष्मी और कांतिको बढाता है ॥ ८२ ॥ सब ववासीर रोगोंको नाशता है जैसे वृक्षको इन्द्रका वज्र. कोष्ठके रोगोंको नाशता है जैसे दैत्योंको विष्णु ॥ ८३ ॥ वाजीकर्म्मोंमें इस्से परे श्रेष्ठ नहीं है. नहीं सन्तानवाली स्त्रियोको और दुर्बल पुरुषोंको ॥ ८४ ॥ नपुंसकोंको क्षीणहुआ वीर्यवालोंको बूढोंको अल्पवीर्यवालोंके पराक्रम तेज स्वर बुद्धि आयु प्राण इन्होंको बढाता है ॥ ८५ ॥

शक्राशनस्यबीजानां चूर्णान्यष्टपलानिच ॥ हविषः कुडवंचैकं सिताप्रस्थंप्रगृह्यच ॥ ८६ ॥
शतावरीरसः प्रस्थंतथाशक्राशनस्यच ॥ गवामजापयःप्रस्थं ततःप्रस्थद्वयंपचेत् ॥ ८७ ॥ धात्रीद्विजीरकंमुस्तंत्वगेलापत्रकेशरम् ॥ आत्मगुप्ताचातिबला तालांकुरकसेरुकम् ॥ ८८ ॥
शृंगाटकंत्रिकटुकंधान्यमभ्रंचवंगकम् ॥ पथ्याद्राक्षा

चकाकोल्यौ खर्जूरंक्षुरकंतथा ॥८९॥ कटुकामधु कंकुष्टं लवङ्गंसारसैंधवम् ॥ यवानीचाजमोदाच जीवंतीगजपिप्पली ॥ ९० ॥ प्रत्येकंकर्षमेकन्तु चूर्णितानिशुभानिच ॥ कुडवार्द्धंपाकशेषे मधुनः प्रक्षिपेत्ततः ॥९१॥ मृगांडजंसकर्पूरं यथालाभंविनि क्षिपेत्॥रतिवल्लभनामायं सेव्यमानोमहारसः॥९२॥ परमौजस्करोबल्योवातव्याधिविनाशनः॥ रक्तपित्त- हरोवृष्योदृष्टिसंदीपनः परः ॥ ९३ ॥ पित्तश्लेष्मा स्रपित्तघ्नोविषगुल्मज्वरापहः॥ पाययत्येषमंदाग्निरो- गाणांक्षयहेतुकः ॥ ९४ ॥ नभवेल्लिंगशैथिल्यंवृद्धा- नांपुष्टिवर्द्धनम् ॥ यस्यगेहेयदाबह्व्यःपत्न्यःस्युःसु- मनोहराः ॥ ९५ ॥ रसःसेव्यः सदैवायंमोदकोरति वल्लभः॥ ९६ ॥

भा०-इन्द्रजोंका चूर्ण ३२तोले घी ६४तोले मिश्री६४तो०॥८६॥ शतावरी का रस६४तोले गौका दूध६४ तोले बकरीका दूध १२८ तोले इन्होंको पकावै ॥८७॥ आंवला दोनोंजीरे नागरमोथा दालचीनी इलायची तेजपात केशर कौंचके बीज गंगेरन ताडके कोंपल कसेरू ॥ ८८ ॥ सिंगाडा सूंठ मिरच पीपल धनियां अभ्रक बंग हरडै दाख काकोली क्षीरकाकोली खजूरका फल तालमखाना ॥ ८९ ॥ कुटकी मुलहटी कूट लौंग सार सेंधानमक अजमान अजमोद जीवंती गजपीपल ॥ ९० ॥ ये सब एक एक तोले ले सुंदर चूर्ण करै पाकमें ८ तोले शहद मिलावै ॥ ९१॥ क- स्तूरी कपूर ये जितनें मिलैं उतनेंही मिलावै यह रतिवल्लभ महारस से- वना योग्य है ॥९२॥ बहुत पराक्रमको करता है बलमें हित है वातव्या धिको नाशता है रक्तपित्तको हरताहै दृष्टिको बहुत तेजयुक्त करता है॥९३॥

पित्त कफ रक्तपित्त विष गुल्मज्वर इन्होंको नाशता है मंदाग्निको दूर करता है रोगोंको नाशता है ॥ ९४ ॥ इन्द्रिय शिथिल नहीं होती बूडोंको पुष्टि बढ़ाता है; जिसके घर बहुतसी सुंदर स्त्रियांहों ॥९५॥ उसको यह रतिवल्लभरसरूपमोदक सदा सेवना उचित है ॥ ९६ ॥

कृकलासस्यपुच्छाग्रमुद्रिकांश्वेततंतुभिः ॥विष्टचक-
निष्ठयाधार्य्यांनरोवीर्य्यंनमुंचति ॥ ९७ ॥ वनक्री-
डस्यदंष्ट्रांहिदक्षिणांहिसमाहरेत् ॥ कट्यामुपरिसम्ब-
द्धः शुक्रस्तम्भःप्रजायते ॥ ९८ ॥ डुण्डुभोनामयः
सर्पः कृष्णवर्णस्तमाहरेत् ॥ तस्यास्थिधारयेत्क-
ट्यांनरोवीर्यंनमुञ्चति ॥ ९९ ॥ विमुञ्चतिविमुक्तेन
सिद्धयोगउदाहृतः ॥ सूरणंतुलसीमूलंताम्बूलैः सह
भक्षयेत् ॥ १०० ॥ नमुञ्चतिनरोवीर्य्यमेकैकेननसं-
शयः॥कृष्णमार्जारसव्यांघ्रिसंभवास्थिरतोद्यमे १०१
दक्षिणेध्रीयतेयेनतस्यवीर्य्यस्यनच्युतिः ॥

भा०-किरलकांटकी पूंछका अग्रभाग लेकर सुपेदतागोंसे लपेट अंगुठी बनाय कनिष्ठिका अंगुलीमें पहिरे तो मनुष्यका वीर्य रुकै ॥ ९७ ॥ मोरकी जड दहनी लेकर कटिपर बांधे तो वीर्य रुकै ॥९८॥ दुमुहा सर्पकी हड्डी और काले सर्पकी हड्डी लेकर कटिमें बांधे तो वीर्य-बंध हो ॥ ९९ ॥ और जब उसको खोले तब वीर्य छूटै. जमीकंद अथवा तुलसीकी जड नागरपानमें खावे तो मनुष्यका वीर्यबंध हो ॥१००॥ काले बिलावके बायें पैरकी हड्डी लेकर रतिके समय ॥१०१॥ दाहिनें अंगमें धारण करै तो वीर्यबंध हो ॥

चटकांडं तु संगृह्यनवनीतेनपेषयेत् ॥ १०२ ॥
तेनलेपयतः पादौ शुक्रस्तंभः प्रजायते । यावन्न-

स्पृशते भूमिं तावद्वीर्यंनमुञ्चति ॥ १०३ ॥ नीलो-
त्पलसितपंकजकेशरमधुशर्करावलिप्तेन ॥सुरते सु-
चिरं रमते दृढलिंगोनाभिविवरेण ॥ १०४ ॥ शुद्धं
कुसुम्भतैलं भूमिलताचूर्णमिश्रितं कुरुते॥चरणाभ्यं-
गेनैववीजस्तम्भादृढं लिङ्गम् ॥ १०५ ॥ सप्ताहंछा-
गभवसलिलसंस्थितकरभवारुणीमूलम् ॥ गाढो-
द्वर्तनविधिना लिङ्गंस्तब्धं रते कुरुते ॥ १०६ ॥
गोरेकोन्नतशृंगेत्वग्भवचूर्णेन धूपितं वस्त्रम् ॥ परि-
धायभजन् ललनां नैवांतो भवति हर्षातः ॥१०७॥

भा०—चिडियाके अंडेको नौनी घृतमें पीस ॥१०२॥ उस्से पैरोंको लेपनें वालेके वीर्यका स्तंभ होता है और जितनी देर पृथ्वीको नहीं छूवै उतनी देर वीर्य बंध रहै ॥ १०३ ॥ नीला कमल सुपेद कमलकी केशर शहद खांड इन्होंका लेप नाभिपै कर रमण करेतो दृढइंद्रियवालाहो बहुत पुष्ट रहता है ॥ १०४ ॥ शुद्ध कंसूभाका तेल गडूं भावेलिके चूर्णका लेप चरणोंमें करेतो वीर्य स्तंभनहो ॥ १०५ ॥ छोटे वरणाकी जड़को सात दिन बकरीके दूधमें भिगोकर पीछे पीसलेपकरै तो मैथु-नमें इंद्रिय दृढ हो ॥ १०६ ॥ गौके सींगकी त्वचा उतारकर वस्त्रमें धूपदे फिर वही वस्त्रको पहिरावै मैथुन करे तो वीर्य बंधहो ॥ १०७ ॥

शाखासुकुपितोदोषः शोथंकृत्वाविसर्पवित् ॥ भिन-
त्तितत्क्षतंतत्र सोष्मामांसंविशोष्यच ॥ १०८ ॥ कु-
र्यात्तंतुनिभंजीवं घृतसितद्युतिं बहिः ॥ शनैःशनैःक्ष-
ताद्यातिच्छेदात्कोपमुपैतिसः ॥ १०९ ॥ तत्पाता

च्छोफशांतिःस्यात्पुनःस्थानांतरेभवेत् ॥ स्नायु-
केतिविख्यातः क्रियोक्तातुविसर्पवत् ॥ ११० ॥ बा-
ह्वोर्यदिप्रमादेन जंघयोस्तुव्यतेक्वचित् ॥ संकोचःखं-
जताचैव च्छिन्नतंतुः करोत्यसौ ॥ १११ ॥ वातेन
श्यावरूक्षः सरुगथदहनान्नीलपीतः सदाहोयःश्वेतः
श्लेष्मणास्यात्पृथुगरिमयुतोदोषयुग्माद्द्विलिंगः ॥ र-
क्ताच्चारक्तकांतिःसमधिकदहनः सर्वजःसर्वलिंगो रो-
गोसावष्टधेत्थंमुनिभिरभियुतः स्नायुकस्तंतुकीटः ॥
॥११२॥ स्नेहस्वेदप्रलेपादि कर्मकुर्याद्यथाबलम् ॥
अहिंस्रामूलगोमूत्रकल्काल्लेपस्तुवातजे ॥ ११३ ॥

भा०-शाखा अर्थात् हाथ पैर आदिमें कुपित हुआ दोष शोजा उप-जा उस क्षतको विसर्पकी तरह ऊष्मा सहित मांसको शोषितकर भेदन करता है ॥१०८॥ तांत सरीखा गोल सुपेद कांतिवाला ऐसा जीवको उ-पजाता है क्षतसे हौलें हौलें बाहिर निकसता है छेदसे कोपको प्राप्त होता है॥१०९॥उसके गिरनेसे शोजाकी शांति होती है फिर अन्य जगह होता है; वह स्नायुक अर्थात् नहरुवारोग कहा है विसर्पकी तरह इसकी क्रिया कही है ॥११०॥ प्रमादसे बाहुओंमें और जांघोंमें पीडा करता है छिन्न हुईतांत संकोच और लंगड़ापनाको करती है॥१११॥वातसे धूम्रवर्ण रूखा पीडा सहित ऐसा होता है; पीत्तसे नीला पीला दाह सहित होता है; कफसे सुपेद मोटा भारी ऐसा होता है; दो दोषोंसे दो दोषोंके लक्षणों-वाला ऐसा होता है; रक्तसे सब तर्फ लाल कांतिवाला अत्यंत दाह वाला ऐसा होता है; सन्निपातसे सब दोषोंके लक्षणों वाला होता है; ऐसे यह स्नायुक तंतुकीट मुनियोंने आठ प्रकारका कहा है ॥११२॥ जैसा बल हो उसके अनुसार स्नेह स्वेद लेप आदि कर्म्म करै थोहरकी जडको गोमू-त्रसे पीस किया लेप वातके स्नायुकमें हित है ॥ ७ ॥

पंचवल्कलकल्केनहितोलेपोत्रपित्तजे॥ श्लेष्मजेस्नायु-
केलेपः प्रशस्तः कांचनारजैः ॥ ११४ ॥ द्वंद्वाभ्यां
द्वंद्वजेलेपः सर्वैस्तैः सर्वजेहितः॥ रक्तजेस्नायुकेलेपो
वटवृक्षत्वचोहितः ॥ ११५ ॥ कुष्ठरामठशुंठीभिः
कल्कःशिग्रुसमन्वितः ॥ पानालेपनयोगेनजंतुपीडा
विनाशनः ॥ ११६ ॥ शिग्रुमूलफलैःपिष्टैःकांजिके-
नससैंधवैः ॥ लेपनंलशुनंचाग्निस्वर्जिकापिंडिकादि-
के ॥ ११७॥ बब्बूलबीजंगोमूत्रपिष्टंहंतिप्रलेपनात्॥
स्नायुकानिसमस्तानि सशोथानिसरुंजिच ॥११८॥
सुधयासहलोणारंजलेनालोड्यलेपयेत् ॥ अनेनतुप्र-
योगेणत्रिदिनादेवनश्यति ॥ ११९ ॥

भा०—वड पीपल गूलर पिलसन नांदरूखी इन्होंके कल्कका लेप पित्तके स्नायुकमें हित है कचनारके कल्कका लेप कफके स्नायुकमें हित है ॥११४॥ दो दोषोंके स्नायुकमें दो दोषोंमें कहा लेप करै; सन्निपातके स्नायुकमें सब दोषोंमें कहा लेप हित है रक्तके स्नायुकमें वडकी छालका लेप हित है ॥ ११५ ॥ कूठ हींग सूंठ सहोंजन इन्होंका कल्क पीना और लेपसे जंतुपीडाको नाशता है ॥ ११६ ॥ सहोंजनाकी छाल और फल सेंधानमक इन्होंका लेप अथवा ल्हश्शन चीता राई इन्होंका लेप स्नायुक पिण्डिका आदिमें हित है ॥ ११७ ॥ बबूलके बीजोंको गोमूत्रसे पीस लेपकरनेंसे शोजा और शूल सहित सब स्नायुक नष्ट होते हैं ॥ ११८ ॥ चूना और मनयारी नमकको पानीसे पीस लेप करै ऐसे तीन दिन करनेसे स्नायुक रोग नष्ट होता है ॥ ११९ ॥

भोजनादौतुसंभुक्तं शुंठीराज्यभयोत्थितम् ॥ क-
ल्कंतुसहतेनित्यं नानादेशोद्भवंजलम् ॥ १२० ॥ म-

हार्द्रकयवक्षारौ पीत्वाचैवोष्णवारिणा ॥ नानादे-
शोद्भवंचैव वारिदोषमपोहति ॥ १२१ ॥ नागरङ्ग-
फलचोचमातपे शोषितंतदनुचूर्णितमेव। कर्षमात्र-
सुपयुज्यगुडेनवारिकर्मकुरुतेनकदापि ॥ १२२ ॥
योलेढिशयनसमये मधुमिश्रं बीजपूरदलचूर्णम् ॥
सचपीडाकरवातप्रसरनिरोधात्सुखंस्वपिति ॥१२३
दत्त्वैवदुग्धभक्तं विप्रायोत्पाट्यसितबलामूलम् ॥
पुष्येकन्यापिष्टंदत्तमनिच्छाहरंभक्ष्ये ॥ १२४ ॥
भूमिपञ्चनवैकाब्दे १९५१ मासिचैत्रेशुभेसिते ॥
शंभुतिथ्यांशनौवारे बदर्य्यांपूर्णतां गतम् ॥ १२५ ॥

इति पुष्टिप्रकाशः समाप्तः ॥

भा०–भोजनकी आदिमें सूंठ राई हरडै इन्होंके कल्कको नित्य खावै वह नाना प्रकारके देशोंका पानीको मनुष्य सहता है ॥ १२० ॥ अदरक जवाखार इन्होंको गर्म पानीसे खावै बहुतसे देशोंका पानीसे उपजा दोषको नाशता है ॥ १२१ ॥ नारंगीका फल दालचीनी इन्होंको घाममें सुकाय चूर्ण कर एक तोलाभर गुडसे मिला खावै तो जलका दोष नहीं लगता ॥ १२२ ॥ सोवनेके समय जो बिजोराके पत्तोंका चूर्णमें शहद मिला चाटै वह पीडाकारक वातके निरोधसे सुखपूर्वक सोवता है ॥ १२३ ॥ सुपेद खरैहटीकी जडको पुष्य नक्षत्रमें उखाड कन्याके हाथसे पिसा देवै भोजनमें बहुत इच्छा उपजती है परंतु दूध चावल ब्राह्मणको दानकर देवै ॥१२४॥ इति श्रीवेरीग्रामनिवासिशिवसहायपुत्ररविदत्तशास्त्रिराजवैद्य विरचित पुष्टिप्रकाश भाषाटीका समाप्ता ॥

जाहिरात।

शार्ङ्गधर भाषाटीकासह।

यह टीका आढमल्ली और गूढ़ार्थप्रकाशिका जो इसकी संस्कृतटीका हैं उनके अनुसार भाषा-टीका करीगई है; यद्यपि इस ग्रंथकी टीका कई भिषग्वरोंने की हैं परन्तु इस रीतिसे विस्तारपूर्वक किसीने नहीं की है. तिसपरभी मूल्य केवल तीनही मुद्रा ३ रक्खा है. बिलायती कपड़ेकी जिल्द बंधी है और नया छपा है।

भजनामृत।

यह साधु वैष्णवों तथा हरिभक्तोंके लिये अधिक प्रयोजनीय ग्रंथ है; इसमें नित्यकीर्त्तन, प्रभाती, होली, विनय, आरती हिंडोल, गौरी, जयधुनि आदि औरभी सुंदर २ भजनहैं. कीमत १ रु० ॥

शुकसागर अर्थात् श्रीमद्भागवत भाषा।

इसमें शंका समाधान और अनेकानेक दृष्टांत इतिहास तथा उत्त-मोत्तम दोहा चौपाई भजन कबित्त मिश्रित हैं, सुबोध रुचिर प्राकृत भाषामें बड़े २ अक्षरोंमें छपी है. आजपर्य्यंत ऐसी उत्तम पुस्तक अन्यत्र कहीं नहीं छपी. कीमत डाक महसूल सहित १२ रु. १० आ० है. प्रतीकके लिये श्लोकांकभी डालेगये हैं ॥

जाहिरात।

श्रीमद्वाल्मीकीय रामायण।

संस्कृत मूल और भाषाटीकासहित खुलापत्रा ।

कविकुलतिलक आदिकवि महर्षिवाल्मीकिकृत रामायण समग्र ग्रंथ माहात्म्य और अनुक्रमणिका टिप्पणी शंकासमाधानसहित परमपुष्ट मोटे और चिकने कागजपर सुवाच्य मनोहर अक्षरोंमें छपकर विक्रयार्थ प्रस्तुत है-हिन्दुस्थानमें आजपर्यंत इसका ऐसा भाषानुवाद नहीं हुआथा. इसकी टीका अत्युत्तम बहुत सुगम और ललित मनरंजन शब्दोंमें विद्वद्वरशिरोमणि श्रीयुत पं० ज्वालाप्रसादमिश्रजीने अत्यन्त ही उत्तम की है. पदपदका अर्थ दर्पणवत् झलकायाहै. सकल गुणआगरी नागरीकी पूरी लालित्यता सर्वांगरूपसे दरशायीहै. यह बालसे वृद्धतकको परमोपयोगी है. कथा बांचनेवाले विद्वानोंको इससे बहुत ही लाभ प्राप्त होवेगा. केवल अक्षर मात्रका बोध होनेसेही सज्जनजन इस रामायणका पारायण सहजमें कर सकैंगे और कथा बाँचकर धन यश लक्ष्मीके भागी होंगे. ऐसा सुंदर मनोहर रमणीयग्रंथ होनेपरभी सबके सुगमार्थ समग्र ग्रंथ उनके मकानपर २१ रु० भेजनेपर पहुँचजायगा. ग्रन्थकी अद्भुत छबि और आन्तरिक विद्वत्ता देखकर ग्राहकगण परम-प्रसन्न होजायँगे ॥ ग्रंथसंख्या अं. ९०००० होगी.

मनुस्मृति ।

पं०केशवप्रसाद प्रोफेसर आगरा काले कृत

भाषाटीकासहित ।

इस उत्तम ग्रंथका सान्वय भाषा अत्युत्तम हुआहै, यह पुस्तक प्राणिमात्रको परमोपयोगीहै, राजा महाराजा भी इसीके अनुसार धर्मपूर्वक शासन करतेहैं यह ग्रंथ देखनेहीके योग्यहै, भाषा अत्यन्त सुगम और रसीली है. कीमत २॥ रु० रफका २ रु० ॥

जाहिरात।

सामुद्रिक शास्त्र बड़ा।

यह पुस्तक प्राणियों के शरीरावयव तथा हस्तरेखाओं के फलाफल कथन में परमोपयोगी है; इसके द्वारा आयुज्ञान, संतानादि, धनी, निर्धनी, पंडित, मूर्ख, कामी, चोर, साधु और असाधुका ज्ञान केवल पठनमात्र से सर्वसाधारण मनुष्य जिसको कुछभी समझ होगी कहनेमें समर्थ होसक्ता है. इसकी भाषा परम मनोहर और सरल है; विशेष रोचकता इस में यह है कि प्रत्येक मूलके श्लोकोंका सान्वय सरल हिन्दीभाषा में टीका कियागया है, जिससे भारीसे भारी पंडित और छोटेसे छोटे अल्पज्ञ अपने नेत्रोंसे अवलोकन कर इसका स्वाद पासकते हैं, विलायती कपड़ेकी जिल्द बँधी है. मूल्य केवल १। रु० है॥

पुस्तक मिलनेका ठिकाना–

खेमराज श्रीकृष्णदास.

"श्रीवेंकटेश्वर" छापाखाना–मुंबई.